बा और बापू

मुकुलभाई कलार्थी

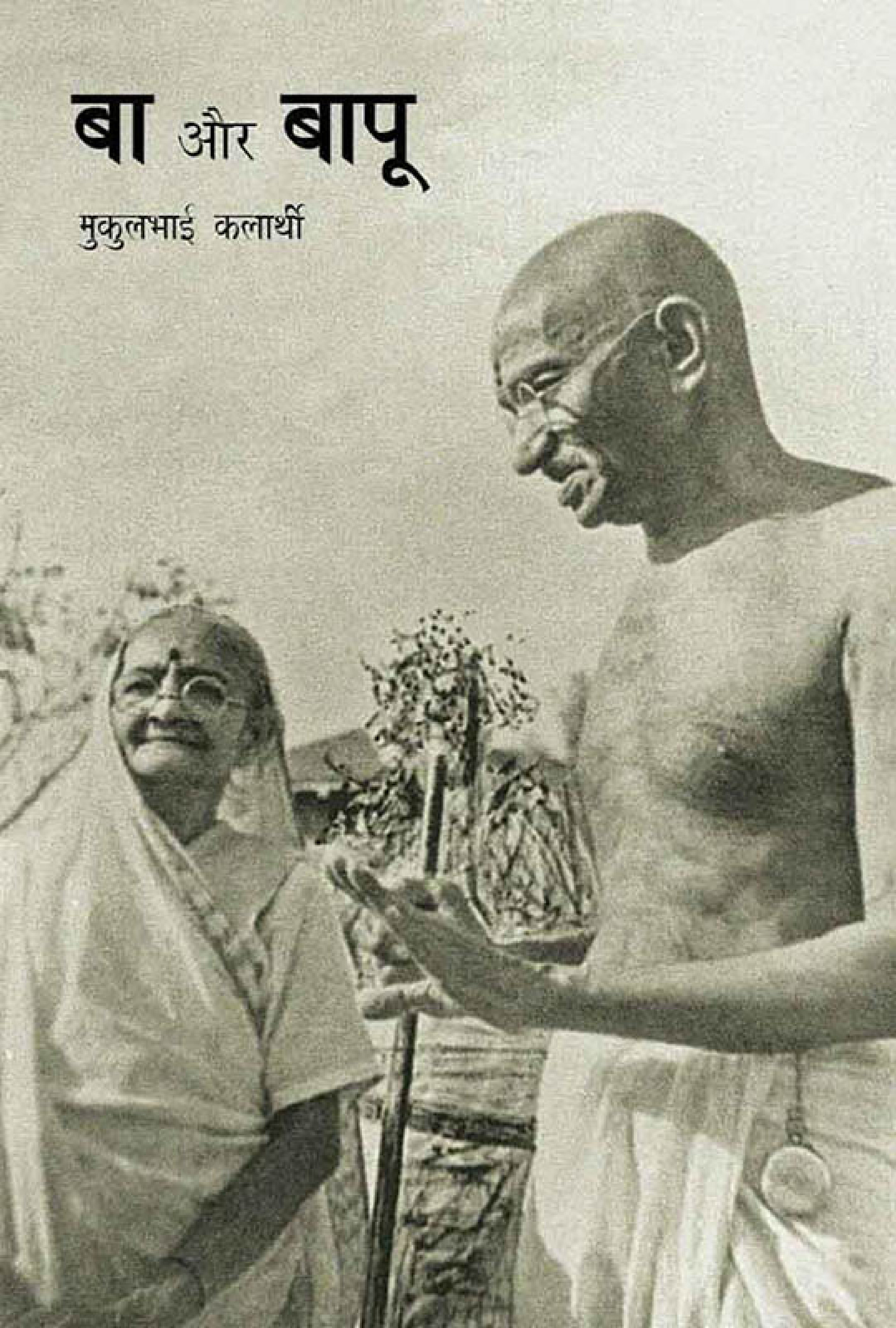

बा और बापू

संपादक

मुकुलभाई कलार्थी

अनुवादक

सोमेश्वर पुरोहित

बा और बापू माता-पिताकी तरह हमारे हृदयमें सदा निवास करें।

पहली आवृत्ति, १९६२

मुद्रक और प्रकाशक

विवेक जितेन्द्रभाई देसाई

नवजीवन मुद्रणालय

अहमदाबाद - ३८० ०१४

फोन: +91-79-28540635 | 27542634

E-mail : jitnavjivan10@gmail.com | Website : www.navajivantrust.org

मेरी पत्नीके प्रति अपनी भावनाका वर्णन यदि मैं कर सकूं , तो ही हिन्दू धर्मके प्रति अपनी भावनाका वर्णन मैं कर सकता हूं। मेरी पत्नी मेरे अंतरको जिस प्रकार हिलाती है, उस प्रकार दुनियाकी दूसरी कोई भी स्त्री उसे नहीं हिला सकती। उसके लिए ममताके एक अटूट बन्धनकी भावना दिन-रात मेरे अंतरमें जाग्रत रहती है।

- बापू

मुझे जैसा पति मिला है वैसा तो दुनियामें किसी भी स्त्रीको नहीं मिला होगा। मेरे पतिके कारण ही मैं सारे जगतमें पूजी जाती हूं।

- **बा**

वन्दना*

श्री मुकुलभाईका आग्रह है कि मैं उनकी इस पुस्तकके लिए प्रस्तावना लिखूं। मैं उन्हें नाराज करना नहीं चाहता, वर्ना पुण्यश्लोक, पावन कीर्तिवाले बा और बापूके मंगलमय दांपत्य-जीवनके इस मनोहर शब्दचित्रके लिए क्या सचमुच किसी प्रस्तावनाकी जरूरत है? मैं मानता हूं कि किसी पुस्तककी प्रस्तावना सामान्यतः पुस्तकको पाठकोंकी दुनियामें प्रसिद्ध करनेके लिए लिखवायी जाती है। परन्तु बा और बापूकी यह पावन कथा किसे अच्छी नहीं लगेगी? वैसे मेरी प्रस्तावनामें पुस्तकको प्रसिद्ध बनानेकी शक्ति है, ऐसा मैं नहीं मानता हुं। परन्तु इस निमित्तसे मैं बा और बापूको अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करनेका पुण्य अवश्य लेना चाहता हूं।

श्री मुकुलभाईने पुस्तकके आरंभमें एक हृदयमें बस जानेवाली बात कही है : "बा और बापू माता-पिताकी तरह हमारे हृदयमें सदा निवास करें।"

मेरे लिए बा और बापू सचमुच माता-पिता ही थे। ११ वर्षकी आयुमें मेरी माता चल बसीं। जीवनके १६ वें वर्षमें एकाएक उठ जानेके कुछ क्षण पूर्व मेरे पिताजी एक परचे पर लिख गये : "मैं अपने बच्चोंको काशीमाईके हाथमें सौंपकर जाता हूं। वे ही उन्हें पढ़ायें।" मेरे इन काकाजीने और काकीने २१ वर्षकी आयु तक पुत्रकी तरह मेरा पालन-पोषण किया और मुझे पढ़ाया-लिखाया। उस वर्षमें मैंने कॉलेज छोड़ा और बापूके सत्याग्रह आश्रम, साबरमतीमें प्रवेश किया । उस समय मेरे काकाजीने कहा: "अब मैं तुझे गांधीजीके हाथोंमें सौंपता हूं।"

इस प्रकार बा और बापू मेरे माता-पिता बने। उनके दाम्पत्य-जीवनकी घटनाओंमें से चुनी हुई इन पवित्र कथाओंको पढ़ते-पढ़ते जीवनको धन्य बनानेवाले अनेक प्रसंग मेरी आंखोंके सामने तैरने लगते हैं। किसी किसी प्रसंगको पढ़कर उसकी यादमें मेरी आंखें भीग जाती हैं और मैं जीवनकी धन्यता अनुमव करने लगता हूं। मेरा विश्वास है कि जिन लोगोंने मेरे समान ही बा और बापूकी दाम्पत्य-कथाको अपनी आंखोंसे देखा है, उन्हें भी ऐसा अनुभव हुए बिना नहीं रहेगा।

लेकिन आज १९६१ में ऐसे लोगोंकी संख्या कितनी होगी ? मैं समझता हूं कि ऐसे लोगोंकी अपेक्षा यह पुस्तक उन लोगोंके लिए ज्यादा लाभदायक होगी, जिन्होंने बा और बापूके जीवनका प्रत्यक्ष दर्शन नहीं किया है। आज दुनियामें और भारतमें भी जीवनके मूल्योंके विषयमें और खास करके विवाह, दांपत्य-जीवन तथा स्त्री-पुरुष-सम्बन्धोंके विषयमें जो विचार फैल रहे हैं वे यदि आगे भी फैलते ही रहे, तो कुछ ही समयमें भारतमें भी ऐसी एक पीढ़ी खड़ी हो जायगी, जो जग-प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीनके द्वारा बापूके सम्बन्धमें कहे गये एक प्रसिद्ध वाक्यका थोड़े भिन्न रूपमें उच्चार करके कहेगी : "ऐसा दाम्पत्य-जीवन बितानेवाले ये दो पति-पत्नी भारतमें बीसवीं सदीमें हो गये हैं, इस पर आसानीसे हमें विश्वास नहीं होता। यह बात आजके विज्ञान पर आधार रखनेवाले बुद्धियुगमें क्या संभव हो सकती है!"

बापूजीका जीवत और कार्य अनुपम था—अलौकिक था, यह तो अब सारी दुनिया जानने लगी है। यह पुस्तक उनके जीवनका असावधानीसे छूट सकनेवाला परन्तु एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पवित्र पहलू पाठकोंके सामने रखती है। बापूकी अलौकिकता उनके अधिक प्रसिद्धिमें आये हुए सामूहिक सत्याग्रह, सर्वोदय तथा अनासक्तिके दर्शनमें जितनी दिखाई देती थी, उतनी ही उनके गृहस्थ-जीवनमें भी दिखाई पड़ती थी। बापू उत्तमताके उपासक थे। ऐसा पुरुष जीवनके एक भी अंगको छोड़ नहीं सकता था। अपने गृहस्थ-जीवनमें भी बापूने इसी उत्तमताकी साधना और उपासना की थी। मैं उसका वर्णन भारतीय इतिहासके प्राचीन पात्रोंकी उपमा देकर ही यहां कर सकता हूं। बा और बापूको देखकर मुझे हमारे प्राचीन पवित्र युगलोंमें से महर्षि वशिष्ठ और अरूंधतीकी याद आती है। हिन्दू विवाह-संस्कारमें आज भी इनके दर्शन, आकाशके विशाल पट पर सदाके लिए जड़े हुए मानकर, वर-वधूको कराये जाते हैं। इस विधिमें जो तथ्य समाया हुआ है, वह हमें बा-बापूकी इस कथाको पढ़कर समझमें आना चाहिये । बापूके स्वराज्य-प्राप्तिके महान कार्यसे जिस प्रकार प्राचीन पैगम्बरोंके युगके इतिहासकी शब्दकथाको वाणी प्राप्त होती है, उसी प्रकार बा और बापूका गृह-जीवन प्राचीन हिन्दू गृहस्थ-जीवनसे सम्बन्धित आदर्शोंके शास्त्र-वचनोंको वाणी प्रदान करता है।

रामचन्द्रजीने अपने पिता दशरथजीका अनेक पत्नियोंवाला गृह-जीवन देखा; और उसके फलस्वरूप उन्होंने हिन्दू संसारके सामने एक-पत्नी-व्रतका विरल आदर्श अपने जीवन द्वारा प्रस्तुत किया। कुछ इसी प्रकारकी बात बापूके जीवनमें भी बताई जा सकती है। उनके पिताजीने अनेक विवाह किये थे । इस परसे बापूने अपने पिताजीकी कामवृत्तिकी टीका की थी । उन्होंने यह भी बताया है कि अपनी कामवृत्तिके कारण उन्हें पिताजीका वियोग सहना पड़ा था। इसके परिणामस्वरूप उन्हें अपने आप पर जो क्रोध चढ़ा, उसके कारण उन्होंने अपने मनमें दृढ़तापूर्वक यह बात बैठा ली थी कि मानव-देहके साथ जुड़ी हुई इस पशुता पर विजय प्राप्त करनी ही चाहिये। काम पर विजय प्राप्त करनेकी इस साधनामें आगे बढ़ने पर उन्हें विवाहित जीवनमें ब्रह्मचर्य-पालनका आदर्श प्राप्त हुआ और उन्होंने उसे संसारके सामने रखा। उन्होंने कहा है कि संतान पैदा करनेके लिए ही विषय-भोग किया जा सकता है । इस इच्छाके अभावमें पति-पत्नीका गृहस्थ-जीवन ब्रह्मचर्यका जीवन ही होना चाहिये। उन्होंने अपने अनुभवसे यह सिद्ध कर दिखाया कि गृहस्थ-जीवनमें ब्रह्मचर्यका पालन दम्पती-प्रेमकी चरम सीमा है।

हिन्दू जीवतकी चार आश्रमोंवाली व्यवस्थाको देखें, तो यह सिद्धान्त उसमें अच्छी तरह गुंथा हुआ मिलेगा। सच्चा गृहस्थ-जीवन अनुकूल समय आने पर सेवा-परायण वानप्रस्थका और बादमें ज्ञान-परायण संन्यासका रूप ग्रहण कर लेता है। यह वस्तु हमें बापूके जीवनमें प्रत्यक्ष देखनेको मिलती है। जीवनकी सच्ची व्यवस्था और नियमनके लिए चार आश्रमोंवाले हिन्दू विचारकी बापूके लेखोंमें जो चर्चा हुई है, वह नहींवत् कही जायगी। परन्तु उस विचारकी आत्मा तो उनके जीवनमें पूरी तरह ओतप्रोत हो गई थी।

ज्ञानके लिए संन्यासको भी उन्होंने – गृहस्थ-जीवनके त्याग या साधु बननेके अर्थमें – स्वीकार नहीं किया; और सेवाके लिए गीताके त्यागमय संन्यासका प्रतिपादन किया। ऐसे संन्यासवाले जीवनको और विवाहित जीवनमें ब्रह्मचर्यके पालनको बापूने सत्याग्रह आश्रमके व्रतोंमें स्थान दिया। कोई ऐसा कह सकते हैं कि यह तो बिरले व्यक्तियोंकी बात हुई। लेकिन यह आदर्शोंका विशिष्ट लक्षण ही माना जायगा। आदर्शको जीवनमें उतार कर

लोगोंके सामने उसे जीवित रूप देना और श्रद्धाकी वस्तु बनाना युग-पुरुषोंका ही कार्य होता है। एक अवसर पर इस बातकी चर्चा करते हुए बापूने कहा था: "मेरी इस सूचनामें हिन्दू धर्म द्वारा स्वीकार किये गये संन्यासका समावेश नहीं होता, परन्तु उस संन्यासके नये संस्करणका समावेश अवश्य होता है। और यह नया संस्करण विवाहित स्त्री-पुरुषोंके लिए तैयार किया गया है।"

बापूने सत्य और अहिंसा-परायण जीवन-योगकी शोध करते करते हमारे युगके लिए संन्यासका यह नया संस्करण तैयार किया और बाने बापूके साथ इस संन्यासको अपने जीवनमें उतारा। इसके पवित्र दर्शन हमें इस पुस्तकके प्रसंगोंमें जहां-तहां होते हैं।

और, यह बाकी विशेषता है। हिन्दू धर्मने पत्नीको अर्धांगिनी या सह-घर्मचारिणी कहा है। आज हमने स्त्रीको लगभग 'सह-**कामार्थ**-चारिणी' अथवा 'सह-**भोग**-चारिणी' जैसी बना डाला है। ऐसे समयमें बा-बापूका यह जीवन-चरित्र समाजके लिए सचमुच प्रेरक सिद्ध होगा। धर्मके लिए सीताका त्याग करनेवाले रामचन्द्रकी अलौकिक कठोरतासे मिलते-जुलते दृश्य बा और बापूके जीवनमें भी देखनेको मिलते हैं। उदाहरणके लिए, अपरिग्रह-व्रतका पालन न करनेके कारण बापूने सबके सामने बाको डांटा-फटकारा है। आजकी हमारी काम-परायण और अर्थ-परायण वृत्तिको इसमें केवल कठोरता ही दिखाई देगी। लेकिन घर्मका पालन करते हुए ही काम और अर्थका सेवन करना हिन्दू दम्पतीका आदर्श माना गया है। बा और बापूने आश्रमके जीवनमें इस आदर्शके पालनकी प्रेरणा देकर नागरिकोंके लिए राष्ट्रप्रेम और मानवतासे परिपूर्ण गृहस्थ-योगका ही विकास किया है। बाने ऐसे ही महान परिवारकी माता बनकर अपना जीवन बिताया था। बा और बापूके जीवनकी यह विकास-यात्रा एक अत्यन्त कठिन साधना थी। यही कारण है कि बा और बापू समस्त राष्ट्रके माता-पिता बन गये। ऐसा करते हुए दोनों एक-दूसरेके सहायक बने और दोनोंने अपनी उन्नति साधी।

एक बात यहां सोचने जैसी है। कया बापूने अपने जीवनमें बासे कुछ पाया ? बापूके आंतरिक विकासका अध्ययन करनेवालेको यह कहना ही पड़ेगा कि बाके अभावमें बापू

कुछ दूसरे ही व्यक्ति रहे होते। बाके द्वारा बापूने स्त्री-शक्तिका दर्शन किया; और इसीलिए बापू भारतके स्त्री-समाजको जाग्रत करनेमें सफल हो सके । आगे बढ़कर अगर मैं कहूं तो बापूकी व्रतमालाके मनकोंके लिए सूत्रका काम करनेवाली नम्रताके पाठ उन्हें बाके साथ जीवन बितानेसे ही सीखनेको मिले । बा नम्रताकी मूर्ति थीं। मातृ-हृदय स्त्री-शक्तिकी कुंजी है। विवाहित जीवनमें अमुक समयके बाद पत्नी भी पतिकी माता जैसी संगिनी बन जाती है, उसका कारण स्त्रीका मातृ-हृदय ही है । 'जाया' शब्दमें तो यह भावना भरी ही है। बापूने इस भावनाको 'विवाहित जीवनमें ब्रह्मचर्य' के रूपमें समाजके सामने प्रस्तुत किया | बा और बापूके जीवनमें इस तत्त्वका सुभग दर्शन करके हिन्दू दाम्पत्य-जीवनके आदर्शकी भव्य गंभीरताकी झांकी होती थी। इसीलिए बापूका हृदय कृत्रिम संतति-नियमनके खिलाफ विद्रोह करता था; क्योंकि उसमें वे स्त्री-शक्तिकी विडम्बना ही देखते थे। 'बापूके पत्र - ५ : कुमारी प्रेमाबहन कंटकके नाम' इस पत्र-संग्रहमें[१] छपे एक पत्रमें ऐसे संतति-नियमनके बारेमें बापूने अपने हृदयकी आगका इस तरह वर्णन किया था:

> "आधुनिक विचार ब्रह्मचर्यको अधर्म मानता है। इसलिए वह कृत्रिम उपायों द्वारा संततिके उत्पादनको रोककर विषय-भोगका **धर्म** पालन करना चाहता है। इसके खिलाफ मेरी आत्मा विद्रोह करती है। विषयासक्ति तो जगतमें रहने ही वाली है। परन्तु जगतकी प्रतिष्ठा ब्रह्मचर्य पर ही निर्भर करती है और आगे भी निर्भर करेगी।"
> (पृ० २६२)

हिन्दू धर्मशास्त्रोंने स्त्रीको सह-धर्मचारिणी कहा है। वह धर्मका अविरोधी काम और अर्थ पुरुषार्थ करनेके लिए गृहस्थाश्रमका सेवन करती है। घर्मसे विमुख काम रोगका घर और धर्मसे विमुख अर्थ दुःख तथा लड़ाई-झगड़ेका घर बनता है। आजका स्त्री-आदर्श क्या है? स्त्री और पुरुष समान हैं, यह सत्य है। लेकिन यह समानता धर्ममें निहित है, कामभोगमें नहीं। इसलिए स्त्री सह-**भोग**-चारिणी होते हुए भी वास्तवमें सह-**धर्म**-चारिणी ही है। १९४७ के कठिन समयमें बापूने एक भाईको इस सम्बन्धमें जो उपदेश दिया था, वह श्री मनुबहन गांधीकी ता० २९-६-'४७ की डायरीमें इस प्रकार लिखा हुआ है:

"स्त्री कौन है, इसका किसीने विचार किया है? वह साक्षात् देवी है। अर्थात् वह त्यागकी मूर्ति है। स्त्रियोंमें ऐसी अद्भुत शक्ति है कि अगर वे काम करनेका निश्चय कर लें और उसे लगनसे करें, तो वे किसी पहाड़को भी हिला देनेकी ताकत रखती हैं। इतनी शक्ति उनमें भरी है। स्त्रियां पुरुषोंकी गुलाम या दासियां नहीं हैं, परन्तु उनकी अर्धांगिनियां, सह-धर्मिनियां हैं। इसलिए पुरुषोंको चाहिये कि वे स्त्रियोंको अपनी मित्र समझें। स्त्रीको अबला कहकर हम उस देवीका अपमान करते है।

". . . हमारे पूर्वजोंने धार्मिक विधिके साथ देवियोंकी सेवा और पूजा करनेकी जो प्रथा हमारे दैनिक जीवनमें दाखिल की है, उसके मूलमें यही रहस्य भरा है कि स्त्रियोंको समाजमें ऊंचा स्थान दिया जाय। स्त्रियोंका आत्मत्याग तो तुम देखो। अपने बालकको पाल-पोसकर बड़ा करनेके लिए कोई स्त्री कितनी मुसीबतें उठाती है! नैतिक साहसमें तो स्त्रियां पुरुषोंसे अनेक प्रकारसे आगे बढ़ जाती हैं। स्त्री अहिंसा, धैर्य, सहन-शीलता और धर्मकी साक्षात् मूर्ति है। लेकिन आज क्या स्थिति है ? आज तो हम ऐसी देवियोंकी हत्या करते हैं, ऐसी देवियोंकी लाज लूटते हैं! यह सब कौनसे धर्मशास्त्रमें लिखा है, यह तो कोई मुझे बताओ ? लेकिन याद रखना कि जिस घरमें, जिस समाजमें और जिस देशमें स्त्रियोंका सम्मान नहीं होता, वह घर, वह समाज और वह देश निश्चित रूपसे नष्ट हो जायगा।"

हिन्दू संसारके द्रष्टाके समान श्री मनु भगवानके एक वचनका स्मरण करानेवाला उपरोक्त उपदेश यहां देकर मैं नीचेके शब्दोंमें अपनी यह वन्दना समाप्त करता हूं:

वागर्थाविव संपृक्तौ बा-बापू ब्रह्मचारिणौ।
राष्ट्रस्य पितरौ वन्दे गार्हस्थ्य-प्रतिपत्तये ।।

१४-१-'६१ **मगनभाई देसाई**

---

* मूल गुजरातीकी प्रस्तावना।

१. नवजीवन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित बापूजीका एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्र-संग्रह ।

गृहस्थ-जीवनका मंगल दर्शन

पूज्य बा और बापूजीका जीवन मंगलकारी है, पावन बनानेवाला है और प्रेरणा देनेवाला है। बापूजीने अपने जीवन और कार्यसे हमारे सामने अपूर्व आदर्श उपस्थित किया है। बापूजीने धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा अन्य अनेक क्षेत्रोंमें अपने प्रेरक विचार प्रस्तुत किये हैं। उनका जीवन ही इस दिशामें हमारे लिए प्रेरणारूप था। बापूके विचार ही उनके आचरणका प्रतिबिम्ब थे ।

परन्तु बाषूको बापू बनानेमें बाका बहुत बड़ा हाथ था। स्वयं बापूने बाके अवसानके बाद कहा था: "अगर बाका साथ न होता, तो मैं इतता ऊंचा उठ ही नहीं सकता था।" इसलिए बा और बापूका गृहस्थ-जीवन आजकी पीढ़ीके लिए तथा भावी पीढ़ियोंके लिए भी गृहस्थ-धर्मका आदर्श जब तक जीवित रहेगा तब तक प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

बापूकी आयु जब साढ़े छह वर्षकी थी तब सात वर्षकी बाके साथ उनकी सगाई हुई थी। और तेरह वर्षकी छोटी आयुमें बापूका विवाह हो गया था। इस प्रकार बा और बापू जीवनमें बांसठ वर्ष तक साथ रहे थे। इसलिए बापूके जीवनको अच्छी तरह देखने और समझनेवाली केवल बा ही थीं। बापूके जीवनके कमजोरसे कमजोर पहलूकी साक्षी भी बा ही थीं । बापू जब शुरूके बरसोंमें विषय-भोगमें आसक्त रहते थे, तब भी बा बापूके अति-आचारको सहन कर लेती थीं। और बापूने जब ब्रह्मचर्य-व्रत पालनेका निर्णय किया, तब बाने उसे भी स्वेच्छासे स्वीकार कर लिया था। बाका जो पवित्रसे पवित्र गुण था, उसका वर्णन बापूके शब्दोंमें ही देखें : "हमारे बीचके सम्बन्धमें पत्नीकी ओरसे मुझ पर किसी दिन आक्रमण हुआ ही नहीं।" इस तरह बा निर्मल सह-धर्मचारिणीके नाते बापूके जीवनके निर्माणमें सदा सहायक ही बनी रहीं। बा कभी बापूके आत्म-विकासमें बाधक नहीं बनीं । इसीलिए बापूने अपनी 'आत्मकथा' में बाके विषयमें लिखा है: "इच्छा या अनिच्छासे, ज्ञान या अज्ञानसे, मेरे पीछे चलनेमें ही उसने (बाने) जीवनकी सार्थकता मानी है। पवित्र जीवन बितानेके मेरे प्रयत्नमें उसने मुझे कभी नहीं रोका।"

असंख्य स्त्री-पुरुष बापूके सम्पर्कमें आये थे। लेकिन उनके साथ बापूका सम्बन्ध पिता, गुरु, मार्गदर्शक या नेता आदिके रूपमें ही था; जब कि बाके साथ बापूका सम्बन्ध पतिके रूपमें था। इस कारण बापूके साथ बाका अत्यन्त निकटका सम्बन्ध था। इस दृष्टिसे देखें तो बा और बापूके जीवनके ये प्रसंग बापूको समझनेमें हमारी सहायता करते हैं।

इस दृष्टिको सामने रखकर ही मैंने प्रस्तुत पुस्तकमें बा और बापूके जीवनके १२० प्रसंग एकत्र किये हैं। इसके लिए मैंने 'सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा', 'हमारी बा', 'दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका इतिहास', "बा और बापूकी शीतल छायामें'[१] आदि पुस्तकोंका तथा अनेक लेखोंका उपयोग किया है। इसके लिए मैं नवजीवन ट्रस्टका तथा सब लेखकोंका हृदयसे आमार मानता हूं। पूज्य मगनभाई देसाईने मेरी प्रार्थना स्वीकार करके इस पुस्तकके गुणको बढ़ानेवाली जो मननीय प्रस्तावना लिख दी है, उसके लिए मैं उनका भी अत्यन्त आभारी हूं।

'बा और बापू' पुस्तकसे यदि पाठकोंको इन दोनों विभूतियोंके विषयमें अधिक पढ़ने और मनन करनेकी प्रेरणा मिली, तो मैं अपने इस नम्र प्रयत्नको सफल हुआ समझूंगा।

मुकुलभाई कलार्थी

---

१. ये सब पुस्तकें नवजीवन ट्रस्टने प्रकाशित की हैं।

अनुक्रमणिका

	वन्दना	मगनभाई देसाई
	गृहस्थ-जीवनका मंगल दर्शन	मुकुलभाई कलार्थी
१.	बाके सम्बन्धमें बापूजी	
२.	बाका आत्म-संतोष	
३.	पतिके धर्ममें समा जानेवाली बा	
४.	‘जरा तो शरमाइये !’	
५.	सेवा और भेंट	
६.	बाकी सहन-शक्ति	
७.	बा और बापूकी दृढ़ता	
८.	बापूका विवेक और बाका निश्चय	
९.	‘तू तो बहुत बूढ़ी हो गई !’	
१०.	बापूकी सेवा फली	
११.	घरमें भी बापूका सत्याग्रह !	
१२.	बापूको बाका डर !	
१३.	बाकी सादगी	
१४.	गरीबीका व्रत	
१५.	बाका महान त्याग	
१६.	गरीबोंकी बा	
१७.	‘मैं होऊं तो फरक पड़े न ?’	
१८.	‘यह फिर क्या लगाया ?’	
१९.	संन्यासी बने हुए बा-बापू	
२०.	बापूकी मददमें	

२१. संकटकी साथिन बा

२२. बुद्ध जैसा तो नहीं हुआ ?

२३. बाके वात्सल्यकी कड़ी कसौटी

२४. आश्रमका अनोखा आकर्षण

२५. आश्रम-जीवनकी दीक्षा

२६. आश्रमकी बहनोंकी ढाल

२७. घीका दीया !

२८. 'देखा, बापूजी कैसे हैं ?'

२८. 'आप मुझसे डरते हैं ?'

३०. 'हमारे लग्नको कितने वर्ष हुए होंगे ?'

३१. बाकी प्रसादी

३२. 'यह क्या ढोंग शुरू किया है?'

३३. बा भारी मनसे बिदा हुईं

३४. बाका विशाल हृदय

३५. बा पर बापूका प्रेम

३६. 'बाकी बहादुरीकी कोई हद नहीं'

३७. 'इतने घबरा क्यों गये ?'

३८. 'बा तो ऐसी ही है'

३९. 'तेरे लिए भी मैं महात्मा हूं?'

४०. 'बाकी आज्ञा माननी ही पड़ेगी!'

४१. 'हम दोनोंको भी लड़ा दिया!'

४२. कड़वा नीम और मीठी मिश्री

४३. बाकी सजगता

४४. बाने स्वेच्छासे खादी अपनाई

४५. बाका खादीप्रेम

४६. 'मेरे बेटे तेरे भी बेटे हुए न?'

४७. हरिजनोंकी बा

४८. ब्राह्मणोंके लिए बाकी भावना

४९. 'दादीमांके नामकी माला जप'

५०. खेलकी शौकीन बा

५१. 'हम सब साथ ही जायंगी'

५२. वात्सल्यमयी बा

५३. स्वयंसेविका बा

५४. सेवानिष्ठ बा

५५. कर्मयोगी बा

५६. आचरण द्वारा शिक्षा

५७. बाकी सूक्ष्म दृष्टि

५८. सबकी बा

५९. बाकी सावधानी

६०. बाकी सहृदयता

६१. सेवाग्राम सयाने आदमी

६२. बाका गुणगान

६३. स्वाभिमानिनी बा

६४. 'उन्हें रोज उत्पात ही सूझता है!'

६५. बापू इसीके लायक हैं!

६६. अंग्रेजीके ज्ञानका उपयोग

६७. साठकी आयुमें अंग्रेजीकी पढ़ाई!

६८. बालकों जैसी सरलता

६९. 'तब तो मैं चलूंगी'

७०. बालक जैसी उत्सुकता

७१. बापूजीकी मां!

७२. बापूकी दृष्टिमें बा

७३. बाका हृदयद्रावक विलाप

७४. मां-बेटेका करुण मिलाप

७५. 'गरीब होनेसे मांको नहीं मिल सकता ?'

७६. बापूके कदमों पर

७७. बापूकी इच्छा ही बाकी इच्छा

७८. कठोर नियम-पालन

७९. 'मैंने मांग नहीं की'

८०. बापूका हठीला स्वभाव

८१. बाके जीवन-साथी

८२. 'नतीजा देखा न?'

८३. 'बाकी तो बात ही अलग थी!'

८४. 'बापूजी खा लें तब जाऊंगी'

८५. अंतिम घड़ीमें भी बापूकी चिन्ता

८६. 'बा यहां बैठी ही रहती है'

८७. बाकी अनोखी बहादुरी

८८. एक पवित्र दर्शन

८९. बापूका एक पवित्र स्मरण

९०. 'तो मैं नहीं खाऊंगी!'

९१. बाके महादेव

९२. बुढ़ापेमें बा विद्यार्थिनी बनीं !

९३. बाका मन

९४. दुनियाका रंग!

९५. बापूमें बाकी श्रद्धा

९६. बापूकी पत्नीनिष्ठा

९७. 'मैं तुझे मिट्टीकी पुतली नहीं मानता'

९८. 'मुझे आपकी गोदमें ही मरना है'

९९. बाकी अंतिम इच्छा

१००. भविष्यकी आगाही

१०१. मीठा झगड़ा

१०२. बाका व्रत-पालन

१०३. 'बाको मैं अलग नहीं रख सकता'

१०४. बाकी एक पवित्र इच्छा

१०५. बापूका उपवास और बाकी चिन्ता

१०६. सावित्री जैसी बा

१०७. बापूकी पत्नीसेवा

१०८. बा किसकी गोदमें देह छोड़ेगी ?

१०९. रामनाम ही सच्ची दवा है

११०. 'अब तो तेरी ही भक्ति चाहिये'

१११. बापूकी गोदमें देह छोड़ी

११२. किसका अहोभाग्य ?

११३. बा तो गरीबकी पत्नी थी

११४. बांसठ वर्षके साथी !

११५. बापूके जीवनमें बाका स्थान

११६. अनोखा उदाहरण

११७. 'यह भी सच है'

११८. बाकी वह मेज

११९. कपड़ेका कीमती टुकड़ा

१२०. करुण वियोग

१. बाके सम्बन्धमें बापूजी

“बा निरक्षर थी । स्वभावसे वह सीधी, स्वतंत्र और मेहनती थी और मेरे साथ तो बहुत कम बोलती थी। उसे अपने अज्ञानसे असन्तोष नहीं था । मैं पढ़ता हूं इसलिए वह भी पढ़े तो अच्छा हो, ऐसी बाकी इच्छा अपने बचपनमें मैंने कभी अनुभव नहीं की ।“

*

“बाको पढ़ानेका मुझे बड़ा उत्साह था। लेकिन उसमें दो कठिनाइयां थीं । एक तो यह कि बाकी अपनी पढ़नेकी भूख जागी नहीं थी । दूसरी कठिनाई यह थी कि बा पढ़नेके लिए तैयार हो जाती, तो भी उस जमानेमें हमारे भरे-पूरे परिवारमें इस इच्छाको पूरा करना आसान नहीं था ।“

*

“एक तो मुझे जबरदस्ती बाको पढ़ाना था, वह भी रातको एकांतमें ही हो सकता था । घरके बड़े-बूढ़ोंके देखते हुए कभी पत्नीकी ओर देखा भी नहीं जा सकता था | तब फिर उसके साथ बातें तो हो ही कैसे सकती थीं? उस समय काठियावाड़में घूंघत निकालनेका निकम्मा और जंगली रिवाज था । आज भी बहुत हद तक वह मौजूद है । इसलिए पढ़ानेकी परिस्थितियां भी मेरे विरुद्ध थीं। इस कारणसे मुझे स्वीकार करना चाहिये कि जवानीमें मैंने बाको पढ़ानेके जितने भी प्रयत्न किये वे सब लगभग असफल रहे ।”

*

“जब मैं विषय-भोगकी नींदसे जागा तब तो मैं सार्वजनिक जीवनमें – जनसेवाके जीवनमें कूद चुका था । इसलिए मैं बाको पढ़ानेमें बहुत समय देनेकी स्थितिमें नहीं था । शिक्षकके द्वारा बाको पढ़ानेके मेरे प्रयत्न भी सफल नहीं हुए! इसके फलस्वरूप आज कस्तूरबाई मुश्किलसे पत्र लिख सकती है और मामूली गुजराती समझ सकती है । मैं यह मानता हूं कि यदि मेरा प्रेम विषय-वासनासे दूषित न होता, तो आज वह विदुषी स्त्री बन गई होती । उसके पढ़नेके आलस्यको मैं जीत सका होता । मैं जानता हूं कि शुद्ध प्रेमके लिए इस जगतमें कुछ भी असंभव नहीं है ।“

*

“मैं यह मानता था कि पत्नीको अक्षर-ज्ञान तो होना ही चाहिये और यह ज्ञान मैं उसे दूंगा । परन्तु मेरे भोग-विलासके मोहने मुझे यह काम कभी करने ही नहीं दिया । और मैंने अपनी इस कमजोरीका गुस्सा पत्नी पर उतारा | एक समय तो ऐसा आया कि मैंने उसे उसके पीहर ही भेज दिया और बहुत अधिक कष्ट देनेके बाद ही फिरसे अपने साथ रहने देना स्वीकार किया । आगे चल कर मेरी समझमें यह आ गया कि ऐसा करनेमें केवल मेरी मुर्खता ही थी ।”

*

“बामें एक गुण बहुत बड़ी मात्रामें है, जो दूसरी बहुतेरी हिन्दू स्त्रियोंमें भी कम-ज्यादा मात्रामें होता है । मन या बेमनसे, ज्ञान या अज्ञानसे, मेरे पीछे चलनेमें ही उसने अपने जीवनकी सफलता मानी है । और पवित्र जीवन बितानेके मेरे प्रयत्नमें उसने मुझे कभी भी रोका नहीं । इस कारणसे, यद्यपि हम दोनोंकी बुद्धिमें बड़ा अन्तर है, फिर भी मैंने यह माना है कि हमारा जीवन संतोषी, सुखी और उन्नतिकी दिशामें आगे बढ़नेवाला है |”

*

“ब्रह्मचर्य-व्रतके पालनमें बाने कभी मेरा विरोध नहीं किया; या बाने कभी उसे तोड़नेके लिए मुझे ललचाया नहीं । मेरी कमजोरी या मेरा मोह ही मुझे रोक रहा था ।”

*

“बाका सबसे बड़ा गुण मुझमें स्वेच्छासे समा जानेका था। यह कोई मेरी खींचतानसे नहीं हुआ था । लेकिन बामें ही धीरे धीरे यह गुण खिल उठा था । मैं जानता नहीं था कि बामें यह गुण छिपा हुआ है ।

“मुझे आरंभमें जो अनुभव हुआ उसके आधार पर कहूं तो बा बहुत हठीली थी । मैं दबाव डालता तो भी वह अपना चाहा ही करती थी । इससे हमारे बीच थोड़े या लम्बे समयकी कड़वाहट भी बनी रहती थी । लेकिन मेरा जनसेवाका जीवन जैसे-जैसे उज्ज्वल बनता गया, वैसे-वेसे बाका मुझमें समा जानेका गुण भी खिलता गया और गहरे विचारके बाद वह धीरे धीरे मुझमें अर्थात् मेरे काममें समाती गई । समय जाने पर ऐसा लगा कि बाके मन

मुझमें और मेरे काममें – सेवामें कोई भेद नहीं रह गया । और ज्यों ज्यों यह भेद मिटता गया त्यों त्यों बा उसमें एकरस होती गई । यह गुण हिन्दुस्तानकी धरतीको शायद सबसे ज्यादा प्रिय है । जो भी हो, बाकी ऊपर बताई भावनाका मुझे तो यही सबसे बड़ा कारण मालूम होता है ।

"बामें यह गुण ऊंचीसे ऊंची सीमा तक पहुंचा, इसका कारण हम दोनोंका ब्रह्मचर्य था । मेरी अपेक्षा बाके लिए वह बहुत ज्यादा स्वाभाविक सिद्ध हुआ । शुरूमें बाको इसकी समझ भी नहीं थी । मैंने बह्मचर्यके पालनका विचार किया और बाने उसे पकड़ कर अपना बना लिया ।

"इसका फल यह हुआ कि हम दोनोंका सम्बन्ध सच्चे मित्रोंका हो गया । मेरे साथ रहनेमें बाके लिए सन् १९०६ से, सच पूछा जाय तो सन् १९०१ से, मेरे कामके साथ घुल-मिल जानेके सिवा या उसके बाहर कुछ रह ही नहीं गया था। वह मेरे कामसे अलग रह सकती थी, अलग रहनेमें उसे कोई कठिनाई न होती; लेकिन मित्र होते हुए भी उसने स्त्रीके नाते और पत्नीके नाते मेरे काममें समा जानेमें ही अपना धर्म माना । इसमें मेरी निजी सेवाको बाने अनिवार्य – अटल – स्थान दिया । यही कारण है कि मरते दम तक मेरी सुख-सुविधाका उसने हमेशा ध्यान रखा ।

२. बाका आत्म-सन्तोष

बापूजी बहुत पढ़े-लिखे थे, विलायत हो आये थे और देशके बहुत बड़े नेता थे, जब कि बा अपढ़ थीं । इसके सिवा, बापूजी धीरे धीरे अपने जीवनमें भारी परिवर्तन करते जाते थे और अपने विचारों पर अमल करनेका बहुत आग्रह रखते थे । इससे बाकी सचमुच कड़ी कसौटी हो जाती थी ।

इस कारणसे बहुतेरे लोग यही मानते थे कि बेचारी बाको इससे बड़ा दुःख होता होगा । एक बहनने तो बाके लिए अपनी हमदर्दी बतानेवाला एक पत्र ही उन्हें लिख डाला ।

बाने उस पत्रके जवाबमें लिखा था: "तुम्हारा पत्र मुझे बहुत खटकता रहता है । मेरी और तुम्हारी तो किसी दिनि बातचीत भी नहीं हुई । तब तुमने कैसे यह जाना कि गांधीजी मुझे बहुत दुःख देते हैं ? मेरा चेहरा उदास और उतरा हुआ रहता है, खाने-पीनेके बारेमें भी गांधीजी मुझे दुःख देते हैं, यह तुम कभी देखने आई थीं ?

"मुझे जैसा पति मिला है वैसा तो ढुनियामें किसी भी स्त्रीको नहीं मिला होगा । वे अपने सत्यसे सारे जगतमें पूजे जाते हैं । हजारों लोग उनसे सलाह लेने आते हैं । हजारोंको वे सलाह देते हैं । मेरी गलतीके बिना उन्होंने कभी मेरा दोष नहीं निकाला । हां, मेरे विचार उदार न हों, मेरी दृष्टि ओछी हो, तो जरूर वे मुझसे कहते हैं । लेकिन यह तो सारी दुनियामें चलता आया है । गांधीजी इस बातको अपने अखबारमें छाप देते हैं, जब कि दूसरे पति घरमें झगड़ा मचाते हैं ।

"मेरे पतिके कारण ही मैं सारे जगतमें पूजी जाती हूं । मेरे सगे-सम्बन्धियोंके मनमें मेरे लिए खूब प्रेम है । मेरे मित्र मेरा बहुत आदर करते हैं ।

"तुम मेरे दुःखकी जो झूठी बात कहती हो, उसे कोई मानेगा ही नहीं । हां, मैं तुम्हारे जैसी नये जमानेकी स्त्री नहीं हूं । नये जमानेकी स्त्री मानती है कि जीवनमें खूब स्वतंत्रता ली

जाय; पति हमारे वशमें रहे तब तो ठीक, वरना उसका और हमारा रास्ता अलग! लेकिन सनातनी हिन्दू स्त्रीको ऐसा करना शोभा नहीं देता ।

“पार्वतीजीका यह प्रण था कि जन्म-जन्ममें शंकर ही उनके पति रहेंगे । वेसा ही मेरा भी समझो |”

३. पतिके धर्ममें समा जानेवाली बा

बापूजी दक्षिण अफ्रीकामें फिनिक्स आश्रम चलाते थे तबकी यह बात है ।

१९१३ का साल था । एक दिन सुबह ११ बजेके आस-पास अपने नियमके अनुसार आश्रमके सब लोगोंको जिमानेके बाद बापूजी भोजन करने बैठे थे । बापूके परिवारके एक आदरणीय सदस्य श्री कालीदासभाई गांधी उनके पास बैठे थे । वे टोंगाट नामक गांवमें रहते थे । वहांसे थोड़े दिनोंके लिए आश्रममें रहने आये थे । बा खड़े खड़े रसोई-घरमें कुछ सफाई कर रही थीं ।

दक्षिण अफ्रीकामें एक मामूली व्यापारीके यहां भी रसोई-घरका या दूसरा सफाई-काम करनेके लिए नौकर रहता ही था । आश्रममें सब काम बाको अपने हाथोंसे करते देख कर कालीदासभाई बापूसे कहने लगे : "भाई, तुमने तो अपने जीवनमें भारी परिवर्तन कर डाला है, जीवनको खूब सादा बना लिया है। लेकिन इस बेचारी कस्तूरबाईने भी तो कोई मौजशौक नहीं जाना !"

बापूजीने खाते खाते जवाब दिया : "मैंने इसे मौजशौक करनेसे कब रोका है?"

बाने हंसते हंसते ताना मारा : "तो बताइये, मैंने आपके घरमें क्या मौजशौक किया है?"

बापूजीने भी उसी लहजेमें हंसते हंसते कहा : "मैंने तुझे गहने पहननेसे या अच्छी रेशमी साड़ियां पहननेसे कब रोका है? और जब तेरी इच्छा हुई तब क्या मैं तेरे लिए सोनेकी चुड़ियां भी नहीं बनवा लाया था ?"

बा कुछ गंभीर होकर बोलीं: "आपने तो सभी कुछ मुझे ला दिया । लेकिन मैंने कब उसे काममें लिया ? मैंने समझ लिया कि आपका रास्ता अलग है; आपको साधु-संन्यासी बनना है । तब भला मैं मौजशौकमें रह कर क्या करती ? आपका मन जान लेनेके बाद मैंने भी अपने मनको मोड़ लिया और दुनियाका रास्ता छोड़ दिया ।"

४. 'जरा तो शरमाइये !'

बापूजी दक्षिण अफ्रीकामें बस कर डरबनमें वकालत करते थे, उस समयका यह प्रसंग है।

बहुत बार बापूजीके दफ्तरमें काम करनेवाले कारकुन उनके साथ ही घरमें रहते थे । उन लोगोंमें हिन्दू थे और ईसाई थे; या प्रान्तकी दृष्टिसे कहा जाय तो गुजराती और मद्रासी थे । बापूजी उनके साथ कभी भेदभाव नहीं रखते थे । वे उन्हें अपने परिवारके ही आदमी मानते थे और बाकी ओरसे इस सम्बन्धमें कभी रुकावट आती तो वे बाको डांटते भी थे ।

बापूजी जिस मकानमें रहते थे उसकी बनावट पश्चिमी ढंगकी थी । उसके कमरोंमें पानीके निकासके लिए नालियां नहीं थीं । इसलिए हर कमरेमें नालीके बदले पेशाबके लिए एक खास तरहका बरतन रखा जाता था ।

बापूके यहां पेशाबका बरतन उठानेका काम नौकरको नहीं सौंपा जाता था । बा और बापूजी ही वह बरतन उठाते थे । जो कारकुन अपनेको घरके आदमी समझने लगते थे, वे तो अपने पेशाबके बरतन स्वयं ही उठाते थे ।

एक बार बापूजीके घरमें एक ईसाई कारकुन रहने आया । वह नया ही आया था, इसलिए उसका बरतन बा या बापूजीको ही उठाना पड़ता था ।

वैसे तो पेशाबके दूसरे बरतन बा ही उठाती थीं, बापूजीको नहीं उठाने देती थीं। लेकिन इस ईसाई कारकुनका बरतन उठाना बाको सहन नहीं हुआ । बापूजी उठायें यह बाको बुरा लगता था; और स्वयं बा उसका बरतन उठानेको तैयार नहीं थीं । इसलिए इस मामलेमें बा और बापूजीके बीच झगड़ा हुआ । थोड़ी झकझकके बाद बा वह बरतन उठानेको तैयार हो गईं ।

बापूजीने इस प्रसंगको एक पुण्य-स्मरण और प्रायश्चित्त कहकर अपनी 'आत्मकथा' में इसका हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है:

“आंखोंसे मोतीकी बूंदें टपकाती हुई, हाथमें (पेशाबका) बरतन उठाती हुई और अपनी लाल लाल आंखोंसे मुझे उलाहना देती हुई सीढ़ियोंसे उतरती कस्तुरबाईको मैं आज भी चित्रित कर सकता हूं ।

“लेकिन मैं जितना प्रेमल पति था उतना ही कठोर पति भी था । मैं अपनेको उसका शिक्षक भी मानता था। और इसलिए अपने अंध-प्रेमके वश होकर मैं उसे काफी सताता था ।

“कस्तूरबाईके इस तरह केवल बरतन उठाकर ले जानेसे मुझे सन्तोष नहीं हुआ । वह हंसते हंसते बरतन ले जाती, तो ही मेरे मनको सन्तोष होता । इसलिए मैंने दो शब्द ऊंची आवाजमें कहे : ‘यह झगड़ा मेरे घरमें नहीं चलेगा !’

“ये वचन पत्नीको तीरकी तरह चुभ गये । वह आग-बबूला हो उठी । बोली : ‘तो आपका घर आप अपने पास रखिये; मैं यह चली !'

“में तो उस समय इश्वरको भूल गया था। हृदयमें दयाकी बूंद भी बाकी नहीं रह गई थी । मैंने उसका हाथ पकड़ा । जीनेके सामने ही बाहर जानेका दरवाजा था। मैं उस गरीब अबलाको पकड़ कर दरवाजे तक घसीट ले गया और दरवाजेको आधा खोला ।

“कस्तूरबाई आंखोंसे गंगा-जमना बहाती हुई बोली: ‘आपको तो लाज-शरम नहीं है, लेकिन मुझे है । जरा तो शरमाइये! मैं बाहर निकल कर कहां जाऊंगी? यहां मेरे मां-बाप नहीं बैठे हैं, जो उनके पास चली जाऊं । मैं पत्नी ठहरी, इसलिए मुझे आपके लात-घूंसे खाने ही होंगे । अब शरमाइये और दरवाजा बन्द कीजिये | कोई देख लेगा तो दोनोंमें से एककी भी शोभा नहीं रह जायगी ।‘

“मैंने मुंह तो लाल बनाये रखा, लेकिन मैं लज्जित जरूर हुआ । मैंने दरवाजा बन्द कर लिया । अगर पत्नी मुझे छोड़-कर कहीं जा नहीं सकती थी, तो मैं भी उसे छोड़कर कहां जाने-वाला था? हमारे बीच झगड़े तो जीवनमें काफी हुए, लेकिन परिणाम सदा अच्छा ही आया है । पत्नीने अपनी अनोखी सहन-शक्तिसे सदा मुझ पर विजय पाई है ।”

५. सेवा और भेंट

दक्षिण अफ्रीकाका अपना काम पूरा करके सन् १९०१ में बापूजी भारत लौटनेकी तैयारी कर रहे थे ।

बापूजीने नेटालमें हिन्दुस्तानियोंकी अच्छी सेवा की थी, इसलिए उन्होंने बापूजीको भावभीनी बिदा देनेका विचार किया ।

हिन्दुस्तानियोंने अपने प्रेमरूपी अमृतसे बापूजीको नहला दिया । जगह जगह उन्हें मानपत्र देनेकी सभायें हुईं और हर जगह कीमती भेंटें भी उन्हें दी गईं । उनमें सोने-चांदीकी चीजें तो थीं ही, लेकिन हीरेकी चीजें भी थीं ।

इसके सिवा, उन भेंटोंमें एक पचास गिन्नीका हार भी कस्तूरबाके लिए दिया गया था ।

बापूजी मानते थे कि जनसेवकके लिए व्यक्तिगत भेंटें हो ही नहीं सकतीं । इसलिए जिस रातको इनमें से मुख्य भेंटें बापूजीको मिलीं, वह रात उन्होंने व्याकुलके समान जाग कर बिताई । वे अपने कमरेमें चक्कर काटते रहे, लेकिन मनकी गुत्थी कुछ सुलझी नहीं! सैकड़ों रुपयोंकी भेंटें छोड़ना उन्हें कठिन मालूम हो रहा था, लेकिन इन भेंटोंको अपने पास रखना उससे भी ज्यादा कठिन लग रहा था ।

बापूजीने सोचा: 'मैं शायद इन भेंटोंको पचा सकूंगा, लेकिन मेरे बालकोंका क्या होगा? मेरी पत्नीका क्या होगा? उन्हें शिक्षा तो घरमें सेवाकी मिलती है । उन्हें हमेशा यह समझाया

जाता है कि सेवाकी कीमत नहीं ली जा सकती । मैं घरमें कीमती गहने या दूसरी कीमती चीजें नहीं रखता। मेरे जीवनमें सादगी बढ़ती जा रही है । अब इन सोने-चांदीकी चीजों और जवाहरातका मैं क्या करूं?'

अंतमें बापूजी इस निश्चय पर पहुंचे कि 'ये चीजें मैं रख ही नहीं सकता ।' इसलिए उन्होंने पारसी रुस्तमजी तथा अन्य लोगोंको भेंटमें मिली चीजों और गहनोंका ट्रस्टी बना कर उनके

पास भेजे जानेवाले पत्रका मसौदा तैयार कर लिया और सुबह बा तथा पुत्रोंके साथ सलाह करके अपना बोझ हलका करनेका विचार किया ।

बापू अच्छी तरह जानते थे कि बाको इस मामलेमें समझाना बहुत कठिन होगा, जब कि बालकोंको यह बात समझानेमें जरा भी कठिनाई नहीं होगी । इसलिए बापूने पुत्रोंको इस मामलेमें अपना वकील बनानेका विचार किया ।

बच्चे तो बापूकी बात तुरंत समझ गये । वे बोले : " हमें इन कीमती गहनोंकी जरूरत नहीं । हमें सारी भेंटें लौटा ही देती चाहिये । और कभी ऐसी चीजोंकी हमें जरूरत पड़ी, तो क्या हम स्वयं नहीं खरीद सकेंगे? "

बच्चोंकी बात सुनकर बापू प्रसन्न हुए और उनसे कहने लगे: "तब तुम बाको समझाओगे न?"

बालकोंने जवाब दिया: "जरूर, यह काम हमारा है। बाको कहां ये गहने पहनने हैं? वह तो हमारे ही लिए इन्हें रखना चाहेंगी । लेकिन जब हमें इनकी जरूरत नहीं, तब बा इन्हें रखनेका हठ क्यों करने लगीं?"

लेकिन बाको समझानेका काम आशासे अधिक कठिन साबित हुआ । बा आंखोंसे आंसू बहाती बापूसे कहने लगीं: "आपको और आपके पुत्रोंको इन गहनोंकी आवश्यकता न हो तो न सही । बच्चोंको तो हम जेसे चढ़ायें वैसे वे चढ़ जाते हैं | आप मुझे चाहे ये गहने न पहनने दें, लेकिन मेरी बहुओंका क्या होगा? उनके काम तो ये आयेंगे न? और कौन जानता है कल क्या होगा ? इतने प्रेमसे दी हुई चीजें लौटाई नहीं जा सकतीं । "

बालक अपनी बात पर डटे रहे और बापूको तो अपनी बातसे डिगना था ही नहीं । बापूने धीरेसे कहा: " बच्चे शादी तो करें! हमें कहां बचपनमें उनकी शादी करनी है? बड़े होने पर वे जो चाहें स्वयं ही कर सकते हैं । और हम ऐसी बहुएं तो खोजेंगे नहीं, जो गहनोंकी शौकीन हों । इस पर भी अगर गहने बनवाने ही पड़े, तो मैं बैठा हूं न?"

यह सुनकर बाने उलाहना देते हुए बापूजीसे कहा: "में खूब जानती हूं आपको! आप वहीं हैं न, जिन्होंने मेरे गहने भी ले लिये थे? आपने मुझे ही खुशीसे पहनने नहीं दिये, तो मेरी बहुओंके लिए आप क्या खरीदेंगे? बच्चोंको आप आजसे ही बेरागी बना रहे हैं! मैं कहती हूं कि ये सब गहने नहीं लौटाये जायंगे | और फिर मेरे इस हार पर आपका क्या अधिकार है?"

बापूने पूछा: "लेकिन यह हार तेरी सेवाके बदलेमें मिला है या मेरी सेवाके बदलेमें?"

बा बोलीं: "भले ही आपकी सेवाके बदलेमें मिला हो! लेकिन आपकी सेवा मेरी भी सेवा कही जायगी । मुझसे रात-दिन आपने जो मेहनत कराई, वह क्या सेवामें नहीं गिनी जायगी ? मुझे रुलाकर भी आपने चाहे जिन लोगोंको घरमें रखा और उनकी चाकरी मुझसे कराई । वह क्या किसी गिनतीमें नहीं?"

ये सब शब्द-बाण बड़े तीखे थे । फिर भी बापूने धीरजसे बाको समझानेका प्रयत्न जारी रखा । और अन्तमें सारी चीजें लौटा देनेके लिए बाको राजी कर लिया । बाकी इजाजत उन्हें मिल गई ।

बापूजी इस प्रसंगके बारेमें लिखते हैं: "अपने इस कदमके लिए मुझे कभी पछतावा नहीं हुआ । कुछ समय बाद कस्तूरबाईकी समझमें भी आ गया कि मेरा यह कदम सही था। इसकी वजहसे हम जीवनमें अनेक प्रलोभनोंसे बच गये हैं ।

६. बाकी सहन-शक्ति

दक्षिण अफ्रीकामें बापूजी जब जोहानिसबर्गमें रहते थे उन दिनों बाको बार बार रकतस्रावकी शिकायत हो जाती थी । बापूजीके एक मित्र डरबनमें रहते थे । उन्होंने बापूजीको बाका ऑपरेशन करानेकी सलाह दी । बाका हृदय कमजोर था। इसलिए डर था कि वे शायद क्लोरोफॉर्म सहन नहीं कर सकेंगी । इस कारणसे क्लोरोफॉर्म सुंधाये बिना ही ऑपरेशन करानेकी जरूरत थी ।

थोड़ी आनाकानीके बाद बाने ऑपरेशन कराना स्वीकार किया । बाका शरीर बहुत कमजोर हो गया था । फिर भी वे क्लोरोफॉर्म लिये बिना ही ऑपरेशन करानेको तैयार हो गईं । उनका ऑपरेशन मामूली नहीं था । गर्भाशयका 'स्क्रेपिंग' करना - उसे छीलना था ।

ऑपरेशनके समय बाने जो अनोखी सहन-शक्ति दिखाई, उसकी प्रशंसा करते हुए एक बार बापूजीने महादेवभाईसे कहा था : "(ऑपरेशनके समय) मैं जरा दूर खड़ा था । मैं कांप रहा था । गर्भाशयमें औजार डाल कर उसे चौड़ा करके डॉक्टर चीरने लगे, तब तड़-तड़की आवाज सुनाई पड़ती थी। बाके मुंह पर तो दुःख दिखाई देता था, लेकिन उस दुःखको प्रकट करनेके लिए उसने उफ तक नहीं किया। मैं उससे कहता था, 'देखना, हिम्मत न हारना ।' लेकिन मैं स्वयं ही कांप रहा था। मुझसे उसका दुःख देखा नहीं जाता था |"

यह सुनकर महादेवभाई बोल उठे : "यह तो सहन-शक्तिका चमत्कार ही कहा जायगा !"

बापू बोले : "बेशक । ऑपरेशनमें समय भी काफी लगा था । दूसरा कोई होता तो चीखे-चिल्लाये बिना न रहता। लेकिन बाने अनोखी सहन-शक्ति बताई।"

७. बा और बापूकी दृढ़ता

डरबनमें बाका ऑपरेशन सफल हुआ, इसलिए डॉक्टरने दो-तीन दिन बाद बापूको जोहानिसबर्ग जानेकी इजाजत दे दी। उस समय बापू जोहानिसबर्गमें रहते थे । डॉक्टर बापूके मित्र थे | डॉक्टर और उनकी पत्नी दोनों घरके आदमीकी तरह बाकी सेवा और उपचार करते थे | इसलिए बाको डरबनमें रखकर बापू जोहानिसबर्ग चले गये ।

लेकिन कुछ ही दिन बाद बापूको ये समाचार मिले कि बाका शरीर जरा भी सुधर नहीं रहा है और बिस्तरसे उठने-बैठनेकी ताकत भी उनमें नहीं आ पायी है । एक बार तो वे बेहोश भी हो गई थीं ।

बाकी ऐसी गंभीर स्थिति देख कर डॉक्टरको लगा कि उन्हें मांसका शोरबा देना पड़ेगा। लेकिन डॉक्टर यह जानते थे कि बापूको पूछे बिना बाको शराब या मांस दवामें अथवा खानेमें नहीं दिया जा सकता । इसलिए डॉक्टरने बापूको जोहानिसबर्ग फोन किया : “आपकी पत्नीको मांसका शोरबा या ‘बीफ टी’ देनेकी जरूरत मुझे मालूम होती है । मुझे इसकी इजाजत मिलनी चाहिये ।”

बापूने जवाब दिया : “मैं यह इजाजत नहीं दे सकता । लेकिन कस्तूरबाई इस मामलेमें स्वतंत्र है । उससे पूछने जैसी स्थिति हो तो पूछ लीजिये और वह शोरबा लेना चाहे तो बिना हिचकिचाहटके दीजिये ।“

डॉक्टर बोले : “बीमारसे ऐसी बातें पूछना मुझे पसंद नहीं । इसलिए आपका यहां आना जरूरी है । अगर आप मुझे ये चीजें बीमारको खिलानेकी इजाजत न दें, तो मैं आपकी स्त्रीके लिए जिम्मेदार नहीं रहूंगा !”

बापूने उसी दिन डरबनकी ट्रेन पकड़ी । वे डरबन पहुंचे तब डॉक्टरने उन्हें सुनाया : “मैंने तो बीमारको शोरबा पिलाकर ही आपको टेलीफोन किया था |”

बापूने बड़े दुःखसे कहा : “डॉक्टर, मैं इसे धोखा मानता हूं।“

डॉक्टरने दृढ़तासे कहा : “बीमारका इलाज करते समय मैं धोखा-बोखा कुछ नहीं समझता । हम डॉक्टर लोग ऐसे समय बीमारको या उसके सगे-सम्बन्धियोंको धोखा देनेमें पुण्य मानते हैं । हमारा कतंव्य तो किसी भी उपायसे बीमारको बचाना है |”

यह सुनकर बापू बड़े दुःखी हुए । लेकिन वे शांत रहे । डॉक्टर उनके मित्र थे; भले आदमी थे । उनका और उनकी पत्नीका बापू पर बड़ा उपकार था । लेकिन डॉक्टरका यह बरताव सहनेको बापू तैयार नहीं थे । थोड़ी देर बाद वे बोले : “डॉक्टर, अब साफ-साफ बातें कीजिये । आप क्या करना चाहते हैं ? मैं अपनी पत्नीको उसकी इच्छाके बिना कभी मांस नहीं खिलाने दूंगा । मांस न खानेसे अगर उसकी मृत्यु भी हो जाय, तो मैं उसे सहन करनेके लिए तैयार हूं । ”

डॉक्टरने कहा: “आपकी यह फिलासफी मेरे घरमें तो नहीं ही चलेगी । मैं आपसे कहता हूं कि आप जब तक अपनी पत्नीको मेरे घरमें रहने देंगे, तब तक मैं उसे मांस या दूसरी जरूरी चीजें अवश्य खिलाऊंगा । अगर ऐसा न करने दें तो आप अपनी पत्नीको यहांसे ले जाइये | अपने ही घरमें मैं जान-बूझकर उसकी मृत्यु नहीं होने दूंगा ।“

बापू बोले : “तब क्या आप यह कहते हैं कि मुझे इसी समय अपनी पत्नीको ले जाना चाहिये?”

डॉक्टरने उत्तर दिया : “मैं कब कहता हूं कि उसे ले जाइये ? मैं तो यह कहता हूं कि आप मुझ पर कोई प्रतिबन्ध न लगायें, तो हम दोनों (पति-पत्नी) जितनी भी हमसे हो सकेगी उतनी सेवा-चाकरी बीमारकी करेंगे और आप निश्चिन्त होकर जा सकते हैं । अगर आप इतनी सीधी बात भी नहीं समझ सकें, तो मुझे लाचार होकर कहना पड़ेगा कि आप अपनी पत्नीको मेरे घरसे ले जाइये ।”

बापूके साथ उस समय उनके एक पुत्र भी थे । बापूने जब उनसे पूछा तो उन्होंने कहा: “आपकी बात मुझे स्वीकार है । बाको मांस तो किसी भी हालतमें नहीं खिलाया जा सकता।”

इसके बाद बापू बाके पास गये । वे बहुत कमजोर थीं । उनसे कुछ भी पूछना उन्हें कष्ट देने जेसा था । लेकिन अपना धर्म समझकर बापूने सारी बात थोड़ेमें बाको सुना दी ।

बाने दृढ़तासे जवाब दिया: "मुझे मांसका शोरबा नहीं पीना है । मनुष्यका शरीर बार बार नहीं मिलता । भले ही मैं आपकी गोदमें मर जाऊं, लेकिन मैं इस शरीरको कभी भ्रष्ट नहीं होने दूंगी ।"

बापूने इतनेसे संतोष नहीं माना । उन्होंने जितना भी समझाया जा सकता था बाको समझाया और कहा : "तू मेरे विचारोंके अनुसार चलनेके लिए बंधी हुई नहीं है ।" बापूने यह भी कहा कि मैं ऐसे कुछ हिन्दुओंको जानता हूं, जो दवाके रूपमें मांस और शराबका सेवन करते हैं । लेकिन बा टससे मस न हुईं । उन्होंने बापूसे कहा : "आप मुझे यहांसे ले जाइये।"

इससे बापूको बड़ी प्रसन्नता हुई | ले जानेकी बातसे मनमें थोड़ी घबराहट तो हुई, लेकिन उन्होंने बाको ले जानेका निश्चय कर लिया ।

बापूने बाका निश्चय डॉक्टरको सुनाया ।

डॉक्टर बापूकी बात सुनकर गुस्सा हो गये और कहने लगे : "आप तो बड़े कठोर पति मालूम होते हैं ! ऐसी बीमारीमें उस बेचारीसे यह बात करनेंमें आपको शरम भी नहीं आई? मैं आपसे कहता हूं कि आपकी पत्नी यहांसे ले जाने लायक नहीं है । उसका शरीर जरासा भी धक्का सहन नहीं कर सकता । रास्तेमें ही उसके प्राण निकल जायें तो मुझे अचरज नहीं होगा । फिर भी अगर आप हठसे मेरी बात न मानें; तो जो मनमें आये वह करें । मैं बीमारको अगर शोरबा न दे सकूं तो उसे एक रात भी अपने घरमें रखनेकी जिम्मेदारी नहीं लूंगा ।"

उस समय रिमझिम रिमझिम मेह बरस रहा था । स्टेशन वहांसे दूर था । डरबनसे फिनिक्स तकका रास्ता रेलसे तय करना था और फिनिक्ससे आश्रम तकका ढाई मीलका रास्ता पैदल पार करना था । बाको ले जानेमें खतरा काफी था । लेकिन बापूकी ईश्वरमें पूरी श्रद्धा थी । उन्हें भरोसा था कि ईश्वर जरूर मदद करेगा । बापूने एक आदमीको पहलेसे फिनिक्स

भेज दिया । फिनिक्समें बापूके यहां 'हैमक'[१] था । बापूने अपने मित्र मि० वेस्टको संदेश भेजा कि वे हैमक, एक बोतल गरम दूध, एक बोतल गरम पानी और छह आदमियोंको साथ लेकर फिनिक्स स्टेशन पर आ जायें ।

दूसरी ट्रेन रवाना होनेका समय हुआ तब बापूने रिक्शा मंगाया । उसमें ऐसी नाजुक हालतमें बाको बैठा कर बापू रवाना हुए । बाको तो हिम्मत बंधानेकी कोई बात ही नहीं थी । उलटे बाने बापूको हिम्मत बंधाते हुए कहा: "मुझे कुछ भी नहीं होगा । आप चिन्ता न करें ।"

बाके हाड़-पिंजर बने हुए शरीरमें वजन तो रहा ही नहीं था । खाना जरा भी नहीं खाया जाता था । ट्रेनके डिब्बे तक पहुंचनेमें स्टेशनके बड़े प्लेटफार्म पर लम्बा चल कर जाना था । रिक्शा वहां नहीं जा सकता था । इसलिए बापू बाको उठाकर डिब्बे तक ले गये । फिनिक्स स्टेशन पर तो वह झोली आ गई थी । उसमें बाको आरामसे ले जाया गया । फिनिक्समें केवल पानीके इलाजसे धीरे धीरे बाका शरीर बंधने लगा ।

फिनिक्स पहुंचनेके दो तीन दिन बाद वहां एक स्वामीजी पधारे । बा और बापूके 'हठ' की बात सुनकर उनका हृदय पसीज उठा और वे दोनोंको समझानेके लिए आये । स्वामीजी आये उस समय बापूके दो पुत्र श्री मणिलालभाई और श्री रामदासभाई भी वहां उपस्थित थे।

मांस खानेमें कोई दोष नहीं है, इस विषय पर स्वामीजीने तो एक भाषण ही दे डाला । मांस खानेका समर्थन करनेवाले मनुस्मृतिके श्लोक भी कह सुनाये ।

बाके सामने स्वामीजीने मांसकी बात चलाई, यह बापूजीको अच्छा तो न लगा । लेकिन विनयके खातिर उन्होंने स्वामीजीको रोका नहीं ।

बाकी तो श्रद्धा ही काम कर रही थी । शास्त्रोंके प्रमाणको वे बेचारी क्या जानें? उनके लिए तो बापदादाके समयसे चली आयी पुरानी परंपरा ही धर्म थी । बापूजीके पुत्रोंका बापूके धर्म पर विश्वास था। इसलिए वे दोनों स्वामीजीके साथ विनोद करते रहे ।

आखिरमें बाने यह मनोरंजक बातचीत यों कह कर बंद की: "स्वामीजी, आप चाहे जो कहें, लेकिन मुझे मांसका शोरबा खा कर स्वस्थ नहीं होना है। अब आप मेरा सिर न दुखायें, तो मैं आपका आभार मानूंगी। बाकी रही बातें आप चाहें तो बादमें इन बच्चोंके पिताजीसे कर लें। अपना निश्चय तो मैंने आपको बता ही दिया।"

---

१. हैमक = जालीदार कपेड़ेकी झोली या पालना। उसके चारों सिरे बांससे बंधे होनेके कारण बीमार उसमें आरामसे झूलता रह सकता है।

८. बापूका विवेक और बाका निश्चय

सन् १९१३ में दक्षिण अफ्रीकाकी गोरी सरकारने यह कानून पास किया कि जो विवाह ईसाई धर्मके अनुसार हुए हों—जो विवाह सरकारके विवाह-विभागके अधिकारीके दफ्तरमें दर्ज हुए हों – उन्हें छोड़कर दूसरे सब विवाहोंके लिए कानूनमें कोई स्थान नहीं है । इसलिए हिन्दू, मुस्लिम, पारसी आदि घर्मोंके अनुसार हुए सारे विवाह इस कानूनके कारण रद माने गये! और इस कारण बहुतसी विवाहित हिन्दुस्तानी स्त्रियोंका दरजा अपने पतियोंकी धर्मपत्नियोंका न रह कर रखेल स्त्रियों जैसा हो गया ।

इस बातको हिन्दुस्तानी स्त्रियां और पुरुष दोनों ही सहन नहीं कर सकते थे । बापूजीने यह कानून रद करनेके बारेमें वहांकी सरकारसे बातचीत की, लेकिन उसका कोई नतीजा नहीं आया । इसलिए बापूने सत्याग्रह करनेका निश्चय किया । इस लड़ाईमें स्त्रियोंको भी बुलानेका उन्होंने निर्णय किया ।

बापू इस बातको जानते थे कि स्त्रियोंको जेलमें भेजनेका कदम बड़ा खतरनाक है । इसके सिवा एक डर और भी था । फिनिक्स आश्रममें रहनेवाली बहुतसी स्त्रियां बापूकी रिश्तेदार थीं । इसलिए सिर्फ बापूकी प्रतिष्ठाको बचानेके लिए ही अगर वे जेल जानेका विचार करतीं और बादमें संकटके समय घबराकर या जेलमें जानेके बाद उकता कर सरकारसे माफी मांगतीं, तो बापूको बड़ा आघात पहुंचता और सत्याग्रहकी लड़ाई एकदम कमजोर पड़ जाती ।

बापूने निश्चय किया था कि कमसे कम बाको तो इस लड़ाईमें शामिल होने और जेल जानेके लिए ललचाना ही नहीं चाहिये । बापू अगर बासे पूछते तो उनसे ‘ना’ नहीं कहा जाता; और उनके 'हां’ की भी कितनी कीमत आंकी जाय, यह बापू उस समय कह नहीं सकते थे । ऐसे खतरेवाले काममें स्त्री अपनी इच्छासे जो कदम उठाये उसे ही पुरुषको स्वीकार करना चाहिये; और अगर पत्नी कोई कदम न उठाये तो पतिको जरा भी दुःखी नहीं होना चाहिये, इस बातको बापू अच्छी तरह समझते थे । इसलिए वे इस परेशानीमें पड़े कि बाके सामने

यह बात कैसे रखी जाय । उनका खयाल था कि किसी समय मौका मिलने पर स्वाभाविक रूपसे ही इस विषयमें बासे बात हो तो ज्यादा अच्छा ।

एक दिन बा रसोई-घरमें भाखरी[१] बेलने बैठी थीं और बापूके फिनिक्सवाले साथी श्री रावजीभाई मणिभाई पटेल भाखरी सेंक रहे थे । बापूजी उस समय कोई और काम कर रहे थे । अपना काम करते करते उन्होंने एकाएक बसे पूछा: "तुझे पता चला या नहीं ?"

बाने उत्सुकतासे पूछा: "क्या?"

बायूजीने हंसते हुए कहा: "आज तक तू मेरी ब्याही हुई पत्नी थी । अब तू मेरी ब्याही हुई पत्नी नहीं रही ।"

बाने भौंहें चढ़ा कर पूछा: "ऐसा और किसने कह दिया? आप तो रोज ही नई नई समस्यायें खोज निकालते हैं!"

बापू बोले: "मैं कहां खोज निकालता हूं? वह जनरल स्मट्स कहता है कि ईसाई विवाहोंकी तरह हमारा विवाह सरकारी अदालतके रजिस्टरमें दर्ज नहीं हुआ है, इसलिए वह गेर-कानूनी माना जायगा; और इसलिए तू मेरी ब्याही हुई पत्नी नहीं, लेकिन रखेल स्त्री मानी जायगी ।"

यह सुनकर बाका चेहरा तमतमा उठा। वे बोलीं "कहा उसका सिर? उस निठल्लेको ऐसी बातें कहांसे सूझती हैं?"

बापूने पूछा : "लेकिन अब तुम स्त्रियां क्या करोगी?"

बाने सामनेसे प्रश्न किया: "आप ही बताइये, हम क्या करें?"

बापू तो ऐसे प्रश्नकी राह ही देख रहे थे । वे मुसकराते हुए बोले: "हम पुरुष जिस तरह सरकारसे लड़ते हैं, वैसे तुम स्त्रियां भी लड़ो । सच्ची ब्याही हुई पत्नी बनना हो और रखेल न कहलाना हो, और अगर तुम लोगोंको अपनी आबरू प्यारी हो, तो हमारी तरह तुम्हें भी सरकारसे लड़ना चाहिये |"

बाने कहा: "आप तो जेलमें जाते हैं!"

बापूने कहा: "तू भी अपनी आबरूको बचानेके लिए जेल जानेको तैयार हो जा ।"

बा अचंभेमें पड़ कर बोलीं: "हां, जेलमें जाऊं! औरतें भी कभी जेलमें जा सकती हैं?"

बापूजी : "क्यों, औरतें जेलमें क्यों नहीं जा सकतीं ? पुरुष जो सुख-दुःख भोगें, वे स्त्रियां क्यों नहीं भोग सकतीं ? रामके पीछे सीता गई थी। हरिश्चन्द्र पीछे तारामती गई थी। और नलके पीछे दमयंती गई थी । और इन सबने जंगलमें अपार दुःख सहन किये थे ।"

यह सुन कर बा बोलीं: "वे सब देवताओं जैसे थे! उनके कदमों पर चलनेकी शक्ति हममें कहां है?"

बापूने गंभीर बन कर कहा: " इसमें क्या है? हम भी उनके जैसा आचरण करें तो उनके समान बन सकते हैं, देवता हो सकते हैं । रामके कुलका मैं हूं और सीताके कुलकी तू है। मैं राम बन सकता हूं और तू सीता बन सकती है । सीता अपने धर्मका पालन करनेके लिए रामके पीछे वनमें न गई होती और राजमहलोंमें ही आरामसे रहती, तो कोई उसे सीतामाता नहीं कहता । तारामती हरिश्चन्द्रके सत्यव्रतके लिए बिकी न होती, तो हरिश्चन्द्रके सत्यव्रतमें कमी रह जाती । हरिश्चन्द्रको कोई सत्यवादी नहीं कहता और तारामतीको कोई सती नहीं कहता । दमयंती नलके साथ जंगलके दुःख भोगनेमें शामिल न हुई होती, तो उसे भी कोई सती नहीं कहता । उसी तरह अगर तुझे अपनी आबरू बचानी हो, मेरी ब्याही हुई स्त्री कहलाना हो और रखेल माने जानेके कलंकसे मुक्त होना हो, तो तू सरकारसे लड़ और जेल जानेके लिए तैयार हो जा ।"

बा थोड़ी देर तो चुप बैठी रहीं, फिर बोलीं : "तो आपको मुझे जेलमें भेजना है, है न? अब इतना ही बाकी रहा है! जाऊंगी, जेलमें भी जाऊंगी । लेकिन जेलका खाना मुझे अनुकूल आयेगा ?"

बापूजी : "मैं तो तुझसे नहीं कहता कि तू जेलमें जा। अपनी आबरूके खातिर जेल जानेका उत्साह तुझमें हो तो जा । और जेलका खाना अनुकूल न आये तो वहां फलों पर रहना।"

बाने पूछा : "जेलमें सरकार मुझे फल खानेको देगी ?"

बापूने कहा : "फल न दे तब तक तू उपवास करना |"

बा हंसते हंसते बोलीं: "ठीक, यह आपने मुझे अच्छा मरनेका रास्ता बताया! मुझे लगता है कि जेलमें गई, तो मैं जरूर मर जाऊंगी।"

बापू खिलखिला कर बोले: "हां, हां, मैं भी यही चाहता हूं । तू जेलमें जा कर मरेगी, तो मैं जगदंबाकी तरह तुझे पूजूंगा ।"

बाने दृढ़तासे कहा: "अच्छा तब तो मैं जेल जानेको तैयार हूं ।"

बापूजी बाका निश्चय सुनकर बड़े खुश हुए । बादमें बा किसी कामसे बाहर गईं, तो मौका देख कर बापूने रावजी-भाईसे कहा: "बाकी खूबी यही है कि वह मन या बेमनसे मेरी इच्छाका अनुसरण करती है ।"

---

१. गेहूंकी मोटी और कड़ी रोटी ।

९. 'तू तो बहुत बूढ़ी हो गई!'

दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारने हिन्दुस्तानी स्त्रियोंके विवाहको गैर-कानूनी माननेका जो कानून पास किया था, उसके विरुद्ध बापूने सत्याग्रहकी लड़ाई छेड़ी थी। उसमें दूसरी स्त्रियोंके साथ बाको भी पकड़ लिया गया था। पकड़नेके बाद बाको और दूसरी स्त्रियोंको वॉलक्रस्टकी जेलमें रखा गया था। वहां बहनोंको खाने-पीनेकी बड़ी तकलीफ थी । चार-छह दिन बाद सबकी बदली मेरित्सबर्ग जेलमें कर दी गई ।

बदली होनेसे पहले यह खबर आई कि बाको फल नहीं दिये जाते; और बाने तो यह प्रतिज्ञा की थी कि: 'चाहे जैसी तकलीफ उठा कर भी मैं जेलमें फल ही खाऊंगी । अगर जेलवाले फल खानेको नहीं देंगे तो मैं भूखी रहूंगी । इसमें मरनेकी नौबत आई तो मैं मर भी जाऊंगी।'

बाकी इस प्रतिज्ञाकी जेलके अधिकारियोंनें बिलकुल परवाह नहीं की और बासे कहा : "ऐसे नखरे, ऐसे चोचले अगर करने थे, तो आप यहां जेलमें क्यों आईं?"

अब बाके पास दूसरा कोई रास्ता नहीं था । बाने उपवास शुरू कर दिया । एक दिन, दो दिन, तीन दिन बिना खाये हो गये ! अब तो बाके साथ गरजकर बोलनेवाली मेट्रन ढीली पड़ गई। वह बासे कहने लगी : "हमें सबेरे एक बारकी चाय नहीं मिलती उतनेमें तो हमारा सिर चकराने लगता है; तब आप सूख कर कांटा बने हुए इस शरीरसे तीन तीन दिन तक बिना खाये कैसे चला लेती हैं! हम लाचार हैं; हम लोग आपके लिए कुछ नहीं कर सकते । जेलमें मनचाही चीज खानेको नहीं मिलती । कृपा करके जो कुछ भी मिल जाय वही खाकर अपना काम चलाइये ।"

पांचवें दिन सरकार थोड़ी झुकी और बाको फल खानेकी इजाजत मिली । लेकिन फल इतनी कम मात्रामें मिलते थे कि सच कहा जाय तो बाको तीन महीने तक आधा उपवास करके ही रहना पड़ा ।

तीन महीने बाद जब बा जेलसे बाहर आईं तब बिलकुल हाड़-पिंजर बन गई थीं । उन्हें देखनेवाले लोगोंकी आंखोंसे आंसू टपके बिना नहीं रहे ।

उस दिन बापूजी बाको लिवाने जेलके दरवाजे पर आये थे । बाकी इतनी कमजोर तबीयत और हाड़-पिंजर बने हुए शरीरको देख कर बापू भी दुःखभरी आवाजमें बोल उठे: "तू तो बहुत बूढ़ी हो गई!"

१०. बापूकी सेवा फली

दक्षिण अफ्रीकामें बापूजीने जो सत्याग्रह छेड़ा था, उसमें शामिल होकर बा जेलमें गई थीं । लेकिन जेलसे वे बाहर आईं तब उनका शरीर सूख कर कांटे जैसा हो गया था । वे बेहद कमजोर हो गई थीं ।

बाहर आनेके बाद भी बाकी तबीयत सुधरनेके बदले दिनोंदिन ज्यादा बिगड़ने छगी | पेटकी खाना पचानेकी शक्ति मंद पड़ जानेसे उन्हें उलटियां होती थीं और सारे शरीर पर सूजन आ गई थी ।

बापूने घरेलू इलाज तो बाका काफी किया, लेकिन सूजन जड़से मिटी नहीं । थोड़े ही समयमें रोगने फिर पलटा खाया । उनके हाथ और पांव बहुत ही ज्यादा सूज गये । डॉक्टरोंकी काफी दवा की, लेकिन कुछ फरक नहीं पड़ा ।

आखिर बा डॉक्टरोंकी दवासे ऊब गईं । तब बापूने बासे कहा : "अगर मुझ पर तेरा विश्वास हो, तो अब मैं तुझ पर अपना इलाज आजमा कर देखूं ।"

बाने हां भर कर कहा: "आप मुझे जैसा कहेंगे वैसा ही मैं करूंगी ।"

बापूजी : "तुझे उपवास करना होगा और दवाके रूपमें नीमका रस पीना पड़ेगा ।"

बाने यह बात भी मान ली | और उसी दिनसे बापूका इलाज शुरू हो गया ।

चौदह दिन तक बापूने बासे उपवास कराये और उन्हें नीमका रस पिलाया ।

इन दिनों बापूने बाकी जो सेवा-चाकरी की, उसका शब्दोंमें वर्णण करना कठिन है । सवेरे बापू स्वयं ही बाको दातुन-कुल्ला कराते थे । अपने हाथसे कॉफी बना कर पिलाते थे । एनिमा देते थे; पेशाब-पाखानेका बरतन भी साफ करते थे। बाको बापू दिनभर धूपमें सुलाते थे । उनके घरके पास ही एक पेड़ था । बाका शरीर बहुत ही कमजोर हो गया था । छोटे बालककी तरह बाको दोनों हाथोंसे उठाकर बापू बाहर ले आते थे और पेड़के नीचे डाली

हुई खटिया पर सुला देते थे। धूप जैसे जैसे घूमती जाती वैसे वैसे बापू बाकी खटियाको भी घुमाते रहते थे। शामको फिरसे उन्हें उठाकर घरके अंदर ले जाते थे ।

बापूजी बाका सारा काम तो करते थे, लेकिन उन्हें बाका सिर गूंथना नहीं आता था । इसलिए काशीबा[१] रोज बाका सिर गूंथने आती थीं। एक दिन उन्हें आनेमें कुछ देर हुई, इसलिए बापूजी खुद बाके सिरमें कंघी करने लगे। तेल डालकर बालोंकी लटें तो उन्होंने खोल भी डाली थीं । इतनेमें काशीबा आ पहुंचीं। बापूजी बोले: "लो अब तुम करो। मुझे अच्छी तरह चोटी गूंथना नहीं आता।"

बाके सूजे हुए अंगों पर बापू रोज नीमके तेलकी मालिश भी करते थे । इस तरह दिन-रात बापू बाकी सेवामें लगे रहते थे ।

अंतमें बापूकी सेवा फली और इस लम्बी बीमारीसे उठ कर बा चंगी हो गईं ।

---

१. गांधीजीके भतीजे श्री छगनलालभाई गांधीकी पत्नी ।

११. घरमें भी बापूका सत्याग्रह !

दक्षिण अफ्रीकामें बाको रकतस्राव होता था, तब उनका ऑपरेशन किया गया था । लेकिन ऑपरेशनके बाद कुछ ही समय तक खूनका बहना बन्द रहा । बादमें फिर जारी हो गया। खून किसी भी तरह बन्द नहीं होता था । बापूने सिर्फ पानीका इलाज किया, लेकिन उससे कुछ लाभ नहीं हुआ ।

बाको बापूके इलाज पर बहुत श्रद्धा तो नहीं थी, लेकिन उससे घृणा भी नहीं थी । साथ ही, दूसरी कोई दवा करनेका भी उनका आग्रह नहीं था । इसलिए जब दूसरे किन्हीं इलाजोंसे लाभ नहीं हुआ, तो बापूने बाको नमक और दाल छोड़नेके लिए मनाया ।

बापूने अनेक तरहसे बाकी मिन्नतें कीं, अपनी बातको सिद्ध करनेके लिए बापूने अनेक पुस्तकोंमें बताये गये प्रमाण बाको पढ़ सुनाये, लेकिन बाके मुंहसे हां निकला ही नहीं । आखिर बापूकी बातोंसे ऊब कर बाने कह दिया : “दाल और नमक छोड़नेकी बात तो आपसे कोई कहे, तो आप भी नहीं छोड़ेंगे ।”

बापूको यह सुनकर दुःख हुआ; साथ ही आनंद भी हुआ। उन्हें लगा कि बाके प्रति अपना प्रेम जतलानेका यह बड़ा अच्छा मौका है । इस खुशीमें बापूने कहा : “तेरा यह मानना गलत है । मुझे कोई रोग हो और वैद्य दाल-नमक या दूसरी कोई चीज छोड़नेको मुझसे कहे, तो मैं जरूर छोड़ दूं । लेकिन जा, मैंने तो एक बरसके लिए दाल और नमक दोनों छोड़े ! तू छोड़े या न छोड़े, यह अलग बात है ।“

यह सुनकर बा बहुत पछताईं । कहने लगीं : “मुझे माफ करें । आपका स्वभाव जानते हुए भी मेरे मूंहसे ऐसी बात निकल गई ! अब मैं दाल और नमक नहीं खाऊंगी । लेकिन आप अपनी प्रतिज्ञा वापिस के लीजिये | यह तो आप मुझे बहुत भारी सजा दे रहे हैं !”

बापू बोले : “तू दाल और नमक छोड़े, तब तो बड़ी अच्छी बात है। मेरा विश्वास है कि इससे तुझे लाभ ही होगा । लेकिन की हुई प्रतिज्ञा मैं वापिस नहीं ले सकता । मुझे इससे लाभ ही

होगा । मनुष्य चाहे जिस कारणसे संयमका पालन करे, उसे लाभ तो होता ही है । इसलिए तू प्रतिज्ञा छोड़नेका आग्रह मुझसे मत कर । इससे मेरी शक्तिकी भी परीक्षा हो जायगी । ओर तूने ये दो चीजें छोड़नेका जो निश्चय किया है, उस पर डटे रहनेमें तुझे मदद मिलेगी|"

बा बेचारी क्या बोलतीं? "आप बड़े हठीले हैं । किसीका कहना मानते ही नहीं!" इतना कह कर बाने अंजलि भर आंसू गिराये और ज्ञांत हो गईं ।

१२. बापू को बाका डर !

दक्षिण अफ्रीकामें बा जब बहुत बीमार हो गई थीं तबका यह किस्सा है ।

बापू बाके सूजे हुए हाथ-पैरों पर रोज नीमके तेलकी मालिश किया करते थे । एक दिन मालिश करनेके लिए बापूने पीतलकी रकाबीमें तेल निकाला ।

दूसरे दिन उन्होंने बाके लिए कॉफी तैयार की । वे प्याला-रकाबीमें कॉफी डालने ही जा रहे थे कि काशीबा आ पहुंची ।

बापूको किसी चीजकी गंध बहुत ही कम आती थी । इसलिए काशीबाको देखकर बापूने पीतलकी रकाबीमें नीमके तेलकी गंध आती है या नहीं, यह जाननेके लिए उनसे कहा : "जरा सूंघ कर देखो तो, इस रकाबीमें तेलकी गंध आती है या नहीं ?"

काशीबाने रकाबी सूंध कर कहा: "हां, गंध तो आती है।"

यह सुनकर बापू जरा चौंके और बोले : "अगर मैं इसमें बाके लिए कॉफी ले जाता, तो मेरी शामत ही आ गई होती !"

बापूने ये शब्द कुछ ऐसे ढंगसे कहे, मानो वे बासे डरते हों !

१३. बाकी सादगी

बापूजी जब यात्राके लिए निकलते तब उनकी मंडलीमें बाका बिस्तर छोटेसे छोटा रहता था | और बाकी छोटीसी पेटी भी न तो कभी अव्यवस्थित रहती थी और न कभी उसमें चीजें ही ठूंस ठूंस कर भरी जाती थीं । बापूकी मंडलीके दूसरे भाई-बहन भी सजग रह कर इस बातका प्रयत्न करते थे । लेकिन बाकी स्वाभाविक और सुघड़ता भरी सादगीकी बराबरी वे कभी नहीं कर पाते थे ।

बापूजी इस बातकी ओर अपनी मंडलीका ध्यान खींच कर कितनी ही बार कहते थे : “बा सादगीमें हम सबको हरा देती है । इतना थोड़ा सामान और इतनी कम जरूरतें हममें से और किसीकी हैं ? सादगीके लिए मेरा इतना आग्रह होते हुए भी मेरा सामान बाके सामानसे दुगुना है !”

१४. गरीबीका व्रत

बापूजी जब साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) में रहते थे उन दिनों चोर आश्रममें आकर भी चोरी कर जाते थे । चोरोंको बहुत कीमती चीजें तो आश्रममें नहीं मिलती थीं । लेकिन हमारे इस गरीब देशमें थोड़ेसे कपड़े-लत्तों या बरतनोंकी भी गरीब लोग चोरी कर लेते हैं। एक बार तो खुद बाके कमरेमें ही चोरी हो गई! चोर कपड़ोंसे भरी दो पेटियां उठाकर ले गये और सारे कपड़े निकाल कर नजदीकके एक खेतमें दोनों पेटियां फेंक कर चंपत हो गये । चोरीके बारेमें बात चल रही थी, तब बापूने प्रश्न उठाया : " बाके पास दो पेटी भर कर कपड़े ही कहांसे आ सकते हैं? और किसलिए होने चाहिये ? बा रोज बदल बदल कर तो साड़ियां पहनती नहीं ।"

बाने कहा: "रामी और मनु[१] की मां तो भगवानके घर चली गई । लेकिन जब कभी वे मेरे पास आयें तब मुझे दो कपड़े तो उन्हें देने ही चाहिये न? इसी विचारसे कभी कभी भेंटमें मिली हुई साड़ियां और खादी मैंने पेटीमें रख छोड़ी थीं।"

बापूने इसके विरोधमें कहा: "हम कपड़ोंका ऐसा संग्रह कर ही नहीं सकते । इसके सिवा, साड़ियां और खादी निजी भेंटके रूपमें मिलो हों, तो भी पहननेके लिए जरूरी हों उतनी ही अपने पास रखी जा सकती हैं; उनसे ज्यादा जो हों उन्हें तो आश्रमके कार्यालयमें जमा ही करा देना चाहिये ।"

लेकिन बापूको इतनेसे संतोष नहीं हुआ । उन्होंने तो शामकी प्राथनामें भी इस विषय पर बोलते हुए कहा: "हमारे जैसे लोगोंको तो इस तरहका व्यवहार करनेका भी अधिकार नहीं है । लड़कियां हमारे घर आयें तो वे यहां रहें और खायें-पियें; लेकिन जिन्होंने गरीबीका जीवन बितानेका व्रत ले लिया है, वे अपनी लड़कियोंको भी ऐसी भेंटें नहीं दे सकते ।"

उस समयसे बाने कभी दो कपड़े भी इस तरह जमा करके नहीं रखे ।

---

१. बापूजीके सबसे बड़े पुत्र श्री हरिलालभाई गांधीकी पुत्रियां।

१५. बाका महान त्याग

बापू बाके त्यागका अथवा किसी चीजका संग्रह न करनेकी भावनाका बड़ा आदर करते थे । पतिव्रता बाने बापूके मनको समझ लेनेके बाद अपने जीवनमें कितने कितने फेर-बदल कर डाले थे और जीवनकी कितनी बड़ी बड़ी आशाओं और तमन्नाओंका त्याग कर दिया था, इसे बापू भलीभांति जानते थे । लेकिन दूसरोंको इस बातकी कल्पना कैसे हो सकती थी? वे तो जो कुछ अपनी आंखोंसे देखते उसी परसे बाकी परीक्षा करते थे ।

एक बार आश्रममें नये ही नये भरती हुए एक भाई बापूके साथ बातचीत कर रहे थे । बापू मानते थे कि चाय-कॉफी जैसी चीजें पीनेसे स्वास्थ्यको नुकसान होता है । इस बातको ध्यानमें रखकर नये भाईने उनसे पूछा : "बापू, आप हम लोगोंसे तो चाय-क्रॉफो छोड़नेको कहते हैं; तब बा आश्रममें रह कर कॉफी क्यों पीती हैं?"

बापूने तुरन्त उत्तर दिया: "लेकिन बाने कितना छोड़ा है, इसका तुम्हें पता है? उसकी यही एक आदत रह गई है । इसे भी छोड़तेके लिए यदि मैं उससे कहूं, तो मेरे जैसा अत्याचारी दूसरा कौन होगा?"

लेकिन बाने अंत अंतमें कॉफो पीना भी अपने-आप ही छोड़ दिया था ।

१६. गरीबोंकी बा

१९४१ की बात है। बा मरोली आश्रमसे सेवाग्राम आनेवाली थीं । आश्रमके सब लोग उनकी राह देख रहे थे । एक बहन तो खास तौर पर बासे मिलनेके लिए ही आश्रममें रुकी हुई थी।

सवेरेकी गाड़ी आकर चली गई । लेकिन बा नहीं आईं । शामको बम्बईसे एक ट्रेनआनेवाली थी । बाकी राह देखनेवाली उस बहनने बापूसे पूछा: "बापूजी, इस गाड़ीसे तो बा आयेंगी न?"

बापूका जवाब था: "अगर बा पैसेवालोंकी बा होगी तो इस समय आयेगी; और अगर वह गरीबोंकी बा होगी तो सूरत होकर 'ताप्ती वेली' रेलवेसे सवेरे आयेगी ।"

और सचमुच बा शामकी गाड़ीसे न आकर दूसरे दिन सवेरे 'ताप्ती वेली' से ही सेवाग्राम आई!

१७. 'मैं होऊं तो फरक पड़े न ?'

१९३२ में बापूने हरिजनोंके सवाल पर यरवडा जेलमें आमरण उपवास शुरू किया था । उस समय बा साबरमती जेलमें थीं ।

ऐसे समय बापूके पास न रहनेसे बाके मनमें बड़ी घबराहट और चिन्ता बनी रहती थी। बापू तो अपनी धुनमें उपवास शुरू कर देते थे । लेकिन अपने पतिकी जिन्दगीको इस तरह दांव पर लगी देख कर बाके दिलमें भारी उथल-पुथल मच जाती थी । इसी बातका दुखड़ा रोते रोते एक दिन बा जेलमें अपने साथकी बहनोंसे कहने लगीं :

"हम भागवत पढ़ती हैं, रामायणकी और महाभारतकी कथायें पढ़ती हैं; उनमें कहीं भी बापूके जैसे उपवासकी बातें नहीं आतीं । लेकिन बापूकी तो बात ही अलग है । वे ऐसा ही किया करते हैं । अब कया होगा?"

बहनें बाको ढाढ़स बंधाते हुए बोलीं: "बा, सरकार बापूको सारी सुविधायें देगी । आप क्यों चिंन्ता करती हैं?"

इस पर बा बोलीं: " लेकिन बापू कोई सुविधा लें तब न? उनका तो हर बातमें असहयोग चलता है! उनके जैसा आदमी न तो कहीं मैंने देखा, और न कहीं सुना । पुराणोंकी अनेक कथायें मैंने सुनी हैं । लेकिन ऐसा तप तो कहीं भी नहीं देखा ।"

कुछ देर रुककर बा फिर कहने लगीं: "वैसे चिन्ताकी तो कोई बात नहीं है । बापूके पास वहां महादेव है, वल्लभभाई हैं, सरोजिनी देवी भी हैं । लेकिन मैं होऊं तो फरक पड़े न?"

१८. 'यह फिर क्या लगाया ?'

१९३२ में बापूने यरवडा जेलमें हरिजनोंके प्रश्न पर आमरण उपवास शुरू किया था। बा उस समय साबरमती जेलमें कैद थीं। इसलिए उन्हें बापूकी भारी चिन्ता रहती थी। उन्हें सदा यही विचार आया करता कि बापूकी जितनी सेवा-चाकरी मैं कर सकती हूं, उतनी दूसरा कोई नहीं कर सकता। और यह स्वाभाविक भी था। बापूको बा जितना पहचानती थीं, उनकी आदतों और रुचियोंको बा जितना जानती थीं, उतना दूसरा कोई कैसे जान सकता था ?

अंतमें सरकारने बाको साबरमती जेलसे हटा कर यरवडा जेलमें भेज दिया। बापूके पास पहुंचते ही बा उलाहना भरी आंखोंसे बापूकी ओर देखती हुई बोलीं: "यह फिर क्या लगाया?"

बापू खामोश रहे।

बाकी प्रेम, चिन्ता और उलाहनेसे भरी निगाहोंने और बापूके शांत मोनने एक-दूसरेसे न मालूम कितनी बातें कह डालीं।

बादमें बाने बिना कुछ कहे-सुने बापूकी सेवा और सार-संभालका काम अपने हाथमें ले लिया।

१९. संन्यासी बने हुए बा-बापू

१९३७ के दिसंबरमें बापूजी कलकत्तामें बीमार हो गये थे । वहांसे वे सेवाग्राम आये । उनकी बीमारीकी बात सुनकर सारे आश्रमवासी घबरा उठे ।

सेवाग्राममें उन दिनों कड़ाकेकी सरदी पड़ रही थी । बापूजीको बरसोंसे खुलेमें आकाशके नीचे सोनेकी आदत थी । लेकिन इस बार सरदीके कारण खूनका दबाव इतना ज्यादा बढ़ जादा था कि डॉक्टरोंके कहनेसे उन्हें खुलेमें सोना छोड़ देना पड़ा ।

कलकत्ता जानेसे पहले बापूजी सेवाग्राममें एक बड़े कमरेके कोनेमें रहते थे । उसी कमरेमें दूसरे लोग भी रहते थे । उनकी बीमारीकी बात सुतकर मीराबहनने इस खयालसे अपना कमरा खाली कर दिया था कि वहां रहनेसे बापूको एकांत और शांति मिलेगी ।

लेकिन बापूने उस कमरेमें जानेसे इनकार कर दिया और कहा : "मीराने वह कमरा अपने लिए और खादीके कामके लिए बनवाया है । मैं उसमें कैसे रह सकता हुं? मुझसे पूछे बिना यह फेर-बदल क्यों किया गया? मैं तो अपने उस कोनेमें ही रहूंगा ।"

लेकिन धर्मशाला बने हुए उस कमरेमें रातको सोने जैसी जगह ही कहां थी? दूसरे लोग भी तो उसमें सोते थे । अगर बापू उस कमरेमें सोते, तो इन लोगोंको कष्ट होता । और बापू इसे कभी पसंद नहीं करते । लेकिन बापूसे यह बात कहनेकी हिम्मत किसीकी नहीं हो रही थी कि आप मीराबहनके कमरेमें सो जाइये । इतनेमें बा बोल उठीं : "मेरा कमरा तो है न? आप वहीं चलिये ।"

इस पर बापूजी बाके कमरेमें सोने लगे । वह कमरा छोटा था । बापूके साथ उनकी देखभाल करनेके लिए दूसरे दो-तीन आदमी भी वहां सोने लगे । इस कारणसे बाको और रामदासभाईके छोटे लड़के कहानाको बरामदेमें सोना पड़ता था ।

बातें यह सब सहन कर लिया, लेकिन एक बार भी उनके मुंह पर ये शब्द नहीं आये कि: 'बापू भले मेरे कमरेमें सोयें, लेकिन दूसरोंके लिए मैं अपना कमरा क्यों खाली करूँ?'

दूसरे दिन सवेरे नाश्ता करते करते बापू कहने लगे : "यह कमरा मैंने खास तौर पर बाके लिए बनवाया था और अब मैं इसका मालिक बन बैठा हूं । आज तक बाको कभी अलग कमरा मिला ही नहीं । मेरा और बाका जो कुछ भी था, वह शुरूसे ही सबके लिए था । लेकिन बाको इस बुढ़ापेमें थोड़ा एकांत मिले तो ठीक हो, ऐसा सोचकर यह कमरा मैंने बाके लिए बनवाया था । इसे भी बाने केवल अपने ही काममें नहीं लिया । इस कमरेमें बाने अनेक लड़कियोंकी देखभाल की है । लेकिन अगर मैं आ जाऊं तब तो बाको इस कमरेसे पूरी तरह निकल ही जाना पड़े !

"मैं जहां जाता हूं वह स्थान धर्मशाला बन जाता है । यह मुझे अच्छा नहीं लगता । लेकिन मुझे कहना चाहिये कि बाने कभी इसकी शिकायत नहीं की । मुझे जिस चीजकी जरूरत पड़ती है वह मैं बासे ले लेता हूं । चाहे जिसे मैं बाके पास रहनेको भेज देता हूं । और बाने प्रसन्न मनसे मेरी बातको माना है |"

बा उस समय बापूके पास ही बैठी थीं । बापूने हंसकर बासे कहा : "होना भी यही चाहिये न? अगर मियां एक बात कहे और बीबी दूसरी, तो दोनोंका जीवन खट्टा हो जाय । लेकिन हमारे मामलेमें तो मियांने जो कुछ कहा उसे बीबीने हमेशा माना ही है! "

सब लोग जोरसे हंस पड़े ।

२०. बापूकी मददमें

१९२९ में बापूजी बनारस गये थे | उस समय वहांके सनातनी हिन्दुओंमें बापूके खिलाफ विरोधकी आंधी उठ खड़ी हुई थी ।

वहां जो सार्वजनिक सभा रखी गई थी उसमें बा बापूजीके साथ गई नहीं थीं । लेकिन कोई खबर लेकर आया कि सभामें भयंकर उपद्रव हो रहा है । इसलिए बा तुरन्त सभास्थान पर जानेको तैयार हो गई ।

बा, देवदासभाई गांधी, श्री जवाहरलाल नेहरू वगैरा मोटरमें बैठ कर सभामें जानेके लिए निकले । लेकिन रास्तेमें सामनेसे एक उत्पाती टोली आई और उसने मोटरको सभास्थानकी ओर जानेसे रोकनेकी कोशिश की । देवदासभाई और जवाहरलालजी मोटरसे उतर गये । नेहरूजीने चार-छह आदमियोंको पकड़ कर दूर हटा दिया और कुछ देरमें टोली बिखर गई ।

लेकिन रास्तेमें भयंकर भीड़ थी । इसलिए बा और दूसरे लोग भी मोटरसे उतर गये। भीड़की धक्कामुक्कीमें देवदासभाई और जवाहरलालजी बासे अलग पड़ गये ।

इतनेमें खबर मिली कि सभास्थान पर पत्थरबाजी चल रही है | सुतते ही बा दुःखी होकर बोल उठीं : "सभामें पत्थर चल रहे हों और बापू सभामंच पर हों, तब मैं इस तरह बाहर कैसे रह सकती हूं?"

इतना कह कर वे तेजीसे चलने लगीं और बड़ी कठिनाईसे भीड़को चीर कर सभामंच पर बापूके पास जाकर खड़ी हो गईं ।

२१. संकटकी साथिन बा

१९२९ में बापूजी कुछ समय तक हिमालयके कौसानी नामक स्थानमें रहे थे । हिमालयमें रातके समय सरदी और कुहरेका तो कोई पार ही नहीं होता । फिर भी बापूजी अपने नियमके अनुसार रातको खुलेमें ही सोते थे ।

एक रातको बाघका एक बच्चा बापूके बिछौनेके पास आकर लौट गया । बापूकी आव-भगतके लिए नैनीतालसे आये हुए जो कार्यकर्ता वहां रहते थे, उनमें से एकने बाघके बच्चेको बापूके पास आते देखा था ।

दूसरे दिन उसने बापूसे यह बात कही; और सब लोगोंने उनसे खुलेमें न सोकर घरके भीतर सोनेका आग्रह किया ।

कार्यकर्ताकी बात सुनकर बापूजी खूब हंसे, मानो कुछ हुआ ही न हो । और रातको उन्होंने हमेशाकी तरह अपना बिस्तर खुलेमें ही लगवाया!

बा अभी तक रोज भीतर सोती थीं । लेकिन यह बात सुनकर उन्होंने भी अपना बिस्तर बाहर ही लगवाया ।

२२. बुद्ध जैसा तो नहीं हुआ ?

एक रातको साबरमती आश्रममें बापू सोये थे । सामने बरामदेमें बा और एक दूसरी बहन सोयी थीं ।

दो ढाई बजेके आसपास बापू एकाएक उठ बैठे और उन्होंने चलना शुरू कर दिया! बाने यह देख लिया । उन्होंने पासमें सोयी हुई बहनको जगाकर पूछा: "बापूजी इस समय कहां जा रहे होंगे? हम लोग उनके पीछे पीछे जायें ? कहीं बुद्धके जैसी भावना तो उनके मनमें पैदा न हुई हो?"

इसके बाद बा और वह बहन चुपचाप यह देखनेके लिए बापूके पीछे पीछे चलने लगीं कि बापू कहां जाते हैं ।

बापूजी सड़क तक जाकर कुछ ही देरमें लौट पड़े और थोड़ी दूर पर बा और उस बहनको खड़ी देखकर हंसते हंसते कहने लगे: "क्या तुम लोगोंको ऐसा लगा कि मैं आश्रमसे भाग जाऊंगा ?"

बात यह थी कि सड़क पर कोई आदमी बिच्छूके काटनेसे रो रहा था । रोनेकी आवाज सुनकर ही बापूजी सड़क तक गये थे ।

२३. बाके वात्सल्यकी कड़ी कसौटी

बाके मनमें अपने लड़कों, पोतों और सगे-सम्बन्धियोंके लिए ममता और वात्सल्यका होना स्वाभाविक ही था । परन्तु उन्होंने अपना जीवम बापूको और बापूके द्वारा आश्रमको अर्पण कर दिया था । इसलिए आश्रम ही बाका घर बन गया था । लेकिन आश्रम जनताके पैसेसे चलता था। इस कारण बाके सामने यह सवाल खड़ा हुआ कि उनसे मिलनेके लिए आनेवाले या आश्रममें कुछ दिन ठहरनेवाले लड़कों, पोतों या सगे-सम्बन्धियोंका खर्च कौन दे ।

बापू नियमके पालनमें बड़े सावधान रहते थे । इसलिए उन्होंने यह सवाल इस तरह हल किया कि लड़के, पोते या सम्बन्धी आश्रममें आयें, यहां रहें और किसीकी सेवा लें, तो इसका खर्च वे आश्रमको दे दें ।

बाको इस बातसे कितना दुःख हुआ होगा, यह तो किसी मांका हृदय ही समझ सकता है । लेकिन बाने तो बापूकी इच्छाके अनुसार चलनेमें ही अपने जीवनकी सफलता मानी थी। इसलिए यह कठोर नियम भी उन्होंने स्वीकार कर लिया ।

इसके बाद लड़के, पोते वगैरा आश्रममें आते और कुछ दिन रहकर जानेको होते, तब बा भारी मन और धीमी चालसे आश्रमके व्यवस्थापकके पास जाकर कहतीं : “देखो, अब ये लोग जानेवाले हैं । इनके लिए जो कुछ खर्च हुआ हो उसका बिल इन्हें दे देना ।

२४. आश्रमका अनोखा आकर्षण

बा आश्रमका अनोखा आकर्षण थीं । आश्रममें आनेवाले मेहमानोंकी आव-भगत बा ही करती थीं । आनेवाले मेहमान बापूके साथ तो केवल अपने कामकी ही बात करते थे । उनकी दूसरी सारी कठिनाइयां बा दूर कर देती थीं । आनेवालेको बा पहचानती हों या न पहचानती हों, उसकी आव-भगत तो वे अत्यन्त प्रेमसे ही करती थीं । 'कहांसे आये हो ? सीधे यहीं आ रहे हो? खाना खाया या नहीं ? गाड़ीमें बहुत तकलीफ तो नहीं हुई न?' – ऐसी कई छोटी छोटी बातें बा मेहमानसे पूछती थीं और जिसने खाना न खाया हो उसे खाना भी खिलाती थीं ।

आश्रमवासियोंसे भी समय समय पर बा पूछती रहती थीं: "खाना तो तुम्हें पसंद पड़ता है न? देखना, कोई तकलीफ न उठाना । किसी चीजकी जरूरत हो तो मुझसे कहना ।" छोटे बच्चोंको तो बा नाश्ता भी खिलाती थीं । आश्रममें सत्कार या लाड़-प्यार पानेका कोई स्थान यदि हो तो वह बा ही थीं।

बाके सामने आश्रमके नियम बहुत चलते नहीं थे । दीनबन्धु एन्ड्रूजको चायके बिना चल ही नहीं सकता था । लेकिन बापूके पास तो चाय कैसे मिलती? यह चाय उन्हें बुला कर बा पिलाती थीं । बापू बहुत बार बाको उलाहना देते : "बा, तू दीनबन्धुको बुरी आदत लगा रही है ।"

बा उलटे उलाहनेके लहजेमें कहतीं: "अब रहने भी दीजिये ! आप तो बस अपनी ही बात चलाते रहते हैं । सभी लोगों पर इस तरह सिरजोरी नहीं की जा सकती । मुझ पर करें तो चले ।"

बाके ही होनेसे आश्रममें राजाजीको चाय-कॉफी मिलती थी । और जवाहरलालजीको खास स्वादवाली चाय भी बाके ही कारणसे मिलती थी ।

बा राजेन्द्रबाबू, सरदार पटेल, मोतीलालजी नेहरू, मौलाना आजाद आदि सभी नेताओंके लिए आरामका स्थान बनी हुई थीं । बड़े बड़े नेता बापूजीके साथ घंटों चर्चा करके चाहे जितने थक जाते, फिर भी वे बासे मिले बिना नहीं रहते थे।

और बासे मिलनेका हरएकका तरीका भी अलग अलग था । सरदार तो छोटे ऊधमी कहानाको ही खूब चिढ़ाते और उसके साथ तूफान करनेमें ही उन्हें मजा आता था। कहाना भी तेज जवाब देकर उन्हें खूब हंसाता था। मौलाना आजाद गंभीर भावसे बाके पास आकर उनकी तबीयतके समाचार पूछते । जवाहरलालजी मोजमें होते तो कोई क्रांतिकारी बात कह कर बाको चिढ़ानेका प्रयत्न करते और अगर थके हुए होते तो बाको दो हाथ जोड़कर नमस्कार करते ओर चुपचाप चले जाते । लेकिन बाको जवाहरलालजीकी यह खामोशी अच्छी नहीं लगती थी । उस दिन वे बापू पर सवालोंकी झड़ी लगा देती थीं :

"आज जवाहर कुछ उदास क्यों दिखाई देता था ? उसे क्या हुआ था ? आपने उससे कुछ कह तो नहीं दिया न?"

बापू हंसकर जवाब देते : "तू भी जवाहर जैसी ही तरंगी तो नहीं बन गई है? आज तो हमारे बीच कोई मतभेद खड़ा ही नहीं हुआ !"

इस तरह बा हरएक नेताको संभाल रखती थीं और हरएक नेता बाका आदर करता था । बापूके आश्रमको नीरस बननेसे अगर किसीने बचाया हो तो वह बा ही थीं ।

२५. आश्रम-जीवनकी दीक्षा

१९२४ की बात है । सारे दिनका कामकाज निबटानेके बाद फुरसत मिलती तब बा बापूके सिरमें तेल मलनेके लिए उनके पास जाती थीं । कितनी ही बार बापू दिनभरके कामसे इतने थक जाते थे कि बा तेल मलती रहती थीं और बापू सो जाते थे ।

एक रातको बा जरा देरसे आईं और बापूके सिरमें तेल मलने लगीं ।

बापूने धीरेसे पूछा : “बा, आ गई ?”

बाने उत्तर दिया: “जी हां ।“

बापूने पूछा : “आज इतनी देर क्यों हो गई ? रसोई-घरमें बहुत समयसे कुछ खड़खड़ सुनाई दे रही थी । तेरे पास यदि समय न था तो किसी दूसरेसे तेल मलनेको कह देना था।”

बाने जवाब दिया : “सबको खिलाकर मैंने खाया, फिर बरतन साफ किये और रसोई-घर धोया । उसके बाद बम्बई जानेवाले रामदासके लिए रास्तेका खाना और दो-चार दिनका नाश्ता तैयार करने बैठी । इसलिए आनेमें थोड़ी देर हो गई । काम-काजमें मुझे समयका भान ही न रहा । और दूसरा कोई ऐसा मुझे दिखा नहीं, जिसे तेल मलनेका काम सौंप देती।“

बापू: “तुझ पर कामका बहुत बोझ रहता है । यह सब तू कब तक चला सकेगी? मेरे लिए भी नहाने और खाने-पीनेकी व्यवस्था तू ही करती है । मेहमानोंकी आव-भगतकी जिम्मेदारी भी तुझी पर होती है । और मेहमान तो अकसर आते ही रहते हैं । उनका ध्यान रखनेकी जिम्मेदारी आश्रममें किसीको सौंपनेका और तेरे कपड़ोंके लिए सूत कातनेका काम भी तूने अपने सिर पर ही ले रखा है। यह ढेर-सा काम करनेके लिए तू समय कहांसे निकालती है, यही मेरे लिए तो अचरजकी बात है । और इस भारी बोझके होते हुए भी तू रामदासके लिए नाश्ता बना रही थी ! ऐसा कितने दिन चलेगा ? कल रामदास बम्बई जायगा, परसों तुलसी नेपाल जायगा, तीसरे दिन सुरेन्द्र दिल्ली जायगा – इस तरह कोई न

कोई आदमी तो आश्रमसे बाहर जाता ही रहेगा । क्या तू हर आदमीके लिए खाना और नाश्ता बना देगी ?"

बाका उत्तर था: "नहीं | लेकिन रामदास मेरा लड़का है। इसलिए देर करके और आपके सिरमें तेल मलना छोड़ कर भी उसकी पसन्दका खाना मैंने बना दिया । सारे आश्रमवासियोंके लिए उनकी अलग अलग पसंदका खाना या नाश्ता तो मैं कैसे बना सकती हूं ? आप तो महात्मा ठहरे, इसलिए बाहरसे आने-वाले सभी लोग आपके लड़के हैं ! लेकिन मैं अभी महात्मा नहीं बन पाई हूं | फिर भी आप ऐसा न मानें कि आश्रमवासियों पर मेरा प्रेम कम हैं । लेकिन अपने सगे लड़के जैसा तो दूसरोंको मैं कैसे मानूं? आप छोटी छोटी बातोंमें भी मुझ पर हमेशा सख्ती करते आये हैं । क्या मैं अपने लड़केके लिए उसकी पसंदकी खाने-पीनेकी दो चार चीजें भी नहीं बना सकती ?"

बापू बोले : "ठीक, यह सोचने जैसी बात है । लेकिन इस समय हम कहां बैठे हैं?"

बा: "सत्याग्रह आश्रममें ।"

बापू : "हम अपना राजकोटका घर-बार छोड़ कर यहां क्यों बैठे हैं ?"

बाने उत्तर दिया: "देशसेवा करनेके लिए। सब भाई-बहन साथ मिलकर सच्चे रास्ते देशकी सेवा करनेके लिए यहां आये हैं।"

इस पर बापूने पूछा: "जो भाई-बहन दूर दूरसे अपने मांन्बापको छोड़कर हमारे पास आये हैं, वे हमें अपने जन्म देनेवाले मां-बापसे क्या कम मानते हैं?"

बा बोलीं : "जरा भी नहीं । आश्रमके सब लोग हम पर अपने मां-बापसे भी ज्यादा प्रेम रखते हैं । आपके लिए उनके मनमें जो अपार भक्ति है, उसीके कारण तो वे अपने मां-बाप और घर-बारको छोड़ कर यहां रहते हैं । आपसे शिक्षा पाकर वे देशके कोने कोनेमें पहुंचेंगे और वहां लोगोंकी यथाशक्ति सेवा करेंगे |"

बापू : "तो बा, अब तू ही सोच कि हमारा क्या धर्म है? सभी मातायें अपने बालकों पर ज्यादा प्रेम रखें, यह स्वाभाविक है । इसलिए रामदास पर तेरे अधिक प्रेमको मैं समझ सकता हूं

। और अगर हम राजकोटके अपने घरमें होते, तो हमारी समूची जायदाद और संपूर्ण प्रेमके भागीदार रामदास, देवदास वगैरा हमारे लड़के ही होते । वहां तू दूसरोंको अपने लड़कोंके बराबर न मानती तो चल जाता । लेकिन यह आश्रम तो सभी सत्याग्रही सेवकोंका है । इसलिए यहां तो दूसरे लोग जैसे रहें उसी तरह रामदासको भी रहना चाहिये । जो लोग तुझे अपनी मांसे भी ज्यादा मानते हैं, उन्हें तू रामदाससे कम कैसे मान सकती है? इस आश्रम पर आज सारे संसारकी नजर लगी हुई है । इस आश्रमसे दुनिया बड़ी बड़ी आशायें रखती है ।"

बा शांतिसे बापूकी बातें सुनती रहीं । अंतमें बोलीं : "आपकी बात सच है । मेरी नजरमें सब रामदास जैसे ही होने चाहिये ।"

२६. आश्रमकी बहनोंकी ढाल

बापूने साबरमती आश्रममें आहारके नये नये प्रयोग किये थे । आश्रमका एक नियम यह था कि सारे आश्रमवासियोंके लिए एक संयुक्त रसोई-घर हो । दूसरा एक नियम यह था कि जहां तक बने आश्रममें पैदा होनेवाली साग-भाजी ही खानेके काममें ली जाय, बाहरसे कोई साग-भाजी न मंगायी जाय ।

उस समय आश्रमके खेतमें कुम्हड़ा बहुत होता था, इसलिए आश्रमके रसोई-घरमें रोज उसीका साग बनता था । कुम्हड़ेका साग यानी पानीमें उबाले हुए कुम्हड़ेके बड़े बड़े टुकड़े! उबालते समय नमक अन्दर नहीं डाला जाता था । जिसे जरूरत हो वह ऊपरसे नमक ले सकता था ।

श्री मणिबहन[१] को यह साग खानेसे बादीकी शिकायत हो जाती थी और चक्कर आते थे । श्री दुर्गाबहन[२] को भी बादी हो जाती थी और डकारें आया करती थीं । इस तरह आश्रमकी कितनी ही बहनोंको कुम्हड़ेका साग एक या दूसरी तरहसे अनुकूल नहीं आता था । लेकिन बापूके सामने शिकायत करनेकी हिम्मत किसमें थी? इसके सिवा, बापू भी आहारके अपने प्रयोगोंके जोशमें सबको बढ़ावा देते रहते थे । इसलिए संकोचके कारण कोई भी बहन यह बात बापूसे कहती नहीं थी और सब बहनें चुपचाप तकलीफ़ सह लेती थीं।

एक बार श्री मणिबहन परीखने तो कुम्हड़ेके साग पर एक गीत ही रच डाला । बाने वह गीत सुना । वे तुरन्त बहनोंका पक्ष लेकर बापूके पास पहुंचीं और गीतकी बात सुनाकर बोलीं : "आपका कुम्हड़ेका साग खाकर मणिबहनको बादी हो जाती है और चक्कर आते हैं । दुर्गाबहनको डकारें सताती हैं । कुम्हड़ेका साग कभी उबालकर भी बनाया जाता है? उसमें मेथीका बघार लगाना चाहिये, गरम मसाला डालना चाहिये; तभी वह नुकसान नहीं करता । वरना तो वह नुकसान करेगा ही ।"

दूसरे दिन प्रार्थनाके बाद बापूजीनें कहा: "हमारे आश्रममें एक नये कवि पैदा हुए हैं । अब हमें उनकी एक कविता सुननी है ।"

इसके बाद बापूने आग्रह करके श्री मणिबहनसे कुम्हड़े पर लिखा हुआ गीत गवाया ।

गीत पूरा होने पर बापूने हंसते हुए कहा: "अच्छा, तुम लोगोंकी शिकायत मंजूर है । जिन्हें बघार लगाकर और मसाला डालकर यह साग खाना हो, वे बहनें मुझे अपने नाम लिखा दें ।"

बापू मानते थे कि बहनें संकोचके मारे अपने नाम नहीं लिखायेंगी । लेकिन इतनेमें बा खुद बोल उठीं: "इस तरह कोई अपने नाम आपको नहीं देंगी । हम सब बहनें मिल कर खुद ही नाम तय कर लेंगी ।"

बापू : "तो ठीक, ऐसा ही करना । लेकिन देखना किसी बच्चेको इसमें शामिल न करना । बच्चे तो बिना मसालेका ही साग पसंद करते हैं ।"

बाके पास इसका उत्तर भी तैयार ही था: "इस तरह बच्चोंको बहका बहका कर रखना आप अपने पास । लेकिन मैं जानती हूं कि ये सब बच्चे कितने आपके होकर रहनेवाले हैं!"

इसके बाद सारी बहनोंने अपने नाम तय करके लिखवा दिये और बापूसे मसाला खानेकी इजाजत पाई ।

लेकिन बापूजी किसीको सुखसे मसाला खाने दें ऐसे थोड़े ही थे । बहनें सब बापूजीके सामने ही खाने बैठती थीं । इसलिए बापू विनोदमें ताना मारते रहते थे: "क्यों बघार कैसा लगा है? साग बढ़िया मसालेदार बना है न?"

बा बापूसे कुछ कम नहीं थीं। वे भी बापूसे विनोद करतीं : "अब रहने भी दीजिये! आप क्या कुछ कम थे? पहले हर रविवारको मुझसे पूरनपोली और पकौड़ियां बनवा कर चट कर जानेवाले आप ही थे या कोई और?"

यह सुनकर सब कोई जोरसे हंस पड़ते थे।

---

१. स्व० श्री नरहरिभाई परीखकी पत्नी।

२. स्व० श्री महादेवभाई देसाईकी पत्नी।

२७. घीका दिया !

एक बार सेवाग्राममें बापूजीका जन्म-दिवस मनाया गया । शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजी प्रवचन करनेवाले थे । इसलिए आसपासके गांवोंसे भी बहुतसे लोग प्रार्थनामें आये थे ।

बापूजी प्रार्थनामें आये। उनके सामने एक दीया जल रहा था । उसकी ओर बापूजीका ध्यान गया । वे एकटक उस दीयेकी ओर देखते रहे । इतनेमें प्राथना शुरू हुई और बापूजी प्राथनामें लीन हो गये ।

प्राथनाके बाद वे प्रवचन करनेके लिए तैयार हुए । चारों ओर पूरी शांति थी । सब लोग यह जाननेके लिए उतावले हो रहे थे कि अपने जन्म-दिवस पर बापू क्या कहेंगे । लेकिन उन्होंने तो प्रवचन शुरू करनेसे पहले पूछा : “यह दीया कौन लाया है?”

बा उनके पास ही बैठी थीं । उन्होंने कहा: “में लाई हूं |”

बापूने पूछा : “कहांसे लाई?”

बा: “गांवसे । आज आपकी बरसगांठ है इसलिए ।”

कुछ क्षण बापू शांत बैठे रहे । फिर गंभीर होकर बोले: “आज अगर सबसे बुरा कोई काम हुआ हो तो यह कि बाने सकोरा लाकर घीका दीया जलाया है! आज मेरी बरसगांठ है, इसलिए दीया जलाया गया है । अपने आसपासके गांवोंमें रहने-वाले लोगोंका जीवन मैं हर रोज देखता हूं । उन बेचारोंको जुवार-बाजरीकी सूखी रोटी पर चुपड़नेके लिए तेल तक नहीं मिलता और यहां आज मेरे आश्रममें घीका दीया जल रहा है? !”

फिर बाके सामने देखकर बापूने कहा: “इतने बरस मेरे साथ रहनेके बाद भी तूने यही सीखा है? आज मेरी बरस-गांठ है तो क्या हुआ ? आज तो सत्कर्म, अच्छा काम करना चाहिये, पाप नहीं । बेचारे गरीब किसानोंको जो चीज नसीब नहीं होती, उसे हम इस तरह बरबाद कर ही कैसे सकते हैं?”

२८. देखा, बापूजी कैसे हैं ?

एक बार किसी भाईको बापूजीके साथ रहनेका मौका मिला । एक ही दिनके अनुभवसे उन्होंने यह समझ लिया कि बापूजीके साथ रहना कितना कठिन है । बापूजी छोटी छोटी बातोंमें भी खूब सावधानी रखते थे । किसीसे जरा भी गफलत हुई कि बापूजी उसे चेतानेके लिए तैयार ही रहते थे । वे हरएक काममें बड़े चौकस रहते थे । किसी काममें कचाई तो उन्हें जरा भी सहन नहीं होती थी ।

रातमें नौसे दसका समय बापूजीकी मालिशका समय होता था । यह बात उन्होंने अपने साथके उन भाईसे कही । उन्हें बापूजीके काम-काजका तरीका मालूम नहीं था । इसलिए उन्होंने बापूजीसे कहा: "बापूजी, मालिशके लिए हम किसी होशियार आदमीको रखें तो ठीक हो, जिससे यह काम रुके नहीं ।"

बापूने तुरन्त कहा: "नहीं, नहीं, मुझे तो मेरा कोई सम्बन्धी, प्रियजन अथवा मित्र मालिश करे तो ही अच्छा लगता है ।"

वे भाई बोले "बापूजी, मालिश करना मुझे आता तो नहीं । लेकिन आप बतायेंगे उस तरह मैं कर दूंगा ।"

वे भाई बापूजीके बताये अनुसार खूब सावधानीसे मालिश करने लगे । लेकिन बापूजीको उससे संतोष नहीं होता था। वे कहते थे: "बाके सिवा दूसरे किसीको अच्छी तरह, मालिश करना नहीं आता।"

इसके बाद वे भाई एक बार बासे मिले | उस समय उन्होंने मालिशकी बात बासे कही और उनसे पूछा: "बा, आपने इतने साल बापूजीके साथ किस तरह बिताये?"

बा हंसकर बोलीं: "अब तुमने देखा, बापूजी कैसे हैं ? बापूजी तो भाई ऐसे ही हैं! उनके साथ रहना आसान बात नहीं है ।"

२९. 'आप मुझसे डरते हैं ?'

साबरमती आश्रमके रसोई-घरकी जिम्मेदारी बाके हाथमें थी । कितने ही लोगोंके खाने-पीने आदिकी व्यवस्था करने और उसमें मदद करनेका काम बा अपने जिम्मे ले लेती थीं। कई मेहमान रोज बापूसे मिलनेके लिए आते जाते रहते थे । लेकिन बा सबकी आव-भगत और देखरेखका काम बड़ी प्रसन्नतासे और उत्साहसे करती थीं ।

एक बार त्रावणकोरसे आया हुआ एक लड़का बाकी मददमें था । दोपहरका सारा काम निबट जानेके बाद रसोई-घर बंद करके बा थोड़ा आराम करनेके लिए अपने कमरेमें गईं।

बापूजी बड़ी देरसे बाके जानेकी ही राह देख रहे थे । ज्यों ही वे आराम करनेके लिए अपने कमरेमें गईं, त्यों ही बापूजीने उसे लड़केको इशारेसे अपने पास बुलाकर घीमी आवाजमें कहा:

"देख, मेरी बात सुन | अभी कुछ मेहमान आनेवाले हैं। पं० मोतीलाल नेहरू भी आनेवाले हैं । उन सबके लिए खाना तैयार करना है । बा सुबहसे काम करते करते थक गई हैं । इसलिए उन्हें थोड़ा आराम करने दे | बाको अभी मत जगाना । खाना बनातेमें मदद करनेके लिए तू कुसुमको बुला ला। तू और कुसुम दोनों मिलकर सब-कुछ करना । चुल्हा जलाकर और आटा गूंध कर सारी चीजें तैयार रखना । बादमें जरूरत पड़े तो ही बाको जगाना । वरना तुम दोनों ही सारा काम निबटा देना । और देख, बा नाराज हों ऐसा कोई काम तुम लोग न करना । किसी तरहका बिगाड़ मत करना । जो चीज जहांसे निकालो उसे फिर वहीं ठीकसे रख देना | बा अगर मुझ पर गुस्सा न हुईं, तो मैं तुम दोनोंको शाबाशी दूंगा ।"

इसके बाद वह लड़का कुसुमबहनको बुला लाया और दोनों मिल कर चुपचाप खाना बनानेकी तैयारी करने लगे। बा जाग न जायें, इस बातकी उन्होंने खूब सावधानी रखी । साग काट लिया; चूल्हा सुलगा दिया, आटा भी गूंघ डाला । लेकिन इतनेमें एक थाली लड़केके हाथसे अचानक नीचे गिर पड़ी!

थाली गिरनेकी आवाज हुई कि बा जाग उठीं । रसोई-घरमें कहीं बिल्ली तो नहीं घुस गई ? ऐसा मानकर बा रसोई-घरकी ओर गईं तो देखा, वहां खाना बनानेकी तैयारियां जोरोंसे चल रही हैं! बाने ऊंची आवाजमें पूछा : "तुम दोनोंने यह सब कया धांधली मचा रखी है?"

इस पर दीनोंने बाको सारी बात कह सुनाई । बा बोलीं: "लेकिन तुम लोगोंनें मुझे क्यों नहीं जगाया ? क्या मुझसे इतना काम भी नहीं होता?"

त्रावणकोरके लड़केको गुजराती नहीं आती थी । इसलिए उसने अंग्रेजीमें अपनी बात कही, जिसका मतलब था: "बा, ऐसी बात नहीं है । हम सारी तैयारी हो जानेके बाद आपको बुलानेवाले थे ।"

बा अंग्रेजी नहीं जानती थीं, फिर भी उन्होंने टूटी-फूटी अंग्रेजीमें इस मतलबकी बात कही: "लेकिन तू भी तो काम करके थक गया था न? क्या तू ऐसा मानता है कि तू इतना काम कर सकता है और मैं इतना भी नहीं कर सकती?"

इतना बोलकर बा खाना बनानेमें जुट गईं ।

शामको जब सारे मेहमान चले गये तब बा बापूजीके पास गईं और कमर पर हाथ रखकर कड़ा उलाहना देती हुई बोलीं : "मुझे न जगा कर आपने इन बच्चोंको यह काम क्यों सौंपा ? क्या आपको ऐसा लगा कि मैं आलसियोंकी पीर हूं?"

बापूजी तुरंत समझ गये कि बाके गुस्सेसे बचना कठिन है। इसलिए हंसते हंसते बोले : "क्या तु नहीं जानती कि जब तू गुस्सा होती है तब मैं तुझसे डर जाता हुं?"

बापूका यह वाक्य सुनकर बा जोरसे हंस पड़ीं । मानों कह रही हों: "आप? और मुझसे डरते हें!"

३०. 'हमारे लग्नको कितने वर्ष हुए होंगे ?'

सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलनके समय सरकारने बापूको आगाखां महलमें नजरकैद रखा था । उन्हीं दिनोंकी यह बात है । उस समय बा, सरोजिनीदेवी नायडू, डॉ० सुशीला नय्यर, प्यारेलालजी तथा डॉ० गिल्डर भी बापूके साथ थे !

एक रोज डॉ० गिल्डरके नाम पक्के आमोंका एक पारसल आया । डॉक्टर साहबकी २९ वीं लग्न-जयंतीके अवसर पर भेंटके रूपमें वह पारसल भेजा गया था ।

सब लोग प्रसन्न होकर डॉ० गिल्डरको बधाई देने लगे । बात ही बातमें बाने उत्साहमें आकर बापूसे पूछा "हमारे लग्नको कितने वर्ष हुए होंगे?"

यह सुनकर बापू जोरसे हंस पड़े । फिर बाका मजाक करनेके लिए बोले : "देखो, देखो, लगता है कि बाको भी अपनी लग्न-जयंती मनानी है!"

ये शब्द सुनकर सब कोई जोरोंसे हंसने लगे । बाको बापू पर थोड़ा गुस्सा तो जरूर आया, लेकिन उनसे भी हंसे बिना रहा न गया ।

३१. बाकी प्रसादी

श्री गुरुदयाल मल्लिक गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टागोरके शांति-निकेतनमें कई वर्ष तक शिक्षकके रूपमें रहे थे । वे बापूजीके समागममें भी आये थे | समय समय पर वे बापूजीसे मिलने जाया करते थे ।

एक बार मल्लिकजी बापूजीसे मिलने सेवाग्राम गये । दो-एक दिन्त आश्रममें रहकर वे शांतिनिकेतनके लिए रवाना हुए । बापूजी पर्णकुटीके दरवाजे तक उन्हें बिदा करने आये । मल्लिकजी बापूको प्रणाम करके चलने लगे ।

इतनेमें किसीकी पुकार सुनाई पड़ी: 'मल्लिकजी, मल्लिक-जी!' मल्लिकजीने रुककर देखा, तो बा उन्हें बुला रही थीं ।

मल्लिकजी बाके पास पहुंचे और प्रणाम करके बोले: "बा कुछ काम है?"

बाने हंसते हंसते एक छोटीसी पोटली मल्लिकजीको देते हुए कहा: "आप शांतिनिकेतन तो कल शामको पहुंचेंगे न? तब तक रास्तेमें कुछ खानेको तों चाहिये ही । इसीसे मैं आपके लिए यह डबल-रोटी लाई हूं । आपको मालूम होगा कि बापूजीने यहां डबल-रोटीका प्रयोग शुरू किया है । यह डबल-रोटी मैंने खुद बनाई है। कैसी बनी है, यह खानेके बाद पत्र लिखकर मुझे बताना ।"

बाकी प्रसादी लेकर मल्लिकजीने भक्तिभावसे उन्हें प्रणाम किया और स्टेशनकी दिशामें चल पड़े ।

३२. 'यह क्या ढोंग शुरू किया है ?'

सन् १९३२ में बापूने हरिजनोंके प्रश्न पर उपवास प्रारंभ किया, तब बा यरवडा जेलमें उनसे मिलने गईं । पास पहुंचकर बाने बापूको प्रणाम किया ।

बापूके मनमें डर तो था ही कि अभी बाका प्रहार शुरू होता है! इसलिए विनोदके खातिर बापूने बाका हाथ पकड़ कर उन्हें अपनी ओर खींचा, तब बा चिढ़कर बोलीं: "यह क्या ढोंग शुरू किया है?"

बापू : "क्यों, मेरे साथ तुझे मरना है न?"

बाने जवाब दिया: "नहीं, मैं क्यों उपवास करूँ? आप उपवास छोड़ दीजिये । भगवान आपका उपवास छुड़ावे !"

इसके बाद बापू हंसते हुए बासे कहने लगे: "तेरे तो गाल बिलकुल बैठ गये हैं । देख, तू मुझसे भी ज्यादा दुबली दिखाई देती है । इसका मतलब यह हुआ कि भंडारी[१] मुझे अच्छी तरह रखते हैं और अडवानी[२] तुझे अच्छी तरह नहीं रखते ।"

बा भी भंडारीकी ओर देख कर मजाकमें बोलीं : "नहीं, अडवानी तो सिन्धी हैं । पंजाबी लोगोंसे सिन्धी ज्यादा अच्छे होते हैं ।"

बाकी बात सुनकर श्री भंडारी भी मजाकमें शरीक होकर हंसते हंसते बोले: "आप ऐसा कहती हैं! यह तो मेरे साथ अन्याय कहा जायगा ।"

इस तरह देखते ही देखते बापूने वातावरणको हलका बना दिया और खुदको बाके गुस्सेसे बचा लिया!

---

१. जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट : यरवडा जेलके।

२. जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट : साबरमती जेलके।

३३. बा भारी मनसे बिदा हुईं

हरिजनोंके प्रश्न पर सन् १९३२ में बापूने यरवडा जेलमें उपवास किया, उस समय बाको भी उपवास चला तब तक बापूके पास रहनेकी इजाजत सरकारकी ओरसे मिली थी ।

उपवास पूरा होते ही बाका जानेका समय आया । बाके लिए वह कड़ी परीक्षाका समय था । वे यह सोच रही थीं कि बापूका शामका भोजत बना कर मैं चली जाऊंगी । लेकिन बापूने कहा: “बा, अब तू जेलरको न रोक । तुरन्त चली जा, देर न कर ।“

बाने भारी मनसे बापूसे बिदा लेते हुए कहा, “तो लीजिये, मैं जाती हूं ।” ये शब्द बोलते बोलते उनकी आंखें छलछला आईं ।

बापूने बाके गाल पर हलकी-सी चपत लगा कर कहा: “घबराये मत । मेरी चिन्ता करनेकी बात ही नहीं है । इतने दिन मेरे पास रहनेको मिला, यह क्या कम है?” आखिर बा बापूजीके चरणोंमें प्रणाम करके भारी मनसे बिदा हुईं ।

३४. बाका विशाल हृदय

सन् १९३२ में यरवडा जेलमें हरिजनोंके प्रश्न पर किया हुआ बापूका उपवास छूट गया, उसके बाद भी सरकार बाको समय समय पर बापूसे मिलनेके लिए आनेकी इजाजत देती थी ।

लेकिन बाके प्रेमल और सागरके समान विशाल हृदयको यह बात कैसे पसन्द आती? एक दिन उन्होंने कह दिया: "अब मुझे यहां आना बन्द करना है । कितने ही लोग जेलमें पड़े हैं । उनमें से अनेक बीमार होंगे और तरह तरहके कष्ट भोग रहे होंगे । लेकिन उनसे कौन मिल पाता है? मुझे बहुत बार रामदासकी और बापूकी चिन्ता होती है; लेकिन फिर मनमें विचार आता है कि जेलमें पड़े हुए हजारों लड़कोंकी मातायें और हजारों पतियोंकी पत्नियां भी ऐसी ही चिन्ता करती होंगी न? सबकी रक्षा करनेवाला तो वह प्रभु ही है ।

"सरकारने मुझे यहां आनेकी इजाजत दी, उसका लाभ मैंने उठाया । लेकिन अब ज्यादा आना ठीक नहीं । वह मेरा अतिलोभ कहा जायगा ।"

३५. बा पर बापूका प्रेम

यरवडा जेलमें बापूने हरिजनोंके प्रश्न पर १९३२ में उपवास किया, तब सरकारने बाको बापूके पास रहनेकी इजाजत दी थी । उपवास पूरा होनेके बाद भी वे बापूसे मिलने आती रहती थीं ।

उन दिनों बापू बासे अपनी खूब सेवा कराते थे, मानो बहुत समयसे बाके साथ न रहने और उनसे सेवा न ले पानेका पूरा बदला चुका रहे हों!

एक दिन सरदार वल्लभभाईने यह देखकर बापूसे कहा: "अब बाको नींद आ रही है । उन्हें सोने दीजिये ।"

बापूने बासे कहा : "नहीं, मुझे सुलानेके बाद तू सो जाना ।"

तेलकी मालिश भी बापूको बाके हाथकी ही पसंद आती थी ।

एक दिन किसी बहनने बाहरसे लौकीका हलवा बना कर भेजा । उस दिन बाने भी लौकीका हलवा बनाया था । बापूने बाका बनाया हुआ सारा हलवा खा लिया और उस बहनका भेजा हुआ हलवा रहने दिया ।

३६. 'बाकी बहादुरीकी कोई हद नहीं'

बापूने १९३३ में जब यरवडा जेलमें दूसरी बार उपवास किया, तब बाको १५ मिनटके लिए बापूसे मिलनेकी इजाजत सरकारकी ओरसे मिली ।

बाने आकर बापूके चरणोंमें प्रणाम किया । बापू खटिया पर लेटे हुए थे । बाने बापूकी छाती पर अपना सिर रख दिया और हंसते हंसते उलाहनेके स्वरमें बोलीं : “आपने फिर उपवास शुरू कर दिया! जेलर और सुपरिन्टेन्डेन्टने मुझे यहां आनेको कहा तब मैंने सोचा कि इनकार कर दूं । लेकिन इनकार करना ठीक नहीं, ऐसा मान कर मैंने इनकार नहीं किया । नहाकर आपसे मिलनेको तैयार हुई थी कि सुपरिन्टेन्डेन्टने सुनाया: 'आपको गांधीजीके साथ रखनेका हुक्म नहीं आया है, क्योंकि गांधीजी यूरोपियन वार्डमें रहते हैं | लेकिन मैं १५ मिनटके लिए आपको गांधीजीसे मिलने ले जाता हूं ।' मैंने कहा: 'तब मुझे यहां लाना ही नहीं चाहिये था। मैंने कब मांग की कि मुझे बापूके पास ले जाइये ?'”

बाकी बात सुनकर बापूजी बड़े खुश हुए । उनका मौन-दिन था, इसलिए उन्होंने सिर हिलाकर बाकी बातका समर्थन किया ।

बापूने दूसरी बहनोंके कुशल-समाचार पूछे, तब बाने विस्तारसे सारी बहनोंके समाचार सुनाये । उसके बाद बापूसे कहा : “हमें छोड़-देनेका हुक्म आया तब कुछ देरके लिए हमने सोचा कि अहमदाबाद जाकर हम सरकारी कानूनको तोड़ेंगे । अधिकारियोंने हमसे कहा कि रास्तेमें ही आपको पकड़ लिया जायगा । तब मैंने उनसे कहा, 'लीजिये हम लोग यह बैठे हैं; पकड़ना हो तो पकड़ लीजिये ।' कुछ बहनोंको मेरी यह बात पसंद नहीं आई । वे अपने बच्चोंसे मिलनेके लिए तड़प रही थीं । मैंने कहा, 'बहनों, मेरी गलती हुई, पर अब क्या हो सकता है?' ”

ऐसी अनेक बातें बाने बापूको सुनाई । बापूने मुलाकातके अंतमें लिखा: “बा, तू बहादुर बनी रहना । पन्द्रह मिनटके लिए यहां मत आना । अब अधिकारियोंको तुझे ले जाना हो तो भले ही ले जायं । सब बहनोंसे मेरा आशीर्वाद कहना । मेरी रक्षा वह ईश्वर करेगा ।

बा बोलीं : "वह तो करेगा ही । लेकिन आप उपवास जल्दी छोड़ दीजिये ।"

बाके चले जाने पर बापूने अपने साथ रहनेवाले श्री महादेवभाईको लिख कर कहा:

"बाकी बहादुरीकी कोई हद नहीं है ।"

३७. 'इतने घबरा क्यों गये ?'

एक बार बा और बापूजी रोजके नियमके अनुसार घूमने निकले । घूमते घूमते बापूजीको ठोकर लगी और उनके अंगूठेसे खून निकलने लगा ।

खून देखकर बापूजीने बासे कहा : "बा, जल्दी पट्टी लाकर मेरे अंगूठे पर बांध दे ।"

बापूको इतना घबराया हुआ देखकर बाने जरा ताना देकर कहा : "आप तो कहते हैं कि आपको मौतका भी डर नहीं है । तब यह मामूली ठोकर लगनेसे और थोड़ा खून निकल आनेसे आप इतने घबरा क्यों गये ?"

बाकी बात सुनकर बापूजीने कहा: "मेरे इस शरीरके मालिक हिन्दुस्तानके लोग हैं । मेरी लायरवाहीसे अंगूठेके घावमें पानी चला जाय और वह पक जाय, तो सात-आठ दिन तक काम करना मेरे लिए कठिन हो जाय । इससे लोगोंको कितना नुकसान होगा? यह तो लोगोंने हम पर जो विश्वास रखा है, उसको तोड़ देनेकी बात होगी ।

३८. 'बा तो ऐसी ही है'

श्री रामनारायण चौधरी शुरूमें बापूके पास रहनेको साबरमती आश्रममें आये, तब उन्हें दाद हो गई थी । बापू उसका इलाज कर रहे थे । इलाजके दिनोंमें एक बार बापूने उनसे कहा: "तुम अंगूर खाओ । बाके पास जा कर अपने लिए अंगूर ले आओ ।"

श्री चौधरी दो-चार कदम ही आगे बढ़े होंगे कि बापूने वापिस बुलाकर उनसे कहा: " लेकिन देखो, कड़वे अनुभवके लिए तैयार हो कर जाना और लौट कर जो कुछ हुआ हो वह मुझे बताना ।"

चौधरीजीने बाके पास जाकर थोड़े अंगूर मांगे । बा शुरूमें उन्हें पहचानती नहीं थीं । इसलिए अंगूरकी बात सुनकर उनकी भौंहें चढ़ गईं और प्यारेलालजीको बुलाकर उन्होंने कहा: "प्यारेलाल, देखो यह कौन है? बापूके अंगूर मांगने आया है !"

सचमुच बापूने रामनारायणजीको अगर पहलेसे सावधान न कर दिया होता, तो उनका नाजुक स्वभाव बाके इस बरतावको शायद ही बरदाश्त कर पाता । प्यारेलालजी आयें उसके पहले ही चौधरीजीने बासे कहा : "बा, मैं आश्रममें नया ही आया हूं । यहां आकर बीमार पड़ गया हूं । बापूने भेजा इसीलिए इच्छा न होने पर भी मैं आपके पास अंगूर मांगने आया हूं।"

यह सुनकर बाका मन पिघला । उनके चेहरेके भाव बदल गये और वे कोमल स्वरमें बोलीं: "कोई हर्ज नहीं । अंगूर तो मेरे पास बहुत थे । पर बापूजीने बीमारोंको दे दिये । ये थोड़े उनके लिए रखे हैं । तुम्हें अंगूरकी ज्यादा जरूरत होगी, इसीलिए उन्होंने भेजा होगा| लो, तुम ले जाओ ।"

अब रामनारायणजीको पता चला कि वे तो बापूजीके हिस्सेके अंगूर ले जा रहे हैं! इसलिए उन्होंने अंगूर लेनेसे इनकार कर दिया । लेकिन बा क्यों मानने लगीं? उन्होंने चौधरीजीको धीरज बंधाया और आग्रह करके उनके हाथमें अंगूर रख दिये। इसके बाद बड़े प्यारसे

बाने अनेक प्रश्न उनसे पूछे: तुम कहांसे आये हो? अभी तक क्या करते थे? घरमें कौन कौन हैं? आदि । इससे रामनारायणजीका संकोच मिट गया और वे प्रसन्न मनसे बापूके पास गये।

बापूजीने तो यह आशा रखी थी कि वे उदास चेहरा लेकर आयेंगे । लेकिन रामनारायणजी हंसते हंसते बापूके पास गये और सारी बातें उनसे कह सुनाईं ।

उनकी बात सुनकर बापूजी हंसते हुए बोले: "बा तो ऐसी ही है! कोई आदमी मेरे हिस्सेकी चीज ले जा रहा है, ऐसा जब बाको लगता है तब वह नाराज हो जाती है । लेकिन उसका हृदय अथाह समुद्रकी तरह सहानुभूतिसे भरा रहता है । दूसरेके दुःखका पता चलते ही वह पिघल जाता है | फिर तो बा मेरे मोहको भी भूल जाती है!"

३९. 'तेरे लिए भी मैं महात्मा हूं ?'

एक बार बा सेवाग्राममें बीमार हो गईं । वहां बाके लिए एक अलग कुटिया बनाई गई थी । बापू बीमार बाको सुबह-शाम दोनों समय नियमसे देखने जाते थे । लेकिन एक दिन बहुत ज्यादा काम होनेसे वे बाके पास नहीं जा सके ।

दूसरे दिन सुबह बापू बाको देखने गये । उन्होंने बासे पूछा : "कैसी तबीयत है, बा?"

बापू पिछले दिन शामको नहीं आये, इससे बाको थोड़ा बुरा लूग गया था । इसलिए वे जरा गुस्सेमें बोलीं: "आपको मेरी क्या परवाह है? आप तो बड़े आदमी हैं, महात्मा हैं! आपको सारी दुनियाकी चिन्ता रहती है । मेरी चिन्ताके लिए आपके पास समय कैसे रह सकता है?"

बापूने बाके सिर पर हाथ रखा और उनके बालोंमें अंगुलियां डालकर हंसते हंसते कहा: "तेरे लिए भी मैं महात्मा और बड़ा आदसी हूं?"

बापूकी यह बात सुनकर बाका सारा गुस्सा उतर गया ।

४०. 'बाकी आज्ञा माननी ही पड़ेगी !'

बापूने अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघकी स्थापना की, तब उसे व्यवस्थित स्वरूप देनेके लिए वे स्वयं मगनवाड़ी (वर्धा) में रहते थे । उस समय बापूने ऐसा नियम बनाया था कि वहांका सारा काम मगनवाड़ीमें रहनेवाले लोग ही आपसमें बांटकर करें; नौकरोंसे कोई काम न कराया जाय ।

एक दिन बापूजी और श्री जे० सी० कुमारप्पाके हिस्सेमें रसोई-घरके जूठे बरतन मांजनेका काम आया । दोनों ही उस काममें बड़े उत्साहसे जुट गये ।

जब बाको इस बातका पता चला तो वे तुरन्त उस जगह पहुंचीं और बापूको उलाहना देते हुए बोलीं: "अरे, इसके सिवा आपके पास दूसरा कोई धन्धा है या नहीं? आपको बहुतसे जरूरी काम करने हैं । जाकर उन्हें कीजिये न | बरतन मांजनेका काम करनेवाले तो मगनवाड़ीमें बहुतेरे लोग पड़े हैं ।"

लेकिन बाका यह मीठा उलाहना सुननेके बाद भी बापू हंसते हंसते बरतन मांजते ही रहे । यह देखकर बा ज्यादा चिढ़ीं और बापूके हाथसे बरतन छीन कर खुद मांजने बैठ गईं । बापूके मिट्टीसे सने हुए हाथमें केवल नारियलका छिलका ही रह गया!

बापूने हंसते हुए मजाकमें श्री कुमारप्पासे कहा : "कुमारप्पा, तुम सचमुच सुखी आदमी हो, क्योंकि तुम पर राज करनेके लिए तुम्हारी पत्नी नहीं है । लेकिन मुझे तो अपने घरमें शांति बनाये रखनेके लिए बाकी आज्ञा माननी ही पड़ेगी ! इसलिए अगर तुम्हारे काममें साथ देनेके लिए मैं बाको यहां छोड़ जाऊं तो मुझे क्षमा करना ।"

इतना कहकर हाथ-पांव धोनेके बाद बापू अपने कमरेकी ओर गये और बा कुमारप्पाजीके साथ जूठे बरतन मांजने लगीं ।

४१. 'हम दोनोंको भी लड़ा दिया !'

साबरमती आश्रममें एक नियम यह था कि हर आश्रमवासीको एक निश्चित कीमतका ही साबुन काममें लेना चाहिये, उससे ज्यादाका नहीं । लेकिन आश्रमकी बहनोंको साड़ी, चद्दर वगैरा धोनेके लिए उतनी कीमतका साबुन काफी नहीं होता था ।

इस नियमके विरुद्ध शिकायत करनेका अर्थ था बापूके नियमका विरोध करना । लेकिन कम साबुनसे रोज रोज काम कैसे चलाया जाय? - यही प्रश्न बहनोंके सामने था । कोई रास्ता तो निकालना ही चाहिये, ऐसा सोचकर सारी बहनोंने एक अरजी तैयार की और सबने उस पर अपने हस्ताक्षर किये ।

उन्होंने अपनी शिकायतकी बात बाके सामने भी रखी और उनसे अपनी अरजी पर हस्ताक्षर करनेकी बिनती की । बा तो सदा बहनोंका पक्ष लेनेको तैयार ही रहती थीं । बापूके कड़े नियमोंके खिलाफ आन्दोलन करनेमें उन्हें आनंद आता था । इसलिए बाने तुरन्त ही अरजी पर हस्ताक्षर कर दिये । इसके बाद वह अरजी बापूके सामने पेश की गई।

बापूने अरजी पढ़कर देखा कि उस पर किन किन बहनोंके हस्ताक्षर हैं । पढ़ते पढ़ते उन्हें बाके हस्ताक्षर भी दिखाई पड़े ! यह देखकर वापूजीने अरजी करनेमें मुख्य भाग लेनेवाली बहनसे कहा : "तुमने तो हम दोनोंको भी लड़ा दिया!"

अंतमें बापूने बहनोंकी अरजी मंजूर की और सबको ज्यादा साबुन मिलने लगा ।

४२. कड़वा नीम और मीठी मिश्री

बा आश्रमके रसोई-घर पर पूरी नजर रखती थीं और किसीको कोई सूचना देनेकी जरूरत होती तो सूचना भी देती थीं । रसोई-घरमें कोई चीज खुली पड़ी हो, जरूरतसे ज्यादा साग-भाजी या फल बिगड़ने लगे हों, तो बाका ध्यान तुरन्त उस ओर जाता और वे इन सब चीजोंकी व्यवस्था करनेवाली बहनको असावधान न रहनेकी चेतावनी भी सुना देती थीं । बा बहुत ही साफ बात करनेवाली थीं । जिससे कुछ कहना होता उसके मुंह पर ही वे सीधे कह देती थीं। इस कारणसे आश्रममें नये नये आनेवाले लोगोंको बा शुरू शुरूमें जरा कड़वी मालूम होती थीं ।

इसके सिवा, बाको सारी चीजें, कपड़े-लत्ते, बरतन सब-कुछ करीनेसे रखा हुआ और निश्चित स्थान पर ही जमा हुआ देखना पसंद था | जरा भी कोई चीज आड़ी-टेढ़ी रखी हुई देखतीं कि बा ऐसा करनेवालेका ध्यान उसकी गलतीकी ओर खींचतीं और स्वयं ही उस चीजको ठीक स्थान पर रख देती थीं ।

बाकी ऐसी कड़ी निगरानीसे कभी कभी किसीको बुरा भी लग जाता था । ऐसे आदमीको बापू जब कभी असंतोष प्रकट करते हुए पाते तब हंसते हंसते कहते :

“बाके पास अगर थोड़ा कड़वा नीम होगा, तो मीठी मिश्री भी उसके पास खूब है ।”

४३. बाकी सजगता

एक रोज साबरमती आश्रममें दोपहरकी कड़ी धूपमें बाको रसोई-घरकी ओर जाते देखकर डॉ० सुशीलाबहनने पूछा: "बा, इस कड़ी धूपमें आप कहां जा रही हैं?" बाने बताया: "मैं प्यारेलालको खोजने जा रही हूं । उसे बापूके पैरोंमें घी मलना है । बापूके सोनेका समय हो गया है, तो भी प्यारेलाल उनके पास पहुंचा नहीं है!"

सुशीलाबहन : "मुझे कहें तो मैं मालिश कर दूं ।"

बाने कहा: "नहीं, बापूजीकी सेवाका मौका खोना प्यारेलालको अच्छा नहीं लगेगा । वही आकर घी मलेगा । तू उसे खोज ला । लेकिन देखना, वह भोजन कर रहा हो तो मत बुलाना।"

४४. बाने स्वेच्छासे खादी अपनायी

बापूने विदेशी कपड़ेके खिलाफ जो आन्दोलन छेड़ा था, उसीसे अन्तमें खादीका जन्म हुआ था । लेकिन शुरूमें जो खादी बनती थी, उसकी तो बात ही न पूछिये । लम्बे अरजकी खादी तो उन दिनों बनती ही नहीं थी । ३७ इंच अरजवाली खादी भी मुश्किलसे बुनी जाती थी । और अगर खादीकी धोती या साड़ी किसीको पहननी हो तब तो छह या आठ नंबरके असमान सूतकी छोटे अरजवाली खादीको बीचसे जोड़कर हो पहनी जा सकती थी । जोड़ी हुई ऐसी धोती या साड़ीका वजन ढाईसे तीन पौंड तक हो जाता था ।

लेकिन बापू तो सभी लोगोंसे चरखा चलाने और खादी पहननेका आग्रह करने लगे । बहनोंके लिए ऐसी मोटी और वजनमें भारी साड़ी पहनना कठिन था । इसलिए वे बापूसे कहतीं : "बापू, यह साड़ी तो बहुत भारी रहेगी । हमसे उठायी भी नहीं जा सकती ।

इस पर बापू हंसते हुए कहते: "नौ नौ महीने तक बालकको पेटमें रखनेवाली बहनोंको देशके खातिर, गरीब बहनोंकी आबरूके खातिर, इतनी-सी साड़ी भारी क्यों लगनी चाहिये?"

बापूकी यह दलील सुनकर आश्रमकी बहनें दूसरी दलील जोर-शोरसे उनके सामने रखने लगीं: "बापू, इतनी मोटी साड़ी रोज धोनेमें हम लोगोंको तकलीफ होगी!"

यह सुनकर बापू बहनोंको चुप कर देनेके लिए मजाकमें हंसते हंसते कहते: "तो हम पुरुष तुम्हारी साड़ियां धो दिया करेंगे!"

इस तरह बापू और बहनोंके बीच विनोद चला करता था ।

इन सब दलीलोंमें बहनोंकी अगुवा बा बनती थीं । इसलिए बापू बहुत बार कहते थे: "बाको बूट और मोजे पहनानेमें मुझे उसकी कम खुशामद नहीं करनी पड़ी थी । बादमें उन्हें छुड़ाते समय भी थोड़ी खुशामद तो बाकी करनी ही पड़ी थी । लेकिन अब देखता हूं कि

बूट-मोजे पहनाते समय जितनी खुशामद मुझे बाकी करनी पड़ी थी, उसके बनिस्बत खादीकी साड़ी पहनानेमें ज्यादा खुशामद करनी पड़ेगी!"

लेकिन कुछ समय बाद दूसरी बहनोंके साथ बाने भी स्वेच्छासे खादी अपना ली ।

४५. बाका खादीप्रेम

शुरू शुरूमें बाको खादी पहननेमें बड़ी कठिनाई मालूम होती थी । लेकिन बापूकी इच्छाको उन्होंने कभी नहीं टाला । इसलिए जैसे बापूकी अन्य बातोंको उन्होंने मान लिया, वैसे ही खादीके बारेमें भी बापूके आग्रहको उन्होंने स्वीकार कर लिया ।

लेकिन आगे चलकर खादीके लिए बाका प्रेम खूब बढ़ गया । इसका एक किस्सा मशहूर है ।

एक बार बाके पांवकी कानी अंगुलीमें चोट लगनेसे खून निकल आया । बा खादीकी पट्टी बांधने जा रही थीं कि इतनेमें एक बहन मिलके बारीक कपड़ेकी पट्टी ले आई और बोली: "बा, यह बारीक कपड़ा लीजिये । इससे घाव छिलेगा नहीं और पट्टी अच्छी तरह बंध जायगी।"

लेकिन बाने कहा: "नहीं, नहीं, मुझे तो खादीकी ही पट्टी चाहिये । वह खुरदरी होगी तो भी मुझे कष्ट नहीं होगा ।"

४६. 'मेरे बेटे तेरे भी बेटे हुए न ?'

एक समय नागपुरके कुछ हरिजनोंने मध्यप्रदेशके कांग्रेस मंत्रि-मंडलमें किसी हरिजन-मंत्रीको न लेनेके कारण बापूके खिलाफ सत्याग्रह करनेकी घोषणा की ।

उन लोगोंकी योजना यह थी: "पांच पांच हरिजन सेवाग्राम आश्रममें बापूकी कुटीके सामने बैठकर उपवास करेंगे । पांच हरिजनोंकी एक टुकड़ी सेवाग्राम जायेगी और वहां चौबीस घंटे बैठ कर उपवास करेगी । बादमें दूसरी टुकड़ी आ कर उपवास करेगी और पहली टुकड़ी वहांसे चली जायगी | इस तरह टुकड़ियां बदलती रहेंगी ।

बापूने विरोध करनेवाले हरिजनोंका प्रेमसे स्वागत किया और उनके लिए आश्रममें बैठने और रहनेकी सुविधा कर देनेकी भी तैयारी बताई | इसके लिए जगह पसंद करनेका काम बापूने हरिजनों पर ही छोड़ दिया । उन्होंने बाका कमरा पसंद किया ।

बाकी झोंपड़ीमें एक बड़ा कमरा और एक छोटा कमरा था । छोटा कमरा नहाने और कपड़े बदलनेके लिए था। बापूने बाको बुला कर पूछा: "बा, इन हरिजन भाइयोंको तू अपना बड़ा कमरा रहने-बैठनेके लिए देगी न?"

अपने खिलाफ उपवास करनेके लिए आये हुए हरिजनोंको बापू स्वयं ऐसी सुविधा दें और बाको नहानेका कमरा काममें लेना पड़े, यह कैसी अजीब बात थी! बाको यह सब अच्छा नहीं लगा । इसलिए उन्होंने ताना मारते हुए बापूसे कहा:

"आपने तो इन लोगोंको अपने बेटे मान रखा है । तब आप इन्हें अपनी ही झोंपड़ीमें क्यों नहीं बेठाते?"

बापूने हंसते हुए कहा: "हां, ये मेरे बेटे हैं! लेकिन मेरे बेटे तेरे भी तो बेटे हुए न?"

बापूके इन शब्दोंने बाको लाचार बना दिया और हरिजनोंके लिए उन्होंने अपने बड़े कमरेमें रहने-बैठनेकी सुविधा कर दी । बा न केवल उन लोगोंकी धांधली ही सहन कर लेती थीं, बल्कि जरूरत पड़ने पर उनके लिए पानी आदिकी व्यवस्था भी कर देती थीं ।

४७. हरिजनोंकी बा

अपने पुराने संस्कारोंके कारण बाको हरिजनोंकी बा बननेमें थोड़ा समय जरूर लगा था। बापूने भी इस सम्बन्धमें, बाके विचारोंको बदलनेमें बड़े धीरजसे काम लिया था। लेकिन एक बार बाका मन तैयार हो गया, उसके बाद तो हरिजनोंके लिए बाका प्रेम बढ़ता ही गया और वे हरिजनोंकी भी बा बन गईं।

बापूने लक्ष्मी नामकी एक हरिजन लड़कीको अपनी पुत्रीकी तरह अपना लिया था। बाने भी उसे अपनी सगी लड़की मानकर ही उसका पालन-पोषण किया था। उन्होंने लक्ष्मी पर अपनी कितनी ममता उंड़ेली थी, यह डॉ० सुशीलाबहन नय्यरके प्रसंगसे हमें मालूम होता है।

सुशीलाबहन १९३० में जब पहली बार साबरमती आश्रममें आई थीं तब लक्ष्मी वहीं थी।

कुछ दिन आश्रममें रह कर सुशीलाबहन जब घर लौटीं, तो एक बहनने उन्हें ताना मारा: "आश्रममें वह ढेढ़की लड़की तेरी सहेली बनी थी या नहीं?"

सुशीलाबहन जरा सोचमें पड़ गईं। उन्होंने पूछा: "कौन ढेढ़की लड़की?"

वह बहन बोली: "वही जिसे महात्माजीने अपनी पुत्री बना लिया है!"

तब जाकर सुशीलाबहनको पता चला कि बा और बापू जिसे अपनी पुत्रीकी तरह रखते हैं, वह लक्ष्मी बाकी सगी पुत्री नहीं लेकिन हरिजन लड़की है।

साबरमती और सेवाग्राम आश्रममें जो हरिजन काम करते थे, उनके साथ भी बा उदारता और प्रेमका बरताव रखती थीं। आगाखां महलमें बा कैदीके रूपमें रहती थीं, तब भी मणिबाई, खंडूमामा आदि हरिजन सेवकोंको वे बहुत याद किया करती थीं।

जब कभी छुआछूतके बारेमें चर्चा चलती, तब बा गद्गद होकर कहने लगती थीं: "आखिर तो ईश्वरने ही सब मनुष्योंको बनाया है न? फिर कोई आदमी ऊंचा और कोई नीचा किसलिए? यह भावना ही गलत है!"

४८. ब्राह्मणोंके लिए बाकी भावना

पुराने संस्कारोंका असर होनेके कारण ब्राह्मणोंके लिए बाके मनमें विशेष आदर और श्रद्धा रहती थी ।

आगाखां महलमें श्री महादेव देसाईका अवसान हो जानेके बाद बाको लगा करता था: 'यह तो ब्राह्मणकी मृत्यु हुई है! यह बड़ा अपशकुन कहा जायगा ।'

आगाखां महलमें सिपाही बा और बापूका तथा दूसरे लोगोंका काम कर दिया करते थे । एक सिपाही ब्राह्मण था । उसे रसोई-घरका काम दिया गया था। उस पर बा विशेष प्रेम रखती थीं और उसे फल, दूध वगैरा देती थीं । किसी समय उसकी गलती हो जाती, तो भी बा उससे कुछ कहती नहीं थीं । बा हमेशा कहा करती थीं: "यहां दूसरा कोई धर्म तो हमसे पाला नहीं जा सकता । यह बेचारा ब्राह्मणका लड़का है | इसे हम कुछ दे सकें तो अच्छा हो ।"

ब्राह्मण सिपाहीके साथ बाका ऐसा व्यवहार देखकर दूसरे सिपाही उससे जलने लगे। उन्होंने जेलके सुपरिन्टेन्डेन्टसे इसकी शिकायत कर दी । सुपरिन्टेन्डेन्टने बासे कहा: "आप किसी सिपाहीको कुछ दिया न करें ।" लेकिन बा क्यों मानने लगीं? उन्होंने कुछ कहे-सुने बिना ही ब्राह्मण सिपाहीको पहलेकी तरह फल, दूध वगैरा देना जारी रखा । वे कहतीं : "मैं तो अपने हिस्सेमें से उसे देती हूं । इसमें दूसरोंको क्या आपत्ति हो सकती है?"

एक दिन बाने भोली श्रद्धासे ब्राह्मण सिपाहीसे पूछा: "महाराज, तुम तो ब्राह्मण हो । भला बताओ तो, हम लोग घर कब जायंगे?"

सिपाही बेचारा क्या जवाब देता? उसने शरमाते हुए कहा: "पंचांग देखकर बताऊंगा, बा।"

४९. 'दादीमांके नामकी माला जप'

बापूजीके पुत्र श्री रामदासभाईका छोटा लड़का कहाना बाके पास ही रहता था । बा बड़ी सावधानीसे उसका पालन-पोषण करती थीं । बाका मीठा लाड़-प्यार पाकर कहाना अपनी मांको भी भूल गया था । उसके लिए तो अपनी दादीमां ही सब-कुछ थीं ।

१९३८ में बा जब राजकोट सत्याग्रहमें भाग लेने गईं, तब कहानाको संभालना और शांत रखना बापूके लिए लगभग असंभव जैसा हो गया था । पहले तो बापूको आशा थी कि वे स्वयं कहानाको भलीभांति संभाल सकेंगे । लेकिन कहाना तो दिन-रात दादीमांकी ही रट लगाये रहता था ।

आखिर एक दिन बापूने हंसते हंसते कहानासे मजाकमें कहा : "तू दादीमांके नामकी माला जपे, तो दादीमां तेरे सामने आकर खड़ी हो जायंगी । "

कहानाने प्रसन्न होकर कहा: " तो लाओ माला ।"

बापूजीने उसे एक माला दे दी । कहानाने आंखें बंद करके दादीमांके नामका जप शुरू कर दिया ।

कुछ देर बाद कहाना रोता रोता बापूके पास आया और बोला : " दादीमां तो नहीं आईं! "

आखिर बापू हार गये और कहानाको उन्होंने उसकी मांके पास भेज दिया ।

५०. खेलकी शौकीन बा

बाका शरीर बूढ़ा हो गया था, लेकिन कितनी ही बातोंमें उनका मन बालकों जैसा था । 'भारत छोड़ो' आन्दोलनके समयकी अंतिम जेलयात्राके दिनोंमें आगाखां महलमें उनकी तबीयत अच्छी नहीं रहती थी, फिर भी वे थोड़ी थोड़ी पढ़ाई किया करती थीं । साथ ही, उन्हें खेलका भी बड़ा शौक था । सुशीलाबहन नय्यर, मनुबहन गांधी, मीराबहन, प्यारेलालजी, डॉ० गिल्डर आदि बैडमिन्टन खेलते, उस समय कुरसी पर बैठे बैठे उनका खेल देखनेमें बाको बड़ा आनंद आता था; और खेलमें कोई चालाकी करता या नियमको तोड़ता, तब बा उसे धमकाती भी थीं।

एक बार तो बापूजी और बा भी खेलमें शरीक हुए! बापूजीने पिगपोंगका बल्ला हाथमें लेकर सामने खड़ी बासे कहा: "देखना तो सही, ए . . . अभी धड़ाका करता हुं!" ऐसा कहकर बापूने अपने बल्लेसे छोटीसी गेंदको मारा । लेकिन बा उसे सामनेसे लौटा न सकीं । इंस पर सभी लोग जोरसे हंस पड़े ।

रातमें मीराबहन, डॉ० गिल्डर वगैरा कैरम खेला करते थे । बा केरमका खेल देखने भी जाती थीं। धीरे धीरे बाने भी कैरम खेलना शुरू किया । इस खेलमें उन्हें इतना रस आने लगा कि वे रोज दोपहरको आधा घंटा कैरम खेलनेका अभ्यास करने लगीं । मीराबहन कैरमकी सबसे होशियार खिलाड़ी थीं । बा हमेशा उन्हींके साथ खेलती थीं । इसलिए हमेशा बाकी जीत होती थी और इस जीतसे वे खुश हो जाती थीं । कभी अचानक हार हो जाती, तो बा उदास भी हो जाती थीं । यह देखकर सबने आपसमें तय कर लिया था कि चाहे जो हो, लेकिन अंतमें तो बाको जिताया ही जाय ।

कैरममें रानी लेनेका बाको बड़ा शौक था । और रानी मिल जाने पर हार भी हो जाय, तो बा उसे अपनी हार नहीं मानती थीं ।

कैरमके खेलमें बा इतनी रम जाती थीं कि अपनी बीमारी और दूसरे सारे दुखोंको वे भूल जाती थीं । आखिरी बीमारीके समय जब बामें कैरम खेलनेकी ताकत नहीं रही, तब वे दूसरोंसे अपने पलंगके पास करम बोर्ड रख कर खेलनेको कहती थीं । लेटे लेटे वह खेल देखना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। अवसानसे दो-तीन दिन पहले भी बिस्तर पर पड़े पड़े बाने कैरमका खेल बड़े रसके साथ देखा था । कैरममें मीराबहन हमेशा बाके साथ खेलती थीं, इसलिए मीराबहनकी जीतको बा अपनी जीत मानती थीं और मीराबहनकी हारको अपनी ही हार मानती थीं ।

बा पिगपोंग भी खेलती थीं। लेकिन अंतिम दिनोंमें खेलते खेलते बा हांफने लग जाती थीं, इसलिए पिंगपोंग खेलना बंद कर दिया था ।

५१. 'हम सब साथ ही जायंगी'

१९३१ में बा एक बार वेड़छी आश्रम गई थीं। आश्रमके व्यवस्थापकने सोचा कि बा खटिया पर आराम करेंगी और सभाका समय होने पर सभामें आ जायेंगी। इसलिए उन्होंने बाके लिए एक खटिया बिछाकर तैयार रखी थी।

बा आईं तब उन भाईने कहा: "बा, आप खटिया पर बैठ कर आराम कीजिये।

लेकिन बाने इनकार कर दिया। वे तो सीधी रसोई-घरमें गईं और वहां रसोईके काममें हाथ बंटाने लगीं।

यह देखकर व्यवस्थापककी पत्नी जरा घबराई। उसे लगा कि बा जैसी बड़ी और पूज्य महिला हमें रसोईमें मदद करें यह ठीक नहीं। इसलिए उसने बासे बिनती की: "बा, आप रहने दीजिये। हम लोग अभी सब काम निबटा देंगी।"

लेकिन बा क्यों उठने लगीं? उन्होंने सरल भावसे कहा: "मैं हाथ बंटाऊंगी तो काम और जल्दी होगा। हम सब मिलकर देखते देखते रसोई बना डालेंगी और फिर सभामें सब साथ ही जायंगी।"

और, बाने सचमुच ऐसा ही किया।

५२. वात्सल्यमयी बा

आश्रमके एक या दूसरे काममें मदद करनेके लिए बा सदा हाजिर ही रहती थीं । बाने आश्रमको ही अपना घर बना लिया था । आश्रमके सब निवासियोंकों बा अपने बच्चोंके समान ही मानती थीं । इसलिए घरमें मां जिस प्रकार अपने बालकोंकी सुख-सुविधाका हमेशा ध्यान रखती है, उसी प्रकार आश्रममें बा भी सब आश्रमवासियोंकी सुख-सुविधाका ध्यान रखती थीं ।

किसी दिन सुबह या शामको रसोई बनानेके समय कोई सभा रखी गई हो या आश्रममें आये हुए किसी मेहमानके साथ आश्रमवासियोंका वार्तालाप हो या दूसरा कोई कार्यक्रम रखा गया हो, तो रसोई-घरमें काम करनेवालोंसे बा कहतीं : "तुम सब लोग जाओ । तुम उमरमें मुझसे छोटे हो । तुममें देखने-सुनने और घूमनेका अधिक उत्साह और उमंग है । तुम जाओ । रसोई-घरका काम मैं कर लूंगी ।"

५३. स्वयंसेविका बा

सन् १९२८ की वात है ! साबरमती आश्रमकी जमीनसे थोड़ी दूरकी वीरान जगहमें एक बंगला खड़ा था। वहां चर्मालयका प्रयोग शुरू किया गया था | इसलिए आश्रमके एक भाई कुछ मजदूरोंके साथ उस बंगलेमें रहने गये थे ।

एक दिन सुबह आश्रममें यह समाचार आया कि डाकुओंकी एक टोलीने वहां रहनेवाले लोगोंको मार-पीट कर बंगलेका सारा सामान लूट लिया है ।

बेचारे गरीब मजदूरोंके पास कोई रुपया-पैसा या माल-सामान तो भला कया होता? लेकिन इस घटनासे सब लोग डर गये और आश्रमके उस बंगलेमें रहकर काम करनेसे उन्होंने इनकार कर दिया ।

इस पर बापूने यह घोषणा कर दी कि अब हम मजदूरोंके बिना ही काम चलायेंगे और शामकी प्रार्थनाके समय बापूने सबसे कह भी दिया कि कलसे हमीं सबको गोशालामें काम करना होगा ।

दूसरे दिन निश्चित समय पर अन्य आश्रमवासियोंके साथ बा भी गोशालामें पहुंच गईं ।

बाको देखकर गोशालाके व्यवस्थापक बड़े संकोचमें पड़ गये: 'बाको क्या काम दिया जाय?'

बाने उन भाईकी परेशानीको तुरन्त ताड़ लिया । उन्होंने सरलतासे कहा: "तुम मुझे कोई काम क्यों नहीं बताते ? गायोंके लिए क्या ग्वार नहीं दलनी है?"

व्यवस्थापकने संकोचसे कहा : "लेकिन बा, आपको . . .।"

बाने हंसते हुए कहा : "नहीं, नहीं, लाओ मुझे ग्वार दे दो |"

इतना बोलकर बा चक्की पर जा बैठीं और गीत गाते गाते ग्वार दलने लगीं ।

५४. सेवानिष्ठ बा

एक दिन आश्रममें श्री गोशीबहन कैप्टन आईं ।

भोजनके समय सब लोग खानेके लिए बैठे । गोशीबहन बाके नजदीक ही बैठी थीं । भोजन पूरा होने पर हर आदमी अपनी जूठी थाली उठा कर चलने लगा ।

आश्रमका यह रिवाज था कि खाना खा लेनेके बाद हर आदमी अपनी जूठी थाली मांज डाले । गोशीबहनने बरतन कभी मांजे नहीं थे। इसलिए भोजनके बाद वे बड़ी परेशानीमें पड़ गईं कि थाली कैसे मांजें ।

इतनेमें बाका भोजन पूरा हुआ । उन्होंने धीरेसे गोशीबहनकी थाली खींच ली । यह देखकर गोशीबहनकी परेशानी और बढ़ गई । बा जैसी पूज्य महिलासे अपनी जूठी थाली कैसे मंजवाई जाय ?

लेकिन बा उनकी कठिनाईको समझ गई थीं । उन्होंने हंसते हंसते गोशीबहनसे कहा: “बहन, तुमने कभी थाली मांजी नहीं, इसलिए तुमसे यह काम नहीं बनेगा । मुझे तो रोज ही अपनी थाली मांजनी होती है; मुझे इसकी आदत हो गई है । तुम्हारी थाली मेरे लिए ज्यादा नहीं हो जायगी ।”

५५. कर्मयोगी बा

बा हमेशा काममें ही लगी रहती थीं । आलस्यको तो वे जानती ही नहीं थीं । उनकी काम करनेकी लगन और शक्तिको देख कर नौजवान भी शरमा जाते थे । कभी वे रसोई-घरका काम करतीं, कभी साग काटतीं, कभी चरखा चलातीं, तो कभी बापूकी सेवामें लीन रहतीं । इस तरह उनका एकके बाद दूसरा काम चला ही करता था ।

जीवनके आखिरी पांच-छह बरसोंमें बाकी तबीयत अच्छी नहीं रहती थी | उनके लिए पाखानेकी अलग व्यवस्था कर देनेका बापू और दूसरे लोगोंका बड़ा आग्रह था । लेकिन बा तो धूप हो, ठंड हो या बरसात हो, हमेशा सबके लिए बने हुए पाखानेमें ही जाती थीं । रातमें पेशाबका बरतन भी स्वयं ही साफ करके ले आती थीं ।

बाके कमरेमें उनके साथ दो तीन लड़कियां तो सदा रहती ही थीं। लेकिन बा अपना कोई भी काम उनसे नहीं कराती थीं । इतना ही नहीं, लेकिन अगर किसी लड़कीको कमरेकी झाड़ू लगानेमें देर हो जाती, तो बा स्वयं झाड़ू लगाना शुरू कर देती थीं । सवेरे उठकर दातुन-कुल्लीका गरम पानी भी खुद जाकर रसोई-घरसे ले आती थीं और अपनी दातुन भी हाथसे ही कूट लेती थीं ।

बाकी कमजोर हालतको देख कर बापू बहुत बार उनसे कहते थे: “बा तेरी इतनी सारी लड़कियां हैं, फिर भी तू किसलिए दौड़धूप करती है? ” लेकिन बा कोई उत्तर नहीं देती थीं।

कभी तबीयत बहुत ही खराब हो जाती तब जो काम अपने हाथसे न हो सके वैसा ही काम बा किसीको सौंपती थीं । परन्तु तबीयत थोड़ी ठीक होते ही वे फिर अपना काम हाथसे करने लग जाती थीं ।

५६. आचरण द्वारा शिक्षा

बा तो आश्रमको ही अपना घर और आश्रमवासियोंको ही अपने कुटुंबी-जन समझती थीं। इसलिए बहुत बार दूसरोंके लिए बाको खटना भी पड़ता था। लेकिन बाका मांके समान ममतालु हृदय इसमें सुख और आनन्दका अनुभव करता था। बहुत बार तो बा मांकी तरह अपने आचरण द्वारा ही आसपासके लोगोंकों सीख देती थीं।

एक बार सेवाग्राममें एक लड़की बीमार पड़ी। उसकी सेवा-चाकरीके लिए एक बहन रखी गई थी। वह बीमारका कमोड वगैरा साफ करती थी और उसे दवा भी पिलाती थी।

एक दिन वह बहन बीमारका कमोड साफ करना भूल गई। शाम तक भी वह साफ नहीं हुआ।

शामको कामकाजसे निबट कर बा उस बीमार लड़कीके हाल-चाल पूछने गईं | बीमारकी सार-संभाल अच्छी तरह होती है या नहीं, सफाईका ध्यान रखा जाता है या नहीं – इसकी बाने स्वयं ही जांच कर ली। अंतमें बाने उसका कमोड देखा। कमोड गंदा ही पड़ा था। इस पर बा चुपचाप कमोडको बाहर ले गईं और साफ करके ले आईं !

५७. बाकी सुक्ष्म दृष्टि

१९४२ में बापूजी, बा, महादेवभाई देसाई आदि आगाखां महलमें कैद थे । वहां १५ अगस्त, १९४२ को महादेवभाईका अवसान हो गया था । जेलमें बाकी तबीयत भी खराब ही रहती थी। फिर भी महादेवभाईकी पुण्यतिथिके दिन बाने कैदियोंको जिमानेका निश्चय किया ।

भोजनमें खिचड़ी, कड़ी, साग और हलवा तथा पकोड़ियां बनाई गई थीं । रसोई तैयार हो जाने पर तीन कैदियोंको भोजन करने बैठाया गया ।

तबीयत कमजोर होने पर भी बा एक कुरसी पर इन ब्राह्मण-रूप कैदियोंको भोजन कराने बैठीं ।

सबसे पहले हर कैदीकी जस्तेकी चमकती तसलियोंमें बापूने कांपते हुए हाथोंसे हलवा परोसना शुरू किया । दूसरी चीजें डॉ० गिल्डर, मीराबहन, प्यारेलालजी, सुशीलाबहन और मनुबहन बारी बारीसे परोसने लगे ।

मनुबहन पकौड़ियां परोस रही थीं । बाका ध्यान बिलकुल सिरे पर बैठे हुए एक कैदीकी ओर गया, जिसे मनुबहन पकौड़ियां परोसना भूल गई थीं । बाने तुरन्त उन्हें टोक कर कहा: “देख मनु, उस आखिरी कैदीको तूने पकौड़ियां नहीं परोसीं । उसे छोड़ कर तू यहां कैसे परोसने लगी? परोसना भी नहीं आता! कौन रह गया है, इसका ध्यान तो तुझे रखना चाहिये न?”

५८. सबकी बा

अपने अवसानसे दो-तीन दिन पहले बाने अरंडीका तेल पीनेके लिए मांगा था | उस समय वे आगाखां महलमें बापूके साथ कैद थीं । डॉ० गिल्डरने नम्रभावसे बाको समझाया: "बा, अरंडीका तेल आपको नहीं लेना चाहिये, क्योंकि उससे आपकी कमजोरी बढ़ेगी ।"

बा बोलीं: "भले कमजोरी बढ़े, मुझे तो अब श्मशानमें ही जाना है न?"

डॉक्टर: "ऐसा क्यों बोलती हैं, बा? अभी तो आपके लड़के आनेवाले हैं । आज देवदास आयेंगे, रामदास भी आयेंगे । इन सबसे मिलता है न?"

बा जरा मुसकराई, लेकित थोड़ी गंभीर होकर कहने लगीं: "उन्हें क्यों बुलाते हैं? आप सब मेरे लड़के ही हैं न ? मर जाऊं तो सब मिलकर जला आना ।"

५९. बाकी सावधानी

यह उस समयकी बात है जब डॉ० सुशीलाबहन नय्यर १९३७ में बापूके पास रहनेके लिए सेवाग्राम आई थीं ।

एक बार सुशीलाबहनने बाकी छोटीसी पेटीमें से कोई चीज निकाली । उस पेटीको बन्द करनेका एक नकूचा बिगड़ा हुआ था । इसलिए सुशीलाबहनने एक ओरका नकूचा बंद कर दिया और दूसरी ओरका खुला ही रहने दिया ।

बाने यह देखा । इसलिए वे स्वयं उठकर वह नकूचा बन्द कर आईं।

दूसरी बार जब उस पेटीमें से कोई चीज निकालनेका मौका आया, तब बाने सुशीलाबहनसे कहा: "पेटी यहां ले आ । मैं उसे बंद कर दूं ।"

सुशीलाबहन : "में बंद कर देती हूं ।"

बाने आंखोंमें विनोदका भाव लाकर कहा: "भूल जायगी तो ?"

६०. बाकी सहृदयता

१९४२ में सुशीलाबहन बापूजी, बा आदिके साथ आगाखां महलमें कैद थीं । उस समय एक दिन उन्हें यह खबर मिली कि उनकी भाभी सात दिनकी छोटीसी बच्चीको छोड़ कर चल बसी हैं । सुशीलाबहनकी माताजी तथा बड़े भाईने सरकारसे बिनती की थी कि वह सुशीलाबहनको पैरोल पर छोड़ दे, लेकिन सरकारने ऐसा करनेसे इनकार कर दिया था । इस बातका पता चलते ही बाका कोमल हृदय रो पड़ा । उस समय सुशीलाबहन पर बाकी सेवाका भार था, फिर भी बाने बापूके पास जाकर कहा : "सुशीलाको अपनी मांके पास जाना ही चाहिये ।"

बापूने पूछा : "सुशीला जायगी तो तेरी सेवा कौन करेगा ?"

वा बोलीं : "मैं जानती हूं कि उसके जानेसे मुझे तकलीफ होगी । लेकिन मैं इतनी स्वार्थी नहीं हूं कि सुशीलाके दुःखका विचार न करूँ ।"

इसके बाद बाने सुशीलाबहनसे कहा: "सुशीला, तुझे माताजी और मोहनलाल[१] को पत्र तो लिखना ही चाहिये |"

सुशीलाबहन धीरेसे बोलीं : "बा, मैं एक बार सरकारको लिख चुकी हूं कि मैं किसीको पत्र नहीं लिखूंगी । अब मैं इन दोनोंको पत्र कैसे लिख सकती हूं ?"

इस पर बा बापूजीके पास जाकर कहने लगीं : "आप सुशीलाको समझाइये कि सरकारको लिख चुकी है तो क्या हुआ । उस समय यह कल्पना थोड़े ही थी कि आगे चलकर ऐसी आफत आनेवाली है। प्यारेलाल और सुशीला दोनोंको अपने घर पत्र लिखना ही चाहिये ।"

इस पर बापूने दोनों भाई-बहनको समझाया: "पत्र न लिखनेकी सलाह तो मैंने ही तुम्हें दी थी न? मुझे लगता है कि विशेष परिस्थितियोंमें पत्र लिखा जा सकता है । माताजी और मोहनलालकी शांतिके लिए तुम दोनोंको पत्र अवश्य लिखना चाहिये ।"

उसी रात प्यारेलालजी और सुशीलाबहनने मां और भाईको पत्र लिखे तभी बाको चैन मिला।

---

१. डॉ० सुशीलाबहन नय्यरके बड़े भाई।

६१. सेवाग्रामके सयाने आदमी

बापूजी अकसर कहा करते थे कि, "जो लोग मेरे और बाके निकट संपर्कमें आये हैं उनमें अधिक संख्या तो ऐसे ही लोगोंकी है, जो मेरी अपेक्षा बा पर अनेक गुनी अधिक श्रद्धा रखते हैं।"

और बापूकी यह बात सच भी थी । इसका एक उदाहरण देखिये ।

एक बार श्री घनश्यामदास बिड़ला श्री नरहरिभाई परीखसे आश्रममें मिलने आये । बातें करते करते बिड़लाजीने विनोदमें नरहरिभाईसे कहा : "आपके आश्रममें थोड़े-बहुत चक्रम (झक्की) तो सभी लोग हैं !"

नरहरिभाईने जरा अचंभेमें आकर बिड़लाजीसे पूछा : "बापू भी ?"

बिड़लाजीने जवाब दिया : "हां, हां, बापू तो सबसे बड़े चक्रम हैं ! साबरमती आश्रमका तो मुझे अनुभव नहीं है । लेकिन सेवाग्राममें एक बा और दूसरी दुर्गाबहनकों छोड़ कर दूसरा कोई सयाना आदमी मुझे दिखाई नहीं पड़ता !"

६२. बाका गुणगान

१९३२ की आजादीकी लड़ाईमें सरकारने बारडोली तालुकेमें बाको गिरफ्तार किया और जेलके 'सी' वर्गमें रख दिया । यह समाचार मिलने पर बापूजीके एक अंग्रेज साथी मि० हेनरी पोलाक बहुत गुस्सा हो गये और उन्होंने "लीडर" पत्रके 'लंडन लेटर' नामक विभागमें इसके खिलाफ काफी कड़ा पत्र लिखा ।

सामान्य रूपसे मि० पोलाक नरम भाषामें ही लिखते थे । लेकिन इस बारका उनका गुस्सा देखकर बापूने सरदार वल्लभभाई और महादेवभाईसे यरवडा जेलमें कहा : "यह तो ठीक फीरोजशाह मेहता जैसा हुआ । उन्होंने दक्षिण अफ्रीकाकी हमारी सत्याग्रहकी लड़ाईकी बिलकुल परवाह नहीं की । लेकिन जब उन्हें बाकी गिरफ्तारीके समाचार मिले, तब वे आग-बबूला हो गये और उन्होंने बम्बईके टाउन-हॉलमें अपना प्रसिद्ध भाषण दिया । पोलाकसे भी बाके साथ किया गया यह अन्याय सहन नहीं हुआ, इसीलिए उन्होंने इतना कड़ा पत्र लिखा है |"

वल्लभभाई कहने लगे: "बाकी स्थितिसे तो किसीको भी दुःख हुए बिना नहीं रहेगा । बा अहिंसाकी मूर्ति हैं । अहिंसाकी ऐसी छाप मैंने दूसरी किसी भी स्त्रीके मुंह पर नहीं देखी । उनकी अपार नम्रता, उनकी सरलता, किसीको भी आश्चर्यमें डाल सकती है।"

बापूने कहा : "सच बात है, वल्लभभाई । लेकिन बाका सबसे बड़ा गुण मैं उसकी हिम्मत और बहादुरीको मानता हूं । वह हठ करती है, गुस्सा करती है, ईर्ष्या करती है; लेकिन यह सब जाननेके बाद दक्षिण अफ्रीकोसे लेकर आज तकके उसके जीवनका विचार करें, तो उसकी बहादुरीका गुण बाकी रहता है |"

६३. स्वाभिमानिनी बा

१९०५ में बापू दक्षिण अफ्रोकामें ट्रान्सवालके जोहानिसबर्ग शहरमें वकालत करते थे । उन दिनों एक बार मि० हेनरी पोलाकके कुछ यूरोपियन मित्रोंने बापूकी ओरसे भोजनका निमंत्रण पानेका प्रयत्न किया और निमंत्रण मिलने पर वे बापूके यहां भोजन करने आये । उन दिनों बापू, पोलाक वगैरा सब एक ही मकानमें कुटुम्बियों जैसे रहते थे ।

बापू इन यूरोपियन मित्रोंको अच्छी तरह पहचानते नहीं थे; और बा तो उन्हें बिलकुल ही नहीं पहचानती थीं । उन मित्रोंने बापूसे उनके घरेलू जीवनके बारेमें सीधे और असभ्यताकी हद तक पहुंचनेवाले सवाल पूछना शुरू क्या । व्यक्तिगत बातोंसे सम्बन्ध रखनेवाले इन सवालोंमें पूछनेवालोंका घमंड और असभ्यता भी दिखलाई पड़ती थी ।

लेकिन बापू शांत और स्वस्थ मनसे उन लोगोंके सवालोंके जवाब दे रहे थे । साथ ही, हिन्दुस्तानी लोग क्या करते हैं और क्या नहीं करते, इस विषयमें यूरोपियनोंकी कुछ मान्यतायें और बातें सुनकर बापू खूब हंसते भी जाते थे ।

लेकिन बा उन लोगोंके इस व्यवहारको सहन न कर सकी । उन्हें गुस्सा आ गया और सब लोगोंने भोजनके कमरेमें प्रवेश किया उसके पहले ही वे ऊपरकी मंजिल पर चली गईं । घरमें मेहमान आये हों और बा इस तरह उठकर चली जायें, यह अच्छा नहीं कहा जा सकता था । इसलिए बापूने किसीको उन्हें बुलानेके लिए भेजा । लेकिन बा नहीं आईं । तब बापू खुद उन्हें बुलाने गये । परन्तु बाने नीचे आनेसे साफ इनकार कर दिया ।

लौटकर बापूने बाकी अनुपस्थितिका कोई कारण देकर बात खतम कर दी और भोजनका कार्यक्रम पूरा हुआ ।

दूसरे दिन श्रीमती पोलाकने जब बासे इस विषयमें पूछा, तो बाने कहा: “ऐसे निकम्मे लोग हमारी व्यक्तिगत बातें जाननेके लिए हमारे यहां आयें और मेरा तथा मेरे घरका मजाक उड़ायें, - to make laugh of me and my home - यह मुझसे तो सहन नहीं हो सकता ! मैं तो ऐसे लोगोंसे कभी न मिलूंगी । बापूको मिलना हो तो भले उनसे मिला करें ।”

६४. 'उन्हें रोज उत्पात ही सूझता है !'

बापूजी १९२२-२४ के बीच यरवडा जेलमें बंद थे, उस समय उन्होंने एक कैदीकी खुराकके लिए जेल- सुपरिन्टेन्डेन्टसे किसी चीजकी मांग की थी । लेकिन उन्होंने बापूकी मांग स्वीकार नहीं की । इससे बापूको बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने सिर्फ दूध पर ही रहनेका निश्चय किया ।

इस तरह चार हफ्ते तक चला । इतने दिनोंमें बापूका वजन १०४ से घट कर ९० पौंड पर आ गया!

एक दिन बा और दूसरे लोग बापूसे जेलमें मिलने गये । उस समय सीढ़ियां चढ़ते चढ़ते बापूके पैर कुछ लड़खड़ाने लगे। बाने बापूकी ऐसी हालत देखकर उनसे इसका कारण पूछा । इच्छा न होने पर भो बापूको सारी बात बाके सामने रखनी पड़ी । इस पर सब लोगोंने मिलकर बापूसे आग्रह किया कि वे दूधका प्रयोग छोड़कर फल खायें । बापूने उनकी बात मान ली ।

सुपरिन्टेन्डेन्ट भी मानो अपना बचाव कर रहे हों इस तरह बासे कहने लगे: "मि० गांधी यह सब जो कर रहे हैं इसमें मेरा कोई दोष नहीं है!"

बा तो बापूके उत्पाती स्वभावको अच्छी तरह जानती थीं। बापू किसी भी समय शांत होकर बैठे हों ऐसा बाने कभी देखा नहीं था । इसलिए बा ऐसे लहजेमें बोलीं, मानो बापूको अच्छी तरह फटकार रही हों: "Yes, yes, I know my husband. He always mischief! — हां, हां, मैं अपने पतिको खूब जानती हूं । उन्हें तो रोज उत्पात ही सूझता है!"

६५. बापू इसीके लायक हैं !

दक्षिण अफ्रीकामें खास तौर पर अंग्रेजीका उपयोग बोलनेमें ज्यादा होता था । बापूके बहुतसे मित्र भी अंग्रेज थे । इसलिए बा भी टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल लेती थीं ।

एक बार मि० पोलाक किसी बात पर बापूसे थोड़े नाराज हो गये । वे घरमें किसीसे बोलते नहीं थे और मुंह फुलाकर रहते थे ।

यह देख कर बाने श्रीमती पोलाकसे पूछा: “What the matter Mr. Polak? What for he cross? – मि० पोलाकको क्या हुआ है? वे इतने चिढ़े हुए क्यों दिखाई देते हैं?

श्रीमती पोलाकने कहा : “बापूसे कुछ नाराज हो गये हैं ।“

इस पर बाने पूछा: “What for he cross Bapu ? What Bapu done? – बापूसे वे क्यों चिढ़े हुए हैं ? बापूने क्या किया है?”

तब श्रीमती पोलाकने सारी बात बाको समझाई ।

बा भी कभी कभी कुछ बातोंमें बापूसे चिढ़ जाती थीं। उन्हें श्रीमती पोलाककी बात सुनकर बड़ा मजा आया । उन्हें लगा कि बापू इसीके लायक हैं! वे हमेशा ऐसा ही करते रहते हैं । इस कारणसे मुझे तो क्या, सभीको उन पर गुस्सा आ जाता है । इसलिए बा खुश होकर बोलीं: “Oh, oh ! – हां, हां, मैं समझ गई !”

६६. अंग्रेजीके ज्ञानका उपयोग

बाको अंग्रेजीका बहुत ज्ञान नहीं था, फिर भी अपने थोड़ेसे ज्ञानसे ही वे अपना काम चला लेती थीं ।

एक बार बापू भोपालके नवाबके मेहमान बने । बाको बापूके लिए थोड़े शहदकी जरूरत थी । इसलिए उन्होंने अपनी सुख-सुविधाओंका खयाल रखनेवाले अधिकारीसे पूछा : "आप हिन्दी जानते हैं?"

बाने हिन्दी शब्दका उपयोग सामान्य हिन्दुस्तानीके अर्थमें किया था । लेकिन एक मुस्लिम रियासतके मुसलमान अधिकारीका हिन्दीसे क्या सम्बन्ध हो सकता है? उसने शुद्ध हिन्दुस्तानीमें बाके प्रश्नका उत्तर दिया: "जी नहीं ।"

बाने दूसरा प्रश्न किया: "अंग्रेजी जानते हैं?"

अधिकारीने उत्तर दिया : "जी हां ।"

तब बाने अंग्रेजीमें समझाया : "Bees, flowers, honey. – मधुमक्खियों द्वारा इकट्ठा किया हुआ फूलोंका शहद ।"

अधिकारी समझ गया और तुरन्त जाकर शहदकी बोतल ले आया!

६७. साठकी आयुमें अंग्रेजीकी पढ़ाई !

१९३० में बा जेलमें थीं तब उन्हें पता चला कि साथकी एक बहन अंग्रेजी जानती है । इसलिए बाने उस बहनसे अंग्रेजी पढ़ना शुरू किया ।

इतने बड़े आदरके स्थान पर बैठी हुई बाको साठ वर्षकी आयुमें भी उस बहनके सामने बैठ कर अंग्रेजी सीखनेमें बेइज्जती या शरम नहीं मालूम हुई । उन्हें तो एक ही बातकी लगन लगी हुई थी: अपने हाथसे अंग्रेजीमें बापूका पता लिखनेकी योग्यता प्राप्त करना ।

अंग्रेजीके 'ए, बी, सी, डी' वगैरा अक्षर सीखनेमें बाने कई दिनों तक खूब मेहनत की, फिर भी वे कभी उकतायीं नहीं । एक ही नाम बीस-पच्चीस बार लिखनेमें उन्हें कभी थकावट नहीं लगी ।

"इस आयुमें आप अंग्रेजी सीखनेमें इतनी मेहनत क्यों उठाती हैं?" इस प्रश्नके उत्तरमें बा हंसते हंसते कहतीं: "अंग्रेजी लिखना आ जाय तो बापूको पत्र लिखते समय उनका पता किसीसे अंग्रेजीमें लिखवाना न पड़े और डाकके ढेरमें से मैं अपना पत्र खुद ही पहचान कर निकाल सकूं ।"

६८. बालकों जैसी सरलता

१९३९ के अरसेमें बापूजी गांधी-सेवा-संघकी सभामें शामिल होनेके लिए कटक गये थे । बा, दुर्गाबहन वगैरा भी सेवाग्रामसे वहां गयी थीं ।

कटक शहरसे जगन्नाथपुरी बहुत पास थी । इसलिए बा, दुर्गाबहन और अन्य कुछ लोग जगन्नाथजीके दर्शनके लिए पुरी गये । बाके मनमें तो देवताओं और देव-मंदिरोंके लिए अपार श्रद्धा और भक्ति थी । इससे बाने और दुर्गाबहनने मंदिरमें जाकर जगन्नाथजीको प्रणाम किया तथा परिक्रमा की । और शामको सब लोग वापिस आये ।

बापूने जब यह सुना कि बा और दुर्गाबहन मंदिरमें जाकर जगन्नाथजीके दर्शन कर आईं, तब उन्हें बड़ा दुःख हुआ । वे बहुत नाराज भी हुए । बापूकी यह द्दढ़ मान्यता थी कि "जिस मंदिरमें हरिजनोंको न जाने दिया जाय, वहां हम जा ही नहीं सकते ।"

शामको घूमनेका समय हुआ तब बापू बाके कंधे पर हाथ रखकर घूमने निकले । घूमते घूमते उन्होंने बासे दर्शनकी बात कही । बाने छोटे बालककी तरह बड़ी सरलतासे अपनी गलती मान ली और बापूसे क्षमा मांगी ।

बापूका सारा गुस्सा उड़ गया। उन्होंने बासे कहा: "इसमें दोष मेरा ही है! मैं तेरा शिक्षक तो बना, लेकिन मैंने तुझे पूरी शिक्षा नहीं दी । फिर तेरा क्या दोष?"

इसके बाद श्री महादेवभाईसे इस बातका उल्लेख करते हुए बापूने कहा: " बाने इतनी सरलतासे मेरे सामने अपनी गलती स्वीकार कर ली कि मैं तो मुग्ध हो गया!"

६९. 'तब तो मैं चलूंगी'

३ मार्च, १९४३ को बापूने आगाखां महलमें उपवास छोड़ा । उसके बाद एक दिन अचानक बा और सुशीलाबहनके बीच सिनेमाकी बात निकली । अखबारमें 'भरत-मिलाप' नामक खेलका वर्णन छपा था । रामायणमें वर्णित भरत-मिलापकी कथा बाको बहुत प्रिय थी ।

सुशीलाबहनने बासे कहा: "बा, आप दिल्ली आयेंगी तब आपको 'भरत-मिलाप' का खेल जरूर बतायेंगे ।"

बाको यह बात बहुत पसंद आई । कुछ क्षणके लिए तो बा भूल ही गईं कि हम सब जेलमें बंद हैं और दिल्ली यहांसे बहुत दूर है । इसलिए बा बोल उठीं: "लेकिन अगर बापूजी न जायं, तो मैं कैसे जा सकती हूं?"

सुशीलाबहन : "लेकिन बा, वह तो धार्मिक खेल है | उसमें रामायणकी कथा आती है । बापू स्वयं भले न जायं, लेकिन आपको जानेसे नहीं रोकेंगे । हम तारा, रामू, मोहन सबको साथ ले जायंगे ।"

देवदासभाईके बालकोंका नाम सुन कर बा मुसकरा उठीं और बोलीं : "तब तो मैं चलूंगी।"

७०. बालक जैसी उत्सुकता

बा जब कोई नई बात पढ़तीं या सुनतीं तो उसके बारेमें दूसरोंको बतानेके लिए बड़ी उत्सुक हो जातो थीं ।

१९४२ की जेलके समय एक दिन बाने पारसियोंका इतिहास पढ़ा । उसी दिन शामको जेलके पारसी सुपरिन्टेन्डेन्ट कटेली साहब बाको देखने आये । उनसे बाने पूछा: "कटेली साहब, आप जानते हैं कि पारसी लोग हिन्दुस्तानमें कैसे आये ?" और उन्होंने पुस्तकमें पढ़ा हुआ सारा इतिहास कटेली साहबको कह सुनाया ।

जेल- सुपरिन्टेन्डेन्ट बड़े सज्जन आदमी थे । बाको देखकर उन्हें अपनी बूढ़ी मांकी याद आ जाती थी । वे पारसियोंके हिन्दुस्तानमें आनेका सारा इतिहास जानते थे । इसके सिवा, बहुत काममें भी थे । फिर भी बाका मन रखनेके लिए उन्होंने बड़ी शांतिसे बैठकर सारी बातें सुनीं ।

७१. बापूजीकी मां !

दक्षिण अफ्रीकामें वहांकी गोरी सरकारके खिलाफ बापूने जो सत्याग्रह किया था, उसमें दूसरी बहनोंके साथ बाने भी भाग लिया था । सरकारने सब बहनोंको पकड़ कर जेलमें डाल दिया था । जेलसे छूटने पर बाकी तबीयत बहुत ज्यादा गिर गई थी ।

वैसी स्थितिमें एक रेलवे स्टेशन पर बाको बापूके साथ खड़ी देख कर बापूके एक परिचित यूरोपियन मित्रनें उनसे पूछा : "मि० गांधी, ये आपकी मां हैं ?"

मित्रकी बात सुनकर बापू जोरसे हंस पड़े | बोले : "नहीं, ये मेरी पत्नी हैं !"

७२. बापूकी दृष्टिमें बा

एक बार बापू लंकाकी यात्रा पर गये थे । बा भी उनके साथ गई थीं । लेकिन वहांके लोगोंने बाको बापूकी माता मान लिया !

बापूका स्वागत करनेवाले सज्जनने भी यही गलती की ! उन्होंने आम सभामें बापूकी माताजीके रूपमें ही बाका परिचय लोगोंको कराया । और बादमें बापूसे पूछा : "आप कस्तूरबाको अपने साथ क्यों नहीं लाये ?"

अपने भाषणके आरंभमें इस बातका उल्लेख करते हुए बापूने कहा : "मेरी पहचान करानेवाले भाईने थोड़ी गलती की है । मेरे साथ मेरी माताजी नहीं, लेकिन मेरी पत्नी आई है। कस्तूरबाको मेरी मां समझनेमें इन भाईका कोई दोष नहीं है । इसे भूल चाहे कहा जाय, लेकिन एक दृष्टिसे तो उनका ऐसा कहना सच ही है; क्योंकि कितने ही वर्षोंसे कस्तूरबाको मैं अपनी पत्नी नहीं मानता | मैं उन्हें अपनी माताके रूपमें ही देखता आया हूं । हम दोनों अपनी इच्छासे ही इस निर्णय पर पहुंचे हैं । इसका रहस्य सब स्त्री-पुरुष यदि समझ लेंगे, तो वे जीवनमें सुखी होंगे । मनुष्यका जीवन भोग भोगनेके लिए नहीं है, परन्तु सेवा करनेके लिए है ।"

७३. बाका हृदयद्रावक विलाप

बापूके सबसे बड़े पुत्र श्री हरिलाल गांधी बड़ी आयुमें कुसंगमें पड़ कर बुरे रास्ते लग गये थे और आखिरमें अपना धर्म बदल कर मुसलमान भी हो गये थे ।

बा और बापूको सदा उनकी चिन्ता बनी रहती थो । बापू तो इसकी सजा स्वयं अपनेको ही दे रहे हों इस तरह कहा करते थे: "हरिलालका जन्म उस समय हुआ था जब मैं मोहमें फंसा हुआ था । जिसे मैंने प्रत्येक दृष्टिसे अपना मोहका काल, वेभव-विलासका समय, माना है, उसे हरिलालने देखा है । उस समय उसकी आयु इतनी बड़ी थी कि मेरे उन दिनोंके जीवनका उसे स्मरण रह जाय । इसलिए उस समयके मेरे जीवनके संस्कार हरिलाल पर पड़े हैं ।"

परन्तु बाको हरिलालभाईकी यह दुर्दशा देख कर अपार दुःख होता था। अंतमें जब यह दुःख सहन-शक्तिके बाहर चला गया, तब उन्होंने एक दुःखभरा पत्र हरिलालभाईको लिख कर अपने मातृ-हृदयकी वेदना इन शब्दोंमें प्रकट की:

"चि० हरिलाल, मेरे सुननेमें आया है कि कुछ दिन पहले मद्रासके एक आम रास्ते पर शराबके नशेमें तूफान मचानेके अपराधमें पुलिसने तुझे पकड़ा और दूसरे दिन मजिस्ट्रेटके सामने खड़ा कर दिया । उन्होंने तेरा एक रुपया जुर्माना किया । तुझ पर उन्होंने इतनी दया दिखायी, यह बताता है कि वे बड़े भले आदमी होने चाहिये । तुझे यह नामकी ही सजा देकर मजिस्ट्रेटेने भी तेरे पिताजीके प्रति अपनी सद्भावना बतायी है । लेकिन इस घटनाको विस्तारसे जाननेके बाद मेरा मन बहुत दुःखी रहा करता है। मैं नहीं जानती कि उस रात तू अकेला था या अपने किन्हीं मित्रोंके साथ था। लेकिन तेरा वह बरताव सचमुच ही बहुत बुरा था ।

"मेरी समझमें नहीं आता कि मैं तुझसे क्या कहूं । पिछले कई बरसोंसे मैं तुझसे विनती करती रही हूं कि तू अपने जीवनको संयममें रख । लेकिन तू तो दिनोंदिन ज्यादा बिगड़ता

जा रहा है | अब तो मेरे लिए दुनियामें जीना भी कठिन हो गया है! तू अपने माता-पिताको उनके जीवनके संध्याकालमें कितना दुःख दे रहा है, इसका तो जरा विचार कर ।

"तेरे बापूजी इस विषयमें किसीके सामने एक शब्द भी नहीं बोलते । लेकिन तेरे बरतावसे लगनेवाले आघातोंके कारण उनका हृदय चूर-चूर हो जाता है । हमारी भावनाओंको इस प्रकार बार बार चोट पहुंचा कर तू घोर पाप कर रहा है | हमारे घरमें पुत्रके रूपमें जन्म लेकर तू शत्रुकी तरह बरताव कर रहा है ।

"मैंने सुना है कि पिछले कुछ समयसे तू बापूजीकी बहुत ज्यादा टीका और निन्दा करने लगा है । तेरे जैसे बुद्धिमान पुत्रको यह शोभा नहीं देता । तुझे इसका थोड़ा भी भान नहीं है कि अपने बापूजीकी निन्दा करके तू अपनी ही पोल खोलता है । उनके मनमें तो तेरे लिए प्रेमके सिवा दूसरा कुछ है ही नहीं ।

"तू जानता है कि चरित्रकी शुद्धिको वे बहुत बड़ा महत्त्व देते हैं । लेकिन उनकी इस सलाह पर तूने जरा भी ध्यान नहीं दिया । इसके बावजूद उन्होंने तुझे अपने साथ रखनेकी, तेरे खान-पान और कपड़े-लत्तेकी व्यवस्था करनेकी तथा तेरी सार-संभाल रखनेकी भी इच्छा बताई है । लेकिन तूने इस उपकारको कभी माना ही नहीं है ।

"इस दुनियामें बापूजीके सिर कितनी बड़ी बड़ी जिम्मेदारियां हैं! इससे ज्यादा वे तेरे लिए कुछ नहीं कर सकते । वे सिर्फ अपने इस दुर्भाग्यके लिए दुःखी ही हो सकते हैं । भगवानने उन्हें प्रबल इच्छाशक्ति दी है | उनके जीवनकी आशा पूरी हो सके इसके लिए भगवान उन्हें जितनी चाहिये उतनी लम्बी आयु दे । लेकिन मैं तो एक कमजोर बूढ़ी औरत हूं । तू अपने बरतावसे मेरे मनको जो दुःख देता है, उसे सहन करनेकी शक्ति मुझमें नहीं है ।

"तेरे बापूजीको रोज अनेक लोगोंकी ओरसे ऐसे पत्र मिलते हैं, जिनमें तेरे बरतावकी शिकायत होती है । इस सारी बदनामीका कड़वा जहर उन्हें चुपचाप पी जाना पड़ता है । लेकिन मेरे लिए तो तूने एक भी जगह ऐसी नहीं रहने दी जहां मैं कभी जा सकूं। शरमके मारे न तो मैं मित्रोंमें घूम-फिर सकती हूं, न अनजान लोगोंमें घूम-फिर सकती हूं । तेरे

बापूजी तो सदा तुझे क्षमा ही करते रहते हें । लेकिन भगवान तेरे इस बरतावको सहन नहीं करेगा । वह तुझे क्षमा नहीं करेगा ।

"रोज सवेरे जागती हुं तब मनमें यही चिन्ता लेकर उठती हूं कि अखबारोंमें तेरे किसी और बुरे व्यवहारके समाचार न छपे हों! मैं अकसर सोचा करती हुं: 'तू कहां रहता होगा, कहां खाता होगा, कहां सोता होगा? शायद तू ऐसी चीजें भी खाता होगा, जो तुझे नहीं खानी चाहिये ।'

"ऐसे ऐसे अनेक विचार मनमें उठा करते हैं, जिससे कई रातें मेरी बिना सोये ही बीत जाती हैं । बहुत बार तुझसे मिलनेकी इच्छा होती है । लेकिन मैं जानती ही नहीं कि तू कहां मिल सकता है । तू मेरा पहला लड़का है और तेरी आयु भी अब ५० वर्षकी हो चुकी है। कहीं तू मेरा भी अपमान न कर दे, इस शंकासे तेरे पास आनेमें भी मुझे डर लगता है!

"तूने अपने पूर्वजोंका धर्म क्यों बदल डाला, यह मैं नहीं जानती । यह तेरी निजी बात है । लेकिन मैं सुनती हूं कि तू निर्दोष और भोलेभाले लोगोंको अपने कदमों पर चलनेकी सलाह देता है । तुझे अपनी मर्यादाका भान कब होगा ? धर्मका तुझे आखिर कितना ज्ञान है? तेरे बापूजीके नामके कारण लोग तेरे भुलावेमें आकर गलत रास्ता ले लेंगे । तुझमें धर्मका प्रचार करनेकी योग्यता नहीं है । तू तो पैसेका गुलाम बन गया है । जो लोग तुझे पैसा देते हैं, वे तुझे प्रिय लगते हैं । लेकिन वे पैसे तू शराब पीनेमें बरबाद कर देता है । और उसके बाद मंच पर बैठकर भाषण करता है | तू स्वयं अपनी और अपनी आत्माकी हत्या कर रहा है ।

"तू यदि ऐसा ही बरताव करता रहेगा, तो कुछ समय बाद सभी लोग तुझसे दूर भागेंगे । इसलिए मैं तुझसे प्रार्थना करती हूं कि तू शांत मनसे विचार करके अपनी यह मूर्खता छोड़ दे । तूने अपना घर्म बदल दिया, यह मुझे पसंद नहीं आया था । फिर भी उसके बाद अपने जीवनमें सुधार करनेका तेरा निश्चय जानकर मैंने संतोष माना था। और आगेसे तू समझदारीका जीवन बितायेगा, यह सोचकर मैं भीतर ही भीतर प्रसन्न भी हुई थी । लेकिन मेरी इस आशा पर भी पानी फिर गया है । कुछ ही समय पहले तेरे पुराने मित्रों और तेरा भला चाहनेवालोंने तुझे बम्बईमें पहलेसे ज्यादा बुरी हालतमें देखा था!"

लेकिन मांके हृदयको इतनेसे ही संतोष कैसे होता? अपने पुत्रके ऐसे हीन कृत्योंमें रस लेनेवाले कुछ मुसलमान भाइयोंसे भी अपील करते हुए बाने लिखा:

“आपके कामको तो मैं समझ ही नहीं पाती ! जो लोग मेरे पुत्रके आजकलके कामोंमें सक्रिय भाग ले रहे हैं, उन्हींसे मैं यह बात कहती हूं । मैं जानती हूं और मुझे यह सोचकर आनंद होता है कि समझदार मुस्लिम जनताके बहुत बड़े भागने और हमारे जीवन भरके मुसलमान मित्रोंने इस सारी घटनाकी निन्दा की है । आज उस महापुरुष डॉ० अन्सारीकी बड़ी कमी मालूम हो रही है । आज वे होते तो उन्होंने मेरे पुत्रको और आप लोगोंको भी बड़ी नेक सलाह दी होती । लेकिन आपके समाजमें वैसे दूसरे भी कई खानदानी और ऊंची कोटिके आदमी हैं और मैं आशा करती हूं कि वे आपको सच्ची सलाह जरूर देंगे ।

“अपना धर्म बदल कर सुधरनेके बजाय मेरा लड़का ज्यादा कुटेवोंमें ही फंसा है । आपको उसके बुरे कामोंके लिए उसे फटकारना चाहिये और उसे अच्छे रास्ते पर मोड़ना चाहिये । कुछ लोग तो मेरे लड़केको मौलवीका उपनाम देनेकी हद तक आगे बढ़ गये हैं! क्या यह ठीक है? क्या आपका धर्म एक शराबीको मौलवी कहनेकी आज्ञा देता है? मद्रासमें शराब पीकर तूफान मचानेके बाद भी कुछ मुसलमान स्टेशन पर मेरे लड़केको सम्मानके साथ बिदा करनेके लिए जमा हुए थे !

“इस तरह मेरे लड़केको इतना महत्त्व देनेमें आपको क्या आनन्द आता होगा, यह मेरी समझमें नहीं आता । अगर आप सचमुच उसे अपना सच्चा भाई मानते तो आप ऐसा बरताव नहीं करते, क्योंकि आपका बरताव उसे जरा भी लाभ नहीं पहुंचाता । अगर आपका इरादा दुनियामें हमारी हंसी करानेका ही हो, तब तो मुझे आपसे कुछ नहीं कहना है । आपसे जो भो करते बने आप कर सकते हैं ।

“लेकिन मैं आशा रखती हूं कि एक दुःखी मांकी कमजोर आवाज आप पर प्रभाव डाल सकनेवाले कुछ लोगोंके हृदयको जगायेगी और वे शायद आपको समझा सकेंगे । लेकिन मैं अपने लड़केसे जो कुछ कह रही हूं वही आपसे भी कहना अपना फर्ज समझती हूं: आप लोग जो काम कर रहे हैं, वह खुदाकी नजरमें अच्छा नहीं हो सकता ।”

७४. मां-बेटेका करुण मिलाप

हरिलालभाई बापूसे नाराज रहते थे, लेकिन बाके लिए तो उनके हृदयमें प्रेम ही प्रेम भरा था | बाको भी अपने दूसरे लड़कोंकी अपेक्षा हरिलालभाईकी अधिक चिन्ता रहती थी ।

एक बार हरिलालभाईका और बाका अचानक मिलाप हो गया । उसका दृश्य अतिशय करुणा उपजानेवाला था । बा और बापू रेलकी मुसाफिरी कर रहे थे । जबलपुर मेल जब कटनी स्टेशन पर पहुंचा, तब दूसरे सब स्टेशनोंसे बिलकुल भिन्न प्रकारका जयघोष सुनाई पड़ा :

"माता कस्तूरबाकी जय !"

सामान्य रूपमें सब जगह बापूकी ही जयके नारे लगाये जाते थे । परन्तु यहां कस्तूरबाकी जयका नारा सुनकर बाको अचरज हुआ । उन्होंने खिड़कीसे बाहर मुंह निकाला, तो सामने हरिलालभाई खड़े दिखाई पड़े !

एक समयका उनका बलवान शरीर बिलकुल कमजोर हो गया था । आगेके सब दांत गिर चुके थे । कपड़े बिलकुल फटे हुए थे।

खिड़कीके पास आते ही हरिलालभाईने जेबसे एक मुसंबी निकाली और कहा: "बा, यह तुम्हारे लिए लाया हूं ।"

बा इसका जवाब दें उसके पहले ही बापू खिड़कीके पास पहुंचकर बोले : "मेरे लिए तू कुछ नहीं लाया?"

हरिलालभाईने सूखे स्वरमें उत्तर दिया: "नहीं, मैं तो बाके लिए ही लाया हूं । आपसे तो मैं इतना ही कहूंगा कि आप बाके प्रतापसे ही इतने बड़े बने हैं ।"

बापू : "इसमें तो कोई शंका ही नहीं है । लेकिन तुझे अब हमारे साथ आना हैं?"

हरिलालभाई बोले: "नहीं, मैं तो बासे केवल मिलने आया हूं ।"

बापू फिर अपनी जगह पर जाकर बैठ गये ।

मां और बेटेकी बातचीत आगे बढ़ी ।

हरिलालभाई : "लो बा, यह मुसंबी ।"

बाने पूछा: "मुसंबी तू कहांसे लाया, बेटा ?"

हरिलालभाई : "कहींसे भी लाया हूं । लेकिन तुम्हारे लिए बड़े प्रेससे लाया हूं । भीख मांग कर लाया हूं ।"

बाने मुसंबी हाथमें ले ली । लेकिन बेटेको इससे पूरा संतोष नहीं हुआ । उसने कहा: "बा, यह मुसंबी तुम्हें ही खानी है | तुम न खाओ तो मुझे लौटा दो ।"

बाने विश्वास दिलाया: "अच्छा, यह मुसंबी मैं ही खाऊंगी ।"

कुछ क्षण हरिलालभाईको एकटक देखनेके बाद बा दुःखसे बोलीं : "तेरे ये क्या हाल हो गये हैं बेटा ? तू किसका लड़का है, यह तो विचार कर । अब तू हमारे साथ चल ।"

लेकिन बाकी इस अंतिम बातको बंद करना हरिलालभाई अच्छी तरह जानते थे । वे बोले: "इसकी तो तुम बात ही न करो, बा । मैं इस हालतमें से अब उबर नहीं सकता ।"

बाकी आंखें छलछला आईं ।

गार्डकी सीटी बजी । गाड़ी चल पड़ी ।

अंतमें हरिलालभाईने फिर कहा : "बा, यह मुसंबी तुमने ही खाना, हां ।"

गाड़ी जरा आगे बढ़ी तब बाको याद आया कि उन्होंने तो बेटेको कुछ दिया ही नहीं । करुण स्वरमें बोल उठीं : "अरे, अरे, मैंने बेचारेको थोड़े फल भी नहीं दिये ! भूखा मरता होगा । देखूं, अभी भी दिये जा सकते हों तो ।"

टोकरीसे फल निकालकर बाने बाहर देखा, तो गाड़ी प्लेटफार्म पार कर चुकी थी । बाके मुंहसे एक ठंडी आह निकल कर रह गई ।

दूरसे एक धीमी आवाज उनके कानमें पड़ी :

"माता कस्तूरबाकी जय!"

७५. 'गरीब होनेसे मांको नहीं मिल सकता ?'

पुत्र भले कुपुत्र हो जाय, लेकिन माता कभी कुमाता नहीं हो सकती – इस आश्यकी एक कहावत हमारे समाजमें प्रचलित है । संस्कृतमें भी इस अर्थका एक प्रसिद्ध श्लोक है: 'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति' – पुत्र तो कभी कुपुत्र हो भी सकता है, लेकिन माता कभी कुमाता नहीं हो सकती ।

बापूके सबसे बड़े पुत्र हरिलालभाई बापूके खिलाफ आचरण करते थे, फिर भी बाका मातृ-हृदय उनके लिए सबसे ज्यादा चिन्तित रहता था । बाके मनमें उनके लिए हमेशा कोमल भावना बनी रहती थी ।

बाकी अंतिम बीमारीके समय सरकारने हरिलालभाईको उनके पास जानेकी इजाजत दी थी । उन्हें देखकर बा बहुत प्रसन्न हुई थीं । लेकिन बादमें बाको पता चला कि उन्हें एक ही बार आगाखां महलमें आनेकी इजाजत मिली है।

यह सुनकर बा बहुत चिढ़ीं । उन्होंने दुःखभरी आवाजमें बापूसे कहा : "यह क्या है? देवदासको तो सरकार रोज आने देती है और हरिलाल एक ही बार आ सकता है? भंडारी[१] मेरे सामने आयें तो उन्हें सुनाऊं कि दो भाइयोंमें इतना भेद आप क्यों करते हैं । हरिलाल बेचारा गरीब है, इसीलिए क्या वह अपनी मांसे नहीं मिल सकता?"

बापूने बाको शांत किया और कहा: "में उसे आनेकी इजाजत दिलवा दूंगा ।"

बादमें बापूने हरिलालभाईकी बहुत खोज कराई । लेकिन उनका कहीं भी पता न चला ।

---

१. जेल-सुपरिन्टेन्डेन्ट ।

७६. बापूके कदमों पर

१९३० के सत्याग्रहके समय बापूको कराड़ी नामक स्थान पर सरकारने गिरफ्तार कर लिया, उसके बाद बाने भरसक बापूका काम हाथमें ले लिया। वे गांव-गांव घूमते लगीं । लेकिन कामके बोझ और दौड़-धूपके कारण उनकी तबीयत बिगड़ गई । इसलिए बा श्री नरहरि परीखकी पुत्री श्री वनमालाबहनके साथ मरोली आश्रममें आराम करनेके लिए चली गईं ।

एक दिन सुबहकी प्रार्थना करनेके बाद सब लोग नाश्ता करने बैठे थे । इतनेमें डाकिया आकर तार दे गया । तारमें लिखा था :

"हमें कस्तूरबाके साथकी जरूरत है ।"

बा तारके भीतरके गहरे अर्थको समझ गईं और नाश्ता छोड़कर जल्दी जल्दी जानेकी तैयारी करने लगीं ।

तार बोरसद गांवसे आया था । वहां किसानोंको जमीन-महसूल न भरनेकी सलाह देनेवाली कुछ बहनों पर सरकारने लाठी चलाई थी । इससे सारे गांवमें हाहाकार मच गया था । अनेक बहनें घायल होकर अस्पतालमें पड़ी थीं । इन्हीं बहनोंने बाको तार करके बुलाया था, ताकि बा गांववालोंको हिम्मत बंधा सकें ।

बाकी इस उतावलीको देखकर वनमालाबहन घबरा उठीं । बोरसद जानेसे बाकी तबीयत ज्यादा बिगड़ जायगी, ऐसी चिन्ताके कारण उन्होंने बासे कहा: "बा, आप यह क्या करती हैं? आपमें ताकत है वहां जानेकी ? शरीरमें खूनकी एक बूंद भी तो नहीं रही है! इसीलिए न डॉक्टरोंने आपको आराम लेनेकी सलाह दी है? आपके बदले मैं बोरसद जाती हूं । भगवानके नाम पर आप यहीं रहें ।"

किन्तु कम्बल और दूसरी जरूरी चीजें झोलेमें रखते हुए बाने कहा : "पुलिसकी लाठियां बहादुरीसे झेलनेवाली बहनोंके पास मुझे पहुंचना ही चाहिये । बापू होते तो इस समय वे

बहनोंके पास खड़े होते। लेकिन वे तो जेलमें बंद हैं।" इतना कह कर बा बोरसदकी गाड़ी पकड़नेके लिए तेजीसे स्टेशनकी ओर चल पड़ीं।

बोरसद पहुंचकर बाने अस्पतालमें घायल बहनोंको हिम्मत बंधाई और ग्रामवासियोंसे मिलकर गांव पर छाये हुए डर और घबराहटको भी दूर किया। अपनी कमजोर तबीयतकी रत्तीभर परवाह न करके वे सुबहसे शाम तक खड़े पांव काम करने लगीं।

इससे उनकी तबीयत और बिगड़ गई। नड़ियादसे डॉक्टर आये। उन्होंने आराम करने पर खूब जोर दिया और बाको चेताया : "बा, आप हमारा कहना न मानेंगी तो आपकी तबीयत ज्यादा बिगड़ेगी और उसका परिणाम बुरा होगा।"

डॉक्टरोंकी बात सुनकर बाने कहा : "लेकिन मुझे तो ऐसा बिलकुल नहीं लगता! मैं सिर्फ बापूके कदमों पर ही चल रही हूं। बापूकी अनुपस्थितिमें मुझे काम करनेका यह अवसर मिला है। आराम करना तो मेरे लिए असंभव है!"

डॉक्टर बेचारे क्या करते? निराश होकर लौट गये। बा अपने काममें जुट गईं।

७७. बापूकी इच्छा ही बाकी इच्छा

१९४२ की नवीं अगस्तको बड़े सवेरे ही अचानक बापूको गिरफ्तार करनेके लिए पुलिस-अधिकारी आ धमके । वे बापूको, महादेवभाईको और मीराबहनको पकड़नेके लिए आये थे । लेकिन उन्होंने कहा कि कस्तूरबा आना चाहें तो वे भी गांधीजीके साथ आ सकती हैं।

बाकी ओर देखकर बापूने कहा: "तू न रह सके तो चल । लेकिन मैं तो यही चाहता हूं कि मेरे साथ चलनेकी अपेक्षा तू बाहर रहकर मेरा काम कर ।"

इतना कहना बाके लिए पर्याप्त था । उन्होंने बिना किसी विवादके बापूका काम करनेका निश्चय कर लिया ।

७८. कठोर नियम-पालन

१९३९ में राजकोट सत्याग्रहके समय बापूसे पहले बा पकड़ी गई थीं। शुरूमें बाको एक छोटेसे गांवमें नजरकैद रखा गया। वहांकी हवा बहुत ज्यादा खराब थी। लेकिन बाने एक भी पत्रमें बापूसे इसकी शिकायत नहीं की। वे तो सत्याग्रही सैनिक बनकर वहां गई थीं और यह मानती थीं कि सैनिकको कठिनाइयोंसे कभी घबराना नहीं चाहिये।

लेकिन लोगोंमें इस बातकी बहुत चर्चा चली। बाकी तबीयत इतनी खराब थी कि उन्हें राजकोटसे इतनी दूर रखनेमें खतरा था। अंतमें राजकोट सरकारने राजधानीसे १०-१५ मील दूरके अपने एक डाक-बंगलेमें बाको रखा। वहां बाके साथ सरदार पटेलकी पुत्री मणिबहन पटेल और मृदुलाबहन साराभाईको भी रखा गया था। उन दिनों बाने जो पत्र लिखे थे उन्हें पढ़कर हमारे मनमें उनके लिए बड़ा आदर पैदा होता है। पत्रोंमें अपनी तबीयतके समाचार देनेके बजाय बा बापूकी तबीयतके बारेमें और श्री रामदासभाईके पुत्र कहानाके बारेमें ही चिन्ता दिखाया करती थीं।

बाकी गिरफ्तारीके बाद बापूने भी राजकोट सत्याग्रहमें शामिल होनेका निश्चय किया। राजकोट पहुंचकर बापू और उनके साथी बासे मिलने गये। सरकारने बाको हर तरहकी सुविधायें दी थीं, फिर भी उनका चेहरा कुम्हलाया हुआ था। अधिक दिन तक वे बापूसे अलग होकर रह ही नहीं सकतो थीं। मनसे भले ही वे हिम्मत रख लेती थीं, लेकिन उनके शरीर पर बापूकी जुदाईका असर पड़े बिना नहीं रहता था।

उसके बाद तो राजकोटमें बापूका उपवास शुरू हो गया। यह समाचार सुनकर बाके मनको गहरा आघात लगा। डॉ० सुशीलाबहन यह समाचार लेकर बाके पास गई थीं। सुनते ही बा बोल उठीं: "मुझे पहलेसे बताना तो था कि बापू उपवास करनेकी बात सोच रहे हैं।"

सुशीलाबहन : “लेकिन बा, हममें से किसीको भी यह पता नहीं था कि बापू उपवासकी बात सोच रहे हैं । सवेरे जागकर बापूने एकाएक पत्र लिखा । उसीसे हमें इस बातका पता चला । चर्चा करनेका तो बापूने हमें मौका ही नहीं दिया!”

बाने कुछ कहा नहीं । उन्होंने तुरन्त रसोई बनानेवाली बाईको बुलाकर सूचना की: “जब तक बापूका उपवास चलेगा तब तक मैं एक ही बार खाऊंगी और वह भी फलाहार ही करूंगी ।”

बापूके किसी भी उपवासके समय बा ऐसा ही करती थीं । इससे वे बापूकी सेवा भी कर सकती थीं और उनकी तपस्यामें भी भाग ले सकती थीं ।

उपवासके दूसरे या तीसरे दिन बा अचानक बापूके सामने आकर खड़ी हो गईं !

बापूने पूछा: “तू कैसे आ गई?”

सरकारने बासे कहा था कि वे चाहें तो बापूजीसे मिलने जा सकती हैं । इसीलिए बा आई थीं ।

लेकिन उसके बाद रात पड़ने पर भी कोई बाको लिवाने नहीं आया | इस बहानेसे सरकारका इरादा बाको छोड़ देनेका था । लेकिन बापू इसे कैसे सहन करते? उन्होंने कहा: “छोड़ना ही हो तो सरकार सबको छोड़े । मृदुला और मणिको भी छोड़े । और वह भी नियमके अनुसार छोड़े ।”

रातको एक बजे बापूने बासे जेलमें लौट जानेको कहा ।

किसीने बताया: “बापू, वह रास्ता तो बंद है । पासके बिना वहां किसीको अधिकारी जाने नहीं देते । बाको वे रास्तेमें ही रोक लेंगे।

इस पर बापूने बासे कहा: “तुझे रास्तेमें कोई रोके तो तू वहीं सत्याग्रह करना । जहां रोका जाय वहीं पड़े रहना । चाहे सारी रात ही सड़क पर क्यों न पड़ा रहना पड़े ।”

बा कोई दलील किये बिना रवाना हो गईं । उस समय उनके मनकी क्या दशा हुई होगी? बापूको उपवासकी स्थितिमें छोड़ कर जाना उन्हें कैसा लगा होगा? लेकिन ऐसे अवसर पर बापूके साथ दलील करनेका विचार भी बाके मनमें नहीं आता था ।

सारी रात बाको सड़क पर रहने देनेकी हिम्मत सरकार नहीं कर सकी। उन्हें फिरसे डाक-बंगलेमें ले जाया गया।

बादमें बापूने इस सम्बन्धमें सरकारको एक पत्र लिखा। इसलिए दूसरे दिन नियमसे उसने बा, मणिबहन और मृदुलाबहनको छोड़ दिया। दोपहरको तीनों बापूके पास आ पहुंचीं।

उस दिन बापूकी हालत थोड़ी नाजुक थी। आते ही बा उनकी सेवामें लीन हो गईं। अपनी थकान और बीमारीको वे बिलकुल भूल गईं।

७९. 'मैंने मांग नहीं की'

९ अगस्त, १९४२ को सवेरे ही सवेरे बापूको गिरफ्तार किया गया और शामको बा और डॉ० सुशीलाबहनको गिरफ्तार करके पुलिस बम्बईके आर्थर रोड जेलमें ले गई ।

वहां बाको किसी प्रकारकी सुविधा सरकारने नहीं दी | इसके सिवा, जिस कमरेमें बाको रखा गया था, उसमें हवाके आने-जानेके लिए कोई रास्ता नहीं था। पाखानेकी नाली टूट गई थी, जिससे बेहद बदबू आती थी । साथ ही, कमरा सीलसे भरा हुआ था ।

इसके सिवा बाको खूब दस्त लग गये। बार बार पाखानेमें जाना-आना उनकी शक्तिसे बाहर था ।

सबसे बड़ी चोट तो बाको इस बातसे लगी थी कि कोई आन्दोलन चलाये बिना ही बापू और दूसरे लोगोंको अचानक सरकारने पकड़ लिया था । स्वयं बापूकों, बाको या दूसरे किसीको सपनेमें भी खयाल नहीं आया था कि इस तरह सबको पकड़ लिया जायगा ।

बाको दस्त तो लगे ही, साथमें बुखार भी रहने लगा |

अन्तमें बा और सुशीलाबहनको आगाखां महलमें बापूके पास ले जाया गया ।

गाड़ीमें भी रातभर दस्तकी शिकायत रहनेसे बा बहुत ही कमजोर हो गईं । स्टेशन पर उनके लिए कुर्सी रखी गई थी । लेकिन बाने उस पर बैठनेसे इनकार कर दिया । बाके स्वभावमें ही यह बात थी कि जब तक उनका शरीर चलता तब तक वे किसी पर अपना बोझ नहीं डालती थीं । वे चलते चलते ही स्टेशनसे बाहर निकलीं ।

मन और शरीरकी ऐसी नाजुक हालतमें बा बापूके पास पहुंचीं ।

लेकिन बाको देखते ही बापूकी त्यौरियां चढ़ गईं ! उन्होंने सोचा : 'बा मेरा वियोग न सह पानेके कारण, मनकी कमजोरीके वश होकर, तो मेरे पीछे पीछे यहां नहीं आई है ? वह अपना कर्तव्य तो नहीं भूल गई है?'

बाकी इतनी ज्यादा कमजोर हालतको देखे बिना ही बापूने जरा तीखे स्वरमें उनसे पछा : "तूने यहां आनेकी मांग की या सरकारने ही तुझे पकड़ कर यहां भेजा ?"

ता कुछ क्षण चुप रहीं । उनकी समझमें ही नहीं आया कि बापू क्या पूछ रहे हैं ।

सुशीलाबहनने मौका देखकर कहा : "हम गिरफ्तार होकर यहां आई हैं, बापूजी ।"

अब बापूका सवाल बाकी समझमें आया । उन्होंने कहा : "नहीं, नहीं, मैंने यहां आनेकी मांग नहीं की । सरकारने ही हमें पकड़ा है ।"

यह सुनकर बापूका मन थोड़ा शांत हुआ ।

८०. बापूका हठीला स्वभाव

बापूजी घरमें कुछ नियम बासे पलवानेका बड़ा आग्रह रखते थे । शुरू शुरूमें तो इस कारणसे दोनोंके बीच काफी झगड़ा भी होता था । लेकिन बापूके स्वभावको अच्छी तरह समझ लेनेके बाद बा उनकी हर बात सहन करने लग गईं ।

एक बार इस सम्बन्धमें बात निकलने पर बाने कहा : "बापूके हठीले स्वभावकी तो बात ही मत पूछो ! वे अपना सोचा ही कराते हैं । जोहानिसबर्गमें हम लोग रहते थे तबकी एक बात सुनाऊं । एक दिन बापू बाहरसे आये, उस समय तक मेरा रसोई बतानेका काम चल रहा था । खाना तैयार होनेमें थोड़ी देर थी । लेकिन बापू मेरे सिर पर आकर बोले : 'देर क्यों हो? समय हुआ कि चूल्हा बंद हो ही जाना चाहिये ।'

"इसके बाद उन्होंने सचमुच चूल्हेमें पानी डाल दिया और रसोई बंद करा दी! एक मिनटकी भी देरको वे सहन नहीं करते थे । किसी जगह लगा हुआ जरासा भी दाग या मैल उनसे सहन नहीं होता था । हर क्षण उनका डर मेरे मनमें बना ही रहता था !"

८१. बाके जीवन-साथी

१९३३ में बापूने आत्मशुद्धिके लिए उपवास किये थे । इस तरह बापूको हर कभी उपवास करते देखकर बा घबरा जाती थीं । हमेशाकी तरह इस बार भी वे बहुत दुःखी हुईं ।

बाके दुःखकी बात बताते हुए मीराबहनने बापूको लिखा: "आपके उपवासके समाचार हमें आज ही मिले । बाको इससे गहरा आघात लगा है । वे मानती हैं कि आपका यह निर्णय बिलकुल अनुचित है । लेकिन आपने कब किसीकी बात सुनी है? बाको विश्वास है कि आप उनकी बात भी नहीं सुनेंगे! इसलिए वे ईश्वरसे यह प्रार्थना करती हैं कि आपका उपवास निर्विघ्न पूरा हो ।"

इसके उत्तरमें बापूने मीराबहनको लिखा: "तुम बासे कहना कि उसके पिताने उस पर एक ऐसा जीवन-साथी लाद दिया है, जिसका बोझ किसी भी स्त्रीको कुचल सकता है । मैं उसके प्रेमकी रक्षा कर रहा हूं।"

८२. 'नतीजा देखा न ?'

बा बापूजीकी हर छोटीसे छोटी बातका ध्यान रखती थीं। उनके खाने-पीनेकी व्यवस्था भी बा स्वयं ही करती थीं । लेकिन कभी कभी दूसरोंके विशेष आग्रहके कारण बापूका कोई काम वे दूसरोंको भी सौंप देती थीं ।

एक बार बापूका अलीगढ़ जाना हुआ । वहां एक भाईने बहुल हठ करके बापूका दूध छाननेका काम बासे ले लिया । उस भाईने दूध छाना । इसके बाद वह दूध बापूके सामने रखा गया ।

दूधमें एक बाल पड़ा हुआ था, जो बापूजीकी नजरमें आ गया ! उन्होंने बासे पूछा । बाने सारी बात कह सुनाई ।

बापू ऊंची आवाजसे बोले : "नतीजा देखा न? एक बाल दूधमें रह गया !"

उस दिन बापूने दूध नहीं पिया । इससे बाका मन बड़ा दुःखी हुआ | छलछलाई आंखोंसे कहने लगीं : "किसीको आपका काम करने नहीं देती तो उसे दुःख होता है; और करने देती हूं तो यह नतीजा आता है । दिन और रात आपको सिरपच्ची करनी होती है और पेटमें देखो तो एक जूनका भी खाना नहीं पहुंचता !"

इस घटनाके बाद बापूके खान-पानके बारेमें बा अधिक सावधान रहने लगीं ।

८३. 'बाकी तो बात ही अलग थी !'

यह बाके स्वर्गवासके बादका प्रसंग है । एक दिन बापूको पीनेके लिए दूध दिया गया । उनकी तेज नजरने तुरन्त उसमें पड़ा हुआ एक बाल देख लिया ।

लेकिन बापू कुछ बोले नहीं । उन्होंने चुपचाप वह बाल निकाल डाला और दूध पीना शुरू कर दिया!

बापूका यह व्यवहार देखकर पासमें बैठे हुए एक भाई बोल उठेः "बापूजी, बा जीवित थीं तब अगर दूधमें बाल रह जाता, तो आप बाकी मुसीबत कर देते थे और दूध भी नहीं पीते थे । आज आपने दूध कैसे पी लिया?"

बापू दुःखभरी आवाजमें बोलेः "बाकी तो बात ही अलग थी!"

८४. 'बापूजी खा लें तब जाऊंगी'

बा बापूके भोजनका समय पूरी तरह संभालती थीं । एक मिनटकी भी देर नहीं होते देती थीं । खाते समय वे बापूके पास ही बैठती थीं और बापूका भोजन पूरा होनेके बाद ही वहांसे उठती थीं ।

आगाखां महलकी अपनी आखिरी बीमारीमें भी बा इस नियमको पालनेका सदा प्रयत्न करती थीं । वे स्वयं भले बापूका काम न कर सकें, लेकिन अपनी देखरेखमें बापूके खान-पानकी व्यवस्था कराना वे कभी भूलती नहीं थीं ।

आगाखां महलमें जब बाकी तबीयत तेजीसे बिगड़नें लगी, तब वे एक कमरेसे दूसरे कमरेमें चलकर नहीं जा पाती थीं । इसलिए पहियोंवाली कुरसीमें बैठाकर उन्हें घुमाना पड़ता था।

एक दिन बरामदेमें अपने बिस्तर पर लेटे लेटे बा बापूको शामका भोजन करते देख रही थीं । इतनेमें उन्हें कमरेमें ले जानेका समय हो गया । मीराबहन तुरन्त पहियोंवाली कुरसी ले कर बाके पास आयीं और बोलीं : "चलिये, बा । आपका कमरेमें जानेका समय हो गया है ।"

बाने शांत मनसे कहा: "जरा रुक जाओ । बापूजी खा लें तब जाऊंगी ।"

इस तरह बीमारीसे लगभग बिस्तर पकड़ लेने पर भी बाका जी बापूकी सेवामें ही लगा रहता था ।

८५. अंतिम घड़ीमें भी बापूकी चिन्ता

बा बापूके खान-पानके बारेमें बहुत अधिक सावधानी रखती थीं । इतना ही नहीं, ठीक समय पर बापूको खाना खिलाना, बापूके लिए जरूरी चीजें बहुत सफाईसे तैयार करना या कराना, उनके खाने-पीनेके बरतन स्वच्छ रखना आदि बातोंका भी बा सदा बारीकीसे ध्यान रखती थीं । जीवनमें कभी भी बाने इस बारेमें असावधानी नहीं होने दी ।

बाके अवसानके दिनकी ही बात है । अपनी मृत्युसे कुछ ही घंटे पहले बाने मनुबहन गांधीसे कहा: "मनु, बापूजीकी बोतलका गुड़ खतम हो गया है । तूने दूसरा तैयार किया?"

मनुबहनने जवाब दिया: "हां मोटीबा, गुड़ सिगड़ी पर ही है । अभी तैयार हो जाता है ।"

बाने कहा: "देख, मेरे पास तो कई लोग बैठे हैं । तू जा । बापूजीको दूध और गुड़ देकर तू भी भोजन कर ले |"

८६. 'बा यहां बैठी ही रहती है'

यह घटना बाके अवसानके बादकी है । बापूका खाना रोज ठीक साढ़े ग्यारह पर उनके सामने आ जाता था । एक रोज पौने बारह पर उनका खाना आया ।

इस पर बापूने खाना लानेवाली बहनसे गंभीर आवाजमें कहा : "हमें ऐसा समझना चाहिये कि बा यहां सदा बैठी ही रहती है । बा हमेशा नियत समय पर ही मेरा खाना लाती थी । इसमें एक मिनटकी भी देर नहीं होती थी । यह काम बाने दूसरेको सौंपा हो और अगर उसे खाना लानेमें एक मिनटकी भी देर हो जाय, तो बा दौड़धूप मचा देती थी । तुरन्त रसोई-घरमें पहुंच जाती और वहां काम करनेवालोंको तंग कर डालती थी ।

"आगाखां महलमें बा बीमार थी तब वह स्वयं मेरे लिए कुछ नहीं कर पाती थी । फिर भी वह घड़ी पर नजर रखती थी और समय पर मेरा खाना न आता तो शोरगुल मचा देती थी।

"मैं बासे कहता, 'यहां जेलमें थोड़े ही हमें समयकी पाबंदी रखनी है? खाना लानेमें थोड़ी देर भी हो जाय तो क्या बिगड़ जायगा?' बा तुरन्त जवाब देती, 'लेकिन मैं जानती हूं न कि आप यहां भी समयकी पूरी पाबंदी रखते हैं । तब थोड़ी भी देर क्यों होनी चाहिये?'"

८७. बाकी अनोखी बहादुरी

१९४२ की नजर-कैदके दिनोंमें एक बार बापूने उपवास करनेका विचार किया । लेकिन उस समय बाकी तबीयत दिनोंदिन ज्यादा कमजोर होती जाती थी । इसलिए श्रीमती सरोजिनी नायडू, प्यारेलालजी, सुशीलाबहन नय्यर आदि बापूजीके साथियोंको यही चिन्ता सताती थी कि अगर बापूने उपवास शुरू कर दिया, तो बाकी नाजुक तबीयत पर उसका बहुत बुरा असर होगा । उन सबको लगता था कि ऐसी नाजुक स्थितिमें बाकी इतनी कड़ी कसौटी बापूको नहीं करनी चाहिये ।

बाके प्रति बापूजीका जो रुख था उसे सरोजिनीदेवी पसंद नहीं करती थीं । वे यही माना करती थीं कि बा पर अपनी पतिकी सत्ता चला कर बापू उन्हें बिलकुल कुचल डालते हैं ! अपनी धुनमें बापू बाके विचारोंका, बाकी भावनाओंका, बाके सुख-दुःखका कोई विचार ही नहीं करते । यही कारण है कि सरोजिनीदेवी बहुत बार अपना स्नेहपूर्ण क्रोध बतानेके लिए 'जालिम पति' के रूपमें ही बापूका वर्णन करती थीं । हमेशाकी तरह इस बार भी क्रोधित होकर सरोजिनीदेवीने एक दिन कड़े शब्दोंमें बापूको सुना दिया : "बापू, आपका इस बारका उपवास बेचारी बाकी जान ले डालेगा !"

बापू हंस पड़े और बोले : "मैं बाको आप लोगोंसे ज्यादा पहचानता हुं । आपको बाकी बहादुरीकी कल्पना नहीं आ सकती । आप कोई बाको अच्छी तरह पहचानते ही नहीं । मैंने बाके साथ पूरे बांसठ बरस बिताये हैं । मैं कहता हूं कि इस मौके पर बा आप सबसे ज्यादा हिम्मत रखनेवाली है ।

"हरिजनोंके प्रश्न पर मैंने जो उपवास किया था, उसमें मैंने जीनेकी आशा बिलकुल छोड़ दी थी । और मेरा सारा सामान अस्पतालके लोगोंमें बांट देनेका निश्चय कर लिया था। उस समय बाने स्वयं अपने हाथसे सारा सामान दूसरोंको बांट दिया था और बाकी आंखें गीली भी नहीं हुई थीं!"

बाकी हिम्मतके बारेमें बापूका जो विश्वास था वह सच्चा साबित हुआ । उस दिन शामको बापूने अपने उपवासके बारेमें बासे बातें कीं ।

दूसरे दिन बा सरोजिनीदेवीसे कहने लगीं: "सरकार जब इतना झूठ बोलती हो तब बापू कैसे चुप बैठ सकते हैं ? और, सरकारके अत्याचारोंका विरोध करनेके लिए उपवासके सिवा बापूजीके पास दूसरा साधन भी क्या है ?"

बाकी यह बात सुनकर सब लोग दंग रह गये । किसीके मुंहसे एक शब्द भी नहीं निकला।

८८. एक पवित्र दर्शन

आगाखां महलमें बाके अवसानसे कुछ दिन पहलेकी बात है। एक दिन वैद्यकी दवासे बाकी तबीयतमें इतना सुधार हो गया कि सब लोग भुलावेमें पड़ गये । उस दिन बाको अपनी तबीयत इतनी अच्छी लगी कि शामको बापू धूमने चले गये, उसके बाद बा अपनी पहियोंवाली कुरसीमें बैठ कर आगाखां महलके सारे बरामदेमें घूमीं । और घूमनेके बाद मीराबहनके कमरेमें रखी हुई बालकृष्णकी तसवीरके पास गईं ।

बापू नीचे अहातेमें ही घूम रहे थे । घूमते घूमते उन्होंने बाको तसवीरके पास जाते देखा । वे ऊपर गये ओर दरवाजेमें खड़े रह कर बाकी भक्तिका दर्शन करने लगे ।

बा भगवानके ध्यानमें लीन होकर प्रार्थना कर रही थीं|

कुछ देर बाद बाने आंखें खोलीं तो बापूको दरवाजेमें खड़ा देख कर वे शरमा गईं । मुस्कराते हुए मीठे उलाहनेके स्वरमें उन्होंने बापूसे कहा : "आप घूमने जाइये न। यहां क्या काम है?"

बापू हंस पड़े और नीचे घूमने चले गये ।

८९. बापूका एक पवित्र स्मरण

१९३० में नमक-सत्याग्रहके लिए बापूने दांडीकूच किया, उससे पहलेकी यह घटना है । साबरमती आश्रमके पास बने हुए लाल बंगलेमें किसीका विवाह था । बापूजी विवाहमें शामिल होकर आश्रमको लौट रहे थे ।

उस समय बापूके साथ कुमारी प्रेमाबहन कंटक थीं । उन्होंने जरा मजाकके स्वरमें बापूसे पूछा: "महात्माजी, इस विवाहको देख कर आपको अपने विवाहकी घटना याद आई या नहीं ?"

बापूका विवाह बचपनमें ही हो गया था । एस प्रश्नसे उस समयकी बालोचित कल्पनाओंके मधुर चित्र बापूकी आंखोंके सामने तैरने लगे।

बापूने हंसते हुए प्रेमाबहनको जवाब दिया : "अपने विवाहकी घटनाको जीवनमें कौन भूल सकता है? मुझे तो अच्छी तरह उसका स्मरण है । मजेकी बात तो यह थी कि विवाहकी विधि चल रही थी तब बाका हाथ पकड़नेका मौका मिलने पर मैं उसे दबाता ही रहता था; और बाको जब मेरा हाथ पकड़नेका मौका मिलता तब बा भी मेरे हाथको दबाती ही रहती थी !"

९०. 'तो मैं नहीं खाऊंगी !'

बा भोजन बनानेमें बड़ी कुशल थीं । लेकिन बापूने अपने जीवनमें अस्वाद-व्रतको स्थान दिया, तबसे बाकी यह कला बेकार जैसी हो गई थी । फिर भी वे किसी किसी समय कोई स्वादिष्ट चीज बना ही लेती थीं । उन्हें भोजनकी अच्छी अच्छी बानगियां बनाकर खाने और दूसरोंको प्रेमसे खिलानेमें आनन्द आता था।

अपनी आखिरी बीमारीके समय भी वे आगाखां महलमें डॉ० गिल्डरके नाश्तेके लिए मनुबहन गांधीसे रोज कोई न कोई चीज बनवाती थीं ।

एक रोज बाने मनुबहनसे पूरनपोली बनानेको कहा और बताया : "आज तो मैं भी पूरनपोली खाऊंगी | तू जाकर बापूजीसे पूछ आ कि वे खायेंगे?"

बाकी तबीयत कमजोर तो थी ही । अगर वे पूरनपोली जैसी भारी चीज खातीं, तो उससे उनके दिलकी धड़कन बढ़ जानेका डर था । इसलिए जब मनुबहन बापूसे पूछने गईं तब उन्होंने बाका खयाल करके कहा : "अगर बा पूरनपोली न खाये तो मैं खाऊंगा ।

बाको निश्चय करनेमें एक क्षणकी भी देर नहीं लगी । वे बोलीं : "अच्छा, अगर बापूजी खायेंगे तो मैं नहीं खाऊंगी !"

इसके बाद बाने मनुबहनके पास बैठ कर बापू और दूसरे सब लोगोंके लिए पुरनपोली बनवाई और सबको प्रेमसे खिलाई। लेकिन खुदने चखी तक नहीं !

९१. बाके महादेव

१५ अगस्त, १९४२ के दिन एकाएक आगाखां महलमें श्री महादेव देसाई पर हृदय-रोगका आक्रमण हुआ और कुछ ही देरमें वे चल बसे । बा पर तो मानो वज्र गिर गया | इस कठोर आघातको वे सह न सकीं । कड़ा मन करके उन्होंने प्रार्थना आदिमें भाग लिया, लेकिन उनकी आंखोंसे लगातार आंसू बहते रहे, उनका सिर चकराता रहा ।

अग्नि-संस्कार करनेके लिए महादेवभाईके मृतदेहको नीचे ले जाया गया । बा भी आग्रह करके नीचे गईं । उनका स्वास्थ्य बहुत गिर गया था । सीढ़ियां चढ़ने-उतरनेकी शक्ति अभी उनमें नहीं आई थी । लेकिन अपने प्यारे पुत्र महादेवको वे अंतिम बिदा देने न जायं, यह कैसे हो सकता था ?

बाकी तबीयत नाजुक थी, इसलिए सब कोई यह चाहते थे कि वे अंतिम विधि न देखें तो अच्छा हो। लेकिन बा उस दिन किसीकी सुननेवाली नहीं थीं | चितासे कुछ दूर उनकी कुरसी लगा दी गई । सारे समय वे दोनों हाथ जोड़कर पुकारती रहीं :

"महादेव, तू जहां जाये वहां सुखी रहना । भाई, तू सदा सुखी रहना । तूने बापूकी अपार सेवा की है । महादेव, तू सदा सुखसे रहना ।" बीच बीचमें बाके मुंहसे ये करुण शब्द भी निकला करते थे: "महादेव क्यों चला गया? मैं क्यों नहीं गई? ईश्वरका यह कैसा न्याय है?"

अग्नि-संस्कार पूरा हो जानेके बाद सब लोग वापिस आये ।

बाके मनमें एक विचार बार-बार उठा करता था: "यह तो ब्राह्मणकी मृत्यु हुई है। यह भारी अपशकुन कहा जायगा ।"

बापू कहते : "हां, सरकारके लिए, हमारे लिए नहीं |"

*

लेकिन बाके मनसे यह शंका मिटी नहीं । कुछ दिन बाद वे डॉ० सुशीलाबहनसे कहने लगीं: " सुशीला, ब्राह्मणकी इस हत्याका पाप तो हमें ही लगा न ? बापूजीने लड़ाई छेड़ी,

महादेव जेलमें आया और यहां उसकी मृत्यु हुई । इसलिए यह पाप तो हमारे ही सिर पड़ा न?"

सुशीलाबहन नम्रभावसे बोलीं : "बा, आप ऐसे विचार क्यों करती हैं? महादेवभाईने तो देशकी सेवा करते करते अपना बलिदान दिया । उनकी मृत्युका पाप कैसा? और पाप अगर हो भी तो वह सरकारके सिर पड़ेगा । सरकारने बिना कारण उन्हें पकड़ा । बापूजीने लड़ाई छेड़ी ही कब थी?"

बाका मन थोड़ा शांत हुआ । वे बोलीं: "हां, बात तो तेरी सच है । बापूजीने लड़ाई शुरू ही नहीं की थी । बापू तो सरकारके साथ समझौतेकी बातचीत करने जानेवाले थे । इसके पहले ही उसने बापूको पकड़ लिया । यह सरकार ही पापी है। इसने बापूको कुछ करने ही नहीं दिया ।"

*

धर्मके लिए बाके मनमें अपार श्रद्धा थी | वे रोज तुलसी माताकी पूजा करती थीं । मीराबहनने अपने कमरेमें बालकृष्णकी मूर्ति रखी थी । बा रोज उस मूर्तिको श्रद्धा और भक्तिसे फूल चढ़ाती थीं ।

ये दो तो बाके मंदिर थे ही । अब महादेवभाईकी समाधि बाका तीसरा मन्दिर बनी । जब तक बामें शक्ति रही, वे रोज बापूके साथ समाधि तक चलकर जातीं, समाधिकी परिक्रमा करतीं और समाधि पर सिर नवातीं ।

२ अक्तूबर, १९४२ के दिन बापूका जन्मदिन आया | उस दिन सरोजिनीदेवीने एक छोटीसी दीपमाला जलानेका निश्चय किया । बाने सुशीलाबहनको बुलाकर कहा: "सुशीला, शंकरके मंदिरमें दीपक जरूर रख आना । भूलना मत ।"

पहले तो सुशीलाबहन समझ ही नहीं पाईं कि बा किस मंदिरमें दीपक जलानेको कह रही हैं । लेकिन कुछ सोचने पर बात उनके खयालमें आई । इसलिए उन्होंने पूछा: "बा, आप महादेवभाईकी समाधि पर दीपक रखनेको कह रही हैं न?"

बा गद्गद होकर बोलीं: " हां, हां, वही तो मेरे महादेवका – शंकरका – मंदिर है!"

९२. बुढ़ापेमें बा विद्यार्थिनी बनीं !

महादेवभाईके अवसानके बाद आगाखां महलमें भारी उदासी छाई रहती थी । इसलिए बापूने अपने साथके सब लोगोंसे कहा : "हम सब अपने एक एक मिनटका हिसाब रखें । सारा दिन किसी न किसी काममें ही बितायें, जिससे इधर उधरके विचार मनमें आ ही न सकें । हिंसासे भरी हुई इस दुनियामें अगर अहिंसाको अपना मार्ग खोजना है, तो उसका यही एक उपाय है।"

बापू स्वयं तो सारे समय काममें लगे ही रहते थे | अब दूसरोंका कार्यक्रम भी उन्होंने निश्चित कर दिया । बापू बाको गुजराती और गीताजी सिखाने लगे | भूगोल भी शुरू किया। कभी कभी इतिहास भी पढ़ाने लग जाते थे । भोजनके बाद दोपहरमें सोनेके पहले बापू बाको कुछ न कुछ पढ़कर सुनाते थे और उसका अर्थ समझाते थे ।

बाको इसमें बड़ा आनंद आता था । वे हर बातको बड़ा रस लेकर सीखनेका प्रयत्न करती थीं । लेकिन उनका मन और दिमाग बापूके जैसा स्वस्थ और स्थिर नहीं था । अब नये नये विषय सीखनेमें उन्हें कठिनाई होती थी । बाको पिछला पाठ याद है या नहीं, यह जाननेके लिए शुरू शुरूमें बापू उनसे प्रश्न भी पूछते थे । लेकिन अकसर बा पिछला पाठ याद नहीं रख पाती थीं ।

वैसे वे पाठ याद करनेके लिए खूब मेहनत करती थीं । एक रोज बापूने उन्हें पंजाबकी नदियोंके नाम सिखाये । बापूजीके सो जानेके बाद वे सुशीलाबहनके पास जाकर कहने लगीं : सुशीला, ये सब नाम तू मुझे एक कागज पर लिख दे ।" सुशीलाबहनने सब नाम लिख दिये | उस कागजको हाथमें रखकर बा दिन भर नदियोंके नाम याद करती रहीं । लेकिन दूसरे दिन जब बापूने पूछा तब वे नदियोंके नाम उन्हें बता नहीं सकीं !

अब बापूने प्राकृतिक भूगोल भी बाको सिखाना शुरू किया । रेखांश क्या है, अक्षांश क्या है, विषुव-रेखा क्या है – यह सब बापूने उन्हें समझाया । ये सब बातें बड़े रसके साथ बाने सीखीं । लेकिन इन्हें याद रखना बाके लिए कठिन था । रोज भोजनके बाद बापू एक नारंगी

मंगवाते थे और उसके ऊपर रेखांश, अक्षांश, विषुव-रेखा आदि बाको समझाते थे । अन्तमे बाको ये सब बातें याद हो गईं ।

इसके कुछ समय बाद प्यारेलालजी एक दिन मनुबहन गांधीको भूगोल सिखा रहे थे । बा भी वहां खड़ी हो गईं और उनकी बात सुनने लगीं । प्यारेलालजीको रेखांश, अक्षांश शब्दोंके अंग्रेजी नाम तो आते थे, लेकिन हिन्दी नाम बतानेमें उनकी भूल हो गई । इस पर बा सुशीलाबहनके पास जाकर बोलीं : "सुशीला, ऐसा क्यों है ? प्यारेलाल जिसे रेखांश कहता है, उसे बापूजी तो अक्षांश कहते थे !" बाकी बात सच थी । प्यारेलालजीने अपनी गलती सुधार ली ।

बापूने बाको गुजरातीकी पांचवीं पाठमाला पढ़ानी शुरू की । उसमें कवितायें भी आती थीं । बापू कविताओंके राग बाको सिखाने लगे । आठ-दस दिन तक रोज शामकी प्रार्थनाके बाद बा और बापू कवितायें गाते रहे । सरोजिनीदेवी यह देखकर बहुत बार मजाकमें कहतीं : "बुढ़ापेमें आप दोनों यह क्या ले बैठे हैं ?" बापू यह सुनकर हंस देते और फिरसे बाके साथ गाने लगते ।

एक दिन बापूने हिन्दुस्तानके विभिन्न प्रान्तोंके मुख्य शहरोंके नाम बाको सिखाये | ये नाम सीखनेमें बाने खूब मेहनत की । लेकिन बापू जब उनसे पूछते तब उनके मुंहसे निकल जाता: "कलकत्तेकी राजधानी लाहौर है ।" अथवा ऐसा ही कोई दूसरा गलत उत्तर बा दे देती थीं ।

बा बहुत बार कहा करती थीं : "में बीमार रहती हूं, इसलिए मेरा दिमाग कमजोर हो गया है । मुझे कुछ याद नहीं रहता ।"

लेकिन बाने अभ्यास छोड़ा नहीं । उनका गीताका अभ्यास तो लगभग अवसानके दिन तक चला ।

९३. बाका मन

श्री महादेव देसाईके अवसानको एक वर्ष पूरा हुआ था। उस दिन सबेरे बापू और साथके दूसरे लोग महादेवभाईकी समाधि पर रोजके नियमके अनुसार प्रार्थना करने गये। बाकी तबीयत खराब होनेसे मनुबहन उनके पास रुक गई थीं।

बाको इसका पता चला तब उन्होंने मनुबहनसे कहा: "आज तु प्रार्थनामें न जाय यह मुझे अच्छा नहीं लगेगा। समाधि पर फूल चढ़ा कर प्रणाम करना और गीतापाठ करके चली आना। इतनी देरमें मुझे कुछ नहीं होगा।"

मनुबहन बोलीं : "डॉ० गिल्डर और सुशीलाबहनने खास तौर पर कहा है कि बारी-बारीसे बाके पास किसीको हमेशा रहना चाहिये | इसलिए सबके लौट आने पर मैं प्रणाम कर आऊंगी।"

बाने कहा: "तू कहना कि मुझे मोटीबाने भेजा है। इतनी देरमें मुझे कुछ भी नहीं होगा। तू जा।"

इस पर मनुबहन प्रार्थनामें गईं। प्रार्थना पूरी होने पर बापूने उनसे पूछा: "क्यों, तू आ पहुंची? बाने ही तुझे भेजा होगा। आज महादेवकी पुण्यतिथि है। आज तु प्रार्थनामें न आये, यह बासे कैसे सहन हो सकता है? इससे पता चलता है कि महादेवकी मृत्युसे बाके हृदयको जो गहरा आघात लगा है वह अभी तक मिटा नहीं है।"

९४. दुनियाका रंग !

१९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलनके सिलसिलेमें बाको गिरफ्तार करके बापूके पास आगाखां महल ले जाया जा रहा था । उनके साथ सुशीलाबहनको भी पकड़ा गया था ।

दोनोंको स्टेशन पर ले जाकर एक वेटिंग-रूममें बैठा दिया गया । सुशीलाबहन तो ऊंघने लगी थीं, लेकिन बा पूरी तरह जाग्रत थीं ।

स्टेशन पर सदाकी तरह मुसाफिरोंका आना-जाना और शोरगुल जारी था । बा यह सब ध्यानसे देख रही थीं। सरकारने बापूको और कांग्रेसके दूसरे सब नेताओंको एकाएक पकड़ कर जेलमें बंद कर दिया था । इससे बाके मन पर गहरी चोट लगी थी । स्टेशनकी हमेशाकी चहल-पहलको देखकर बा बोल उठीं : "सुशीला, देख, यह दुनिया तो रोजकी तरह ही चल रही है । मानो कुछ हुआ ही न हो ! बापूजीको स्वराज्य कैसे मिलेगा?"

बाकी आवाजमें इतना दुःख, इतनी निराशा थी कि सुशीलाबहनकी आंखें छलछला आईं । वे बोलीं : "बा, बापूकी मदद पर तो भगवान है न? आप कोई चिन्ता न करें । सब कुछ अच्छा ही होगा ।"

९५. बापूमें बाकी श्रद्धा

यह उस समयका प्रसंग है जब १९४२ में बापू, श्रीमती नायडू आदिको गिरफ्तार करके आगाखां महलमें रखा गया था।

जेलमें मनुबहन, सुशीलाबहन आदि साथी बापूसे अकसर कहानी सुनानेके लिए कहा करते थे । बापूने दो-चार छोटी-बड़ी कहानियां सुनाई भी थीं ।

एक रोज सुशीलाबहनने कहा: "बापू, कहानी सुनानी हो तो आपके ही जीवनकी सुनाइये न ।"

बापू मान गये । बापूकी 'आत्मकथा' पढ़ना और उनके मुंहसे आत्मकथा सुनना इन दोनोंमें जमीन-आसमानका अन्तर था । बापूने अपने बचपनकी बातें सुनाईं, बाके साथ खेलनेकी बातें सुनाईं और अपने विवाहकी बातें सुनाईं ।

बाने हिन्दू धर्मके पुराने संस्कारों पर विजय पाकर बापूके कदमों पर चलनेका कैसा प्रयत्न किया, इसका वर्णन करते हुए बापूने कहा :

"मुझे कहना चाहिये कि इसमें परिवारकी सभी स्त्रियोंकी मुझे मदद मिली । वे सब बासे कहतीं: 'दूसरे लोग भले ही हमारे पुराने रीति-रिवाज पालें, अछूतोंको घरमें न घुसने दें और मुसलमानोंका छुआ पानी तक न पियें; लेकिन तुझे तो पुराने विचार छोड़ ही देने चाहिये । अपने पतिके पीछे चलना ही तेरा धर्म है । उनके पीछे चलकर तू जो भी काम करेगी, उसका पाप तुझे लग ही नहीं सकता । उसका परिणाम अच्छा ही होगा ।"

"बाने हमेशा उनकी सीख पर चलनेका प्रयत्न किया । ऐसा नहीं कहा जा सकता कि उसने हर कदम बुद्धिसे समझकर ही उठाया था । लेकिन मैं हमेशा यह मानता रहा हूं कि बुद्धि हृदयके पीछे पीछे चलती है । बाने जो कुछ किया वह श्रद्धासे किया, हृदयसे किया और बुद्धिसे भी उसने मेरी सारी बातोंको समझ लिया था ।"

९६. बापूकी पत्नीनिष्ठा

बापूने अछूतपनके कलंकके खिलाफ लड़ाई छेड़ी, तब शुरू शुरूमें अपनी बात बाको समझानेमें उन्हें बड़ी मेहनत करनी पड़ी थी । कितना ही समझायें तो भी बा उनकी बात मानती नहीं थीं । लेकिन बापू कभी थकते नहीं थे । वे अपार धीरजसे बाको अपनी बात समझाते थे । रोज घंटों उनके साथ बापू इस विषय पर चर्चा किया करते थे ।

एक दिन तो हरिजनोंको रसोई-घरमें दाखिल करके उन्हें खाना बनाने देनेकी बात बाको समझाते समझाते बापू थक गये। लेकिन बा टससे मस न हुईं । बापू बोले: “यह बात बाको समझाकर राजी करना बहुत कठिन है।”

लेकिन ये शब्द मुंहसे निकलते ही बापू गहराईमें उतर गये । गंभीर आवाजमें उन्होंने कहा: “लेकिन ऐसा होते हुए भी मुझे जन्म-जन्मकी संगिनी चुनना हो, तो मैं बाको ही चुनूंगा ।”

९७. 'मैं तुझे मिट्टीकी पुतली नहीं मानता'

बापू जब भी बाहर यात्रा पर जाते या जेलमें जाते, तब बा उनके पैर पड़ना कभी नहीं भूलती थीं । उस समय बापू प्रेमसे बाके सिर पर अपना हाथ रख देते थे ।

एक बार बापू कामके बोझके कारण या जल्दी होनेके कारण बाके सिर पर हाथ रखना भूल गये। यह चीज तुरंत बाके ध्यानमें आ गई ।

इसके बाद जब बाने बापूको पत्र लिखा तब उन्होंने इस बारेमें उनसे मीठी शिकायत की । बापूने उनकी इस शिकायतका उत्तर देते हुए लिखा था : ". . . तेरे पत्रमें एक बात थी, जिसका उत्तर देना रह गया है । तूने लिखा है कि (आश्रमसे) रवाना होते समय मैंने तेरे सिर पर हाथ भी नहीं रखा! मोटर चली तब मुझे भी इसका विचार आया था । लेकिन तू दूर थी । अभी भी तुझे प्रेमकी बाहरी निशानी जरूरी लगती है? तू ऐसा क्यों मान लेती है कि बाहर मैं बताता नहीं इसलिए मेरा प्रेम सूख गया है? मैं तो तुझसे कहता हूं कि तेरे प्रति मेरा प्रेम बढ़ा है और दिन-दिन अधिक बढ़ता जाता है । इसका यह मतलब नहीं कि पहले मेरा प्रेम कम था। लेकिन जो प्रेम था वह दिनोंदिन ज्यादा निर्मल बनता जा रहा है। मैं तुझे मिट्टीकी पुतली नहीं मानता। और ज्यादा तो क्या लिखूं?"

९८. 'मुझे आपकी गोदमें ही मरना है'

बापूने साबरमती आश्रममें हरिजनोंको रखनेंकी घोषणा की, उस समय बा पुराने विचारोंकी थीं । बापू इस बारेमें बाको अनेक तरहसे खूब समझाते थे, लेकिन उनके गले यह बात उतरती ही नहीं थी ।

एक बार बापूने देखा कि हरिजनोंके साथ वे जो बरताव करते हैं उससे बाका मन दुःखी रहता है और वे भीतर ही भीतर इसकी शिकायत करती रहती हैं । इससे तुरन्त बाके पास जाकर उन्होंने कह डाला: "तुझे यहां रहना पसंद न हो तो तू भी रलियातबा[१] की तरह राजकोट चली जा । तुझे भी हर महीने में ७ रुपये भेजा करूंगा ।"

यह सुनकर बाने कहा : "ऐसा करके आप मुझे जिन्दगी भरके लिए अपनेसे अलग कर देना चाहते हैं? मैं आपसे अलग नहीं रहूंगी । मुझे तो आपकी गोदमें ही मरना है |"

---

१. रलियातबा बापूकी बहन थीं।

९९. बाकी अंतिम इच्छा

१९४२ के जनवरी महीनेकी बात है । बा और बापू कुछ दिन बारडोली आश्रममें रहे थे । वहांसे बा मीठुबहनसे मिलने और उनके साथ कुछेक दिन रहनेके लिए मरोली आश्रम गईं। वहां बाको बुखारने धर दबाया । उनका हृदय तो कुछ वर्षसे कमजोर हो ही रहा था । इस बुखारने उन्हें अतिशय कमजोर बना दिया ।

बा बापूके सेवाग्राम जानेकी तारीख जानती थीं । इसलिए इतनी कमजोरीमें भी वे बारडोली चली आईं ।

बापूको पता चला कि बा मरोलीसे बीमार होकर बारडोली आ रही हैं । वे यह भी जानते थे कि आश्रममें पहुंचते हो बा सबसे पहले उन्हींसे मिलने आयेंगी। बाको ऊपर चढ़नेमें तकलीफ न हो यह सोचकर बापू तुरन्त उतर कर नीचे आये । उन्होंने स्वयं ही हाथ पकड़कर बाको मोटरसे उतारा और नीचे ही सरदार पटेलके कमरेमें ले जाकर उन्हें पलंग पर लिटा दिया । इसके बाद कुछ देर तक उनके पास बैठकर और उनके हालचाल पूछकर बापू ऊपर गये ।

बा जिस तरह बापूकी सेवामें हमेशा लगी रहती थीं, उसी तरह बापू भी हमेशा बाकी बहुत ज्यादा चिन्ता रखते थे । जब भी बा दूसरे किसी गांवको जाती या बाहरसे आश्रममें आती थीं, तब बापू कितने ही जरूरी काममें क्यों न हों, वे हमेशा आश्रमके दरवाजे तक बाको बिदा करने या उन्हें लिवाने आते ही थे । इसे बापूने अपना नियम बना लिया था ।

बा जब आरामसे सो गईं तब सरदार वल्लभभाईने मरोलीसे आये हुए कल्याणजीभाईसे पूछा: “बाको तुम यहां क्यों ले आये ? इतनी कमजोरीमें इन्हें वहीं रखना चाहिये था |”

कल्याणजीभाई : “हम लोगोंने बासे आग्रह करनेंमें कोई कसर नहीं रखी । लेकिन वे हमारी बात मानें तब न ? उन्होंने बस एक ही बातकी रट लगाई थी: रेलगाड़ियां अब बन्द हो जायंगी । बापूजी अगर सेवाग्राम चले गये, तो इतने वर्षोंके बाद मेरा उनसे वियोग हो जायगा । मैं कहां अब ज्यादा जीनेवाली हूं ? बापूकी गोदमें मरूं, बस इतनी ही मेरी अंतिम इच्छा है ।”

१००. भविष्यकी आगाही

अगस्त १९४२ में बापू कांग्रेस महासमितिकी बैठकमें भाग लेनेके लिए बम्बई गये, तब बा भी उनके साथ थीं । आश्रमके कुछ भाई-बहन दोनोंको वर्धा स्टेशन पर बिदा करने आये थे । उन्होंने बासे कहा: "बा, जल्दी वापिस आइयेगा ।"

बा ऐसे स्वरमें बोलीं, मानो उन्हें अशुभ भविष्यकी आगाही पहलेसे ही मिल गई हो । उन्होंने कहा: "हां, तुम सब भाई-बहनोंके आशीर्वादसे वापिस आ सकी तो मुझे आनंद ही होगा ।"

*

महादेवभाईका अवसान आगाखां महलमें एकाएक हुआ, उसके बाद तो बा बार-बार कहती थीं: "मुझे जाना था; महादेव क्यों चला गया?"

*

बापूने आगाखां महलमें उपवास शुरू किया, उस समय उनसे मिलनेके लिए आये हुए आश्रमके भाई-बहनोंसे बाने कहा : "तुम मेरी चिन्ता न करो । मैं बापूसे पहले ही जाऊंगी । बापू जरूर खड़े हो जायंगे । लेकिन मैं यहांसे जीती बाहर नहीं निकलूंगी । यह तो महादेवका मंदिर है । महादेव गया उसी रास्ते मैं भी जाऊंगी ।"

*

बापूका उपवास पूरा हो जाने पर जो आश्रमवासी बासे मिलने आये, उन्हें बिदा करते हुए बाने कहा : "यह हमारी आखिरी मुलाकात है । यहांसे मैं जीती बाहर नहीं निकलूंगी ।"

स्व० पं० खरेकी पत्नी लक्ष्मीबहन तथा दूसरी बहनोंसे बाने कहा : "ये मेरे अंतिम राम-राम हैं!"

यह सुनकर सुशीलाबहनने बासे कहा: "आप ऐसा क्यों बोलती हैं, बा? हम सब जल्दी ही बाहर जायेंगे ।"

बा बोलीं : "हां, तुम सब जाओगे । मैं नहीं ।"

१०१. मीठा झगड़ा

बाकी अंतिम कैद उनके लिए बड़ी भयंकर साबित हुई । सरकारकी ओरसे तो कोई तकलीफ नहीं थी । लेकिन बापूजी और दूसरे नेताओंको सरकारने ९ अगस्त, १९४२ को एकाएक पकड़ लिया और जेलमें कितने समय तक रखेगी इसकी भी कोई जानकारी नहीं दी, इसका बाके मन पर बहुत बुरा असर हुआ ।

एक बार बाकी तबीयत कुछ ज्यादा खराब हो गई । इससे ऊबकर और कुछ चिढ़कर उन्होंने बापूसे कहा:

“मैं पहले ही आपसे कहती थी कि इतनी बड़ी सल्तनतको मत छेड़िये । लेकिन आपने मेरी बात नहीं मानी । अब जो कुछ आपने किया उसका फल सबको भोगना पड़ रहा है । सरकारके हाथमें अपार सत्ता और शक्ति है । उसीके बल पर वह लोगोंको कुचल रही है । लोग बेचारे कब तक इस दमनको सहन करें? इसका कया नतीजा होगा?”

पहले तो बापूने तरह तरहकी दलीलें देकर बाको समझानेकी कोशिश की । लेकिन उस दिन तो बा किसी भी तरह समझनेको तैयार नहीं हुईं । आखिर बापूने कहा: “तो तू क्या चाहती है? चल, तू और मैं सरकारसे माफी मांग लें!”

बा और चिढ़ गईं । बोलीं : “में किसलिए सरकारसे माफी मांगूं?”

बापू: “तब तू कहे तो मैं माफीके लिए वाइसरॉयको पत्र लिखूं ?”

बापूके सम्मानको किसी तरहका धक्का लगे, यह बासे कभी सहन नहीं होता था । इसलिए जरा गुस्सा होकर बाने कहा: “जेलमें पड़ी हुई सुकुमार लड़कियां तो माफी मांगतीं नहीं और आप सरकारसे माफी मांगेंगे? अब किया है तो उसका फल भोगिये । आपके साथ हम भी मूसीबतें सहेंगे । महादेव तो जेलमें ही चल बसा । अब मेरी बारी आई है!”

बापू चुपचाप सुनते रहे । बा जब चिढ़ जाती थीं तब बापू अकसर चुप ही रहते थे ।

इसके कुछ दिन बाद बाने बापूसे कहा : "में तो यही पूछती हूं कि आप अंग्रेजोंको हिन्दुस्तानसे जानेके लिए क्यों कहते हैं? उन्हें यहां रहना हो तो भले रहें । हमारा देश बहुत बड़ा है। उसमें हम सब समा जायेंगे । आप उनसे कहिये कि वे हमारे भाई बनकर हिन्दुस्तानमें रहें ।"

बापू बोले: "तो दूसरा मैं कहता ही क्या हुं? मैं भी तो उनसे यही कहता हूं कि आप हमारे भाई बनकर यहां रहें, हमारे सरदार बन कर नहीं । आप अपनी सरदारी हटा लें, तो हमारा आपसे कोई झगड़ा नहीं ।"

बा थोड़ी शांत होकर बोलीं : "हां, यह तो ठीक है। अंग्रेजोंको हम अपने सरदार बनाकर नहीं रख सकते, भाई बनकर वे खुशीसे रहें ।"

दूसरे दिन बाने सुशीलाबहनसे कहा : "सुशीला, ये अंग्रेज लोग बहुत बुरे हैं! बापू उनसे कहते हैं कि हमारे भाई बनकर हमारे देशमें रहो । लेकिन उन्हें तो हम पर सरदारी चलानी है, हिन्दुस्तानको लूटना है | इसीलिए उन्होंने बापूको और दूसरे नेताओंको पकड़ कर जेलमें बंद कर दिया है ।"

१०२. बाका व्रत-पालन

एकादशी, पूर्णिमा आदिके व्रत बा बड़े आग्रहसे पालती थीं । अपनी आखिरी बीमारीमें भी बाने अन्त तक सारे व्रतोंका अच्छी तरह पालन किया । एकादशीके दिन बा हमेशा फलाहार किया करती थीं । एकादशीका एक भी उपवास करना वे कभी भूली नहीं होंगी । इसी तरह सोमवार, सोमवती अमावस, कोई कोई पूर्णिमा, जन्माष्टमी, शिवरात्रि और दूसरे पवित्र दिनों पर भी वे उपवास करना नहीं भूलती थीं । कभी कभी सोमवार, एकादशी और तीसरा कोई पवित्र दिन लगातार पड़ जाते थे। ऐसे अवसरों पर बा लगातार तीन-चार उपवास भी कर डालती थीं । वे भलीचंगी हों या बीमार, इनमें से कोई उपवास छोड़नेका विचार तो उनके मनमें कभी पैदा ही नहीं होता था । इसके सिवा, राष्ट्रीय त्योहारोंक उपवास भी बा सदा ही करती थीं।

बाकी आखिरी बीमारीमें मकर-संक्रांतिका त्योहार आया । बाने कहा : "तिल मंगाओ और उसके लड्डू बनाकर सब कैदियोंको खिलाओ ।"

बापूने बाको समझाया : "बा, ऐसा करना ठीक नहीं । यह हमारा घर नहीं है । ऐसे काम जेलमें नहीं हो सकते । हमारे घरमें ही हो सकते हैं ।"

बा बोल उठीं : "लेकिन मुझे अब कहां घर जाना है?"

आखिर दूसरे दिन तिल मंगवाकर उसके लड्डू बनाये गये। बाको पहियोंवाली कुरसीमें बैठाकर बाहर ले जाया गया। उन्होंने अपने हाथसे सब कैदियोंको लड्डू बांटे ।

१०३. 'बाको मैं अलग नहीं रख सकता'

१९४२ के जेलवासके दिनोंमें बापू वाइसरॉयके साथ पत्र-व्यवहार करते थे । सरकारके साथ कोई समझौता न होने पर वे उपवास करनेकी बात सोच रहे थे । उन दिनों वे लम्बे समय तक ध्यानकी अवस्थामें बैठे रहते थे ।

बापूकी यह दशा देखकर मीराबहनने कहा : "बापूको एकान्त चाहिये । आमके उस पेड़के नीचे झोंपड़ी बना दी जाय तो ठीक हो ।"

बाने मना करते हुए कहा : "झोंपड़ीकी क्या जरूरत है? बापू तो किसी भी जगह एकान्तका अनुभव कर सकते हैं |"

उस समय बाकी तबीयत अच्छी नहीं रहती थी । उनकी हालतको देखकर बापूने भी कहा: "मेरा एकांत दूसरी तरहका है । मैं बाको अपनेसे अलग नहीं रख सकता; रखना चाहता भी नहीं ।"

१०४. बाकी एक पवित्र इच्छा

बापूने आगाखां महलमें उपवास किया उस समय बाके मनमें यही भावना बनी रहती थी कि भगवान मेरी प्रार्थना सुनकर बापूको जीवित रखेगा और मुझे उठा लेगा। इसलिए बापूसे मिलने आई हुई आश्रमकी एक बहनसे बाने कहा : "बापूजीके हाथकते सूतसे खास तौर पर मेरे लिए तैयार की गई साड़ी मेरे पास जरूर भेज देना । मेरी मृत्युके बाद मेरे शरीर पर वही साड़ी लपेटी जायगी ।"

और अंतमें २२ फरवरी, १९४४ के दिन बाका स्वर्गवास हुआ तब उनके शरीरको वही साड़ी पहनाई गई, जो बापूके हाथके सूतकी बनी हुई थी और जिसे बाने अंतिम समयके लिए संभाल कर रख छोड़ा था ।

१०५. बापूका उपवास और बाकी चिन्ता

१९४२ के जेलवासके दिनोंमें बापू उपवास करनेकी बात सोचने लगे, तब उन्होंने वाइसरॉयको भेजे जानेवाले पत्रका मसौदा तैयार किया । इस बातका पता चलने पर बा बापूके पास आईं और कहने लगीं : "पत्र चाहें तो आप लिख सकते हैं, लेकिन उसमें उपवासकी कोई बात न करें |"

बापू हंस दिये ।

*

एक दिन बाको चिन्तासे उदास देखकर सरोजिनीदेवी उनसे कहने लगीं : "बा, आप चिन्ता न करें । बापू तो कहते हैं कि जब तक ईश्वरकी आज्ञा नहीं होगी, अंतरकी आवाज नहीं आयेगी, तब तक मैं उपवास नहीं करूंगा । और भगवान बापूको उपवास करनेकी बात कभी नहीं कहेगा ।"

बाने जवाब दिया : "यह तो मैं भी जानती हूं कि भगवान उपवास करनेको कभी नहीं कहेगा। लेकिन बापू यदि मान लें कि भगवानने कह दिया है, तब क्या होगा ?"

*

बापू रोज दोपहरको आधा घंटा ध्यानमें बैठते थे; भगवानसे मार्ग दिखानेकी प्रार्थना करते थे। और बा प्रातःकाल नहाकर आध-पौन घंटा तुलसी माताकी पूजा करती थीं। वे भगवानसे अपने पतिको दीर्घायु देनेकी, उन्हें प्राणदान देनेकी प्रार्थना करती थीं।

१०६. सावित्री जैसी बा

१९४२ के जेलवासके समय बाकी तबीयत बहुत कमजोर थी । लेकिन बापूके आगाखां महलमें उपवास शुरू करते ही बामें नया चेतन, नयी शक्ति भर गई ! मनके निश्चयके साथ शरीरकी शक्ति भी बढ़ी । हमेशाकी तरह इस उपवासके समय भी बा फलाहार करने लगीं । २१ दिन तक उन्होंने अन्नका स्पर्श भी नहीं किया । उपवासमें सारे समय बाने अनोखी हिम्मत रखी और खड़े पैरों बापूकी सेवा की । इस सारी दौड़धूपमें बाकी अपनी तबीयत एक दिनके लिए भी नहीं बिगड़ी ।

उपवास ज्यों ज्यों आगे बढ़ता गया त्यों त्यों बापूकी स्थिति ज्यादा नाजुक होती गई । उपवासके आगे बढ़नेके साथ बाकी तुलसी-पूजा तथा बालकृष्णकी पूजाका समय भी बढ़ता गया । जैसे जैसे बापूकी स्थिति दिनोंदिन ज्यादा चिन्ता पैदा करनेवाली होती गई, वैसे वैसे बाकी पूजा अधिक लम्बी और अधिक भक्तिपूर्ण बनती गई ।

२२ फरवरी, १९४३ के दिन बापू जीवन और मरणके बीच झूलने लगे ।

मीराबहन चुपचाप डॉ० सुशीलाबहनको बुलाकर बाहर बरामदेमें ले गईं । वहां बा तुलसी माताके सामने घुटने टेककर प्रार्थना कर रही थीं । बाके चेहरे पर दिखाई देनेवाले भाव इतने करुण, इतने दीन थे कि देखनेवालोंकी आंखोंमें भी आंसू आये बिना न रहे । अपने ध्यानमें बा इतनी लीन हो गई थीं कि उन्हें इस बातका पता ही न चला कि कौन उनके पास आकर खड़ा हो गया है या कौन उनके पाससे गुजर गया है ।

उस दिन दस मिनट तक प्रयत्न करनेके बाद भी बापू आधा औंस पानी गलेके नीचे नहीं उतार सके । अंतमें वे इतने थक गये कि बेसुध होकर बिस्तर पर गिर पड़े । उतकी नाड़ी कमजोर पड़ गई और शरीर पसीनेसे तर हो गया । उनमें बोलनेकी तो ठीक, हाथसे इशारा करनेकी भी ताकत नहीं रह गई थी !

बा तो अपनी प्रार्थनामें लीन थीं । बापूके कमरेमें अकेली सुशीलाबहन ही थीं । उन्होंने डरते डरते बापूसे कहा : "बापूजी, क्या अभी भी मुसंबीका रस लेनेका समय नहीं आया है?"

उपवासके तीसरे दिनसे बापूको उबकाइयां आने लगी थीं। उसी दिन बाने बापूसे कहा था: "पानीमें थोड़ा मुसंबीका रस डालने दीजिये न ।" बापूने इनकार करते हुए कहा था: "मैं कोई जल्दी जल्दी रस लेनेवाला नहीं हूं ।" उसके बाद बापूकी तबीथत ज्यादा नाजुक हो गई; तब भी उन्होंने मुसंबीका रस लेनेसे इनकार कर दिया ।

इस बार सुशीलाबहनके प्रश्न पर सातेक मिनट सोचनेके बाद बापूने इशारेसे हां कहा ।

सुशीलाबहनने तुरन्त दो औंस रस निकाल कर दो औंस पानीमें मिलाया और बापूजीको पिलाया ।

चार औंस रस और पानी शरीरमें पहुंचते ही बापूके फीके और निस्तेज चेहरे पर जीवनकी किरणें झलकने लगीं ।

इतनेमें बा आ पहुंचीं । भगवानने उनकी प्रार्थना सुन ली थी !

इस घटनाके ठीक एक बरस बाद २२ फरवरी, १९४४ के दिन महाशिवरात्रिको बाका स्वर्गवास हुआ ।

इस घटनाको याद करके किसीने कहा था : "गये वर्ष इसी दिन बापू यमराजके मुंहमें थे । बाने सावित्रीकी तरह उन्हें यमराजके मुंहसे छुड़ाया होगा और उन्हें यह वचन दिया होगा कि अगले वर्ष इसी दिन मैं आपके साथ चलूंगी ।"

१०७. बापूकी पत्नीसेवा

बाकी अंतिम बीमारीमें बापू अनेक बार रातमें उनके पास आते थे । लेकिन बा उन्हें ज्यादा समय तक अपने पास बैठने नहीं देती थीं । दिनमें बापू आकर लम्बे समय तक बाके पलंग पर बैठते थे ।

बापू जब बाके पास आकर बैठते तब बा उन्हींका टेका लेकर बिस्तर पर बैठती थीं | डॉ० गिल्डरने यह देखकर सुशीलाबहनसे कहा: "जरा ध्यान रखना चाहिये । निमोनियाके जंतु बड़े जहरीले होते हैं । बापूका मुंह बाके मुंहके बहुत पास रहता है । यह अच्छा नहीं है । इसलिए बापू उनके पास कम बैठें तो ठीक हो |"

लेकिन बापूसे यह कौन कहता? इन अंतिम दिनोंमें बाको निमोनिया हो या दूसरा कोई रोग हो, लेकिन बापूसे यह कहनेकी हिम्मत भला किसकी चलती कि आप बाके पास थोड़े समय तक ही बैठा करें? इसलिए सुशीलाबहनने सोचा कि इस बारेमें चुप रहना ही अच्छा होगा ।

डॉक्टर गिल्डर भी यह बात समझ गये । वे बोले: "तुम्हारा सोचना ठीक है । बांसठ वर्ष तक साथ रहनेके बाद आज वियोगकी घड़ी समीप आ जाने पर बापू बासे दूर कैसे रह सकते हैं? और हम भी इस बारेमें उन्हें कैसे कुछ कह सकते हैं?"

इतना कहते कहते डॉ० गिल्डरकी आंखें छलछला आईं ।

*

कमजोरी बढ़नेके कारण बा जब थूकती थीं तब पास बैठी हुई नर्स कपड़ेके टुकड़ेसे बाका मुंह पोंछ देती थी और टुकड़ेको फेंक देती थी । बाके अवसानसे चार दिन पहले बापू रातमें बाके पास गये, तब उन्होंने सुशीलाबहनसे छोटे छोटे नये रूमाल बनानेको कहा । दूसरे दिन चार रूमाल तैयार हो गये ।

इसके बाद बापू रातमें या दिनमें जब बाके पाससे अपने कमरेमें जानेके लिए उठते, तब गंदे रूमाल उठाकर धोनेके लिए ले जाते थे ।

पहले दिन सुशीलाबहनने बापूसे कहा: "बापूजी, आप रहने दीजिये । हम लोग धो डालेंगे।" बापू : "मुझे ही धोने दे । यह काम करना मुझे अच्छा लगता है ।"

*

एक दिन बापू दोपहरमें भोजनके बाद बाके पास जाकर बैठे । बाकी सोनेकी तैयारी थी । बापूका सहारा लेकर बा सो जातीं, तो बाके जागने तक बापू वहांसे उठ नहीं पाते । खुद उनका भी सोनेका समय हो गया था । वे काफी थके हुए तो थे ही | इसलिए सुशीलाबहनने उनसे कहा: "बापू, अब आप मुझे बाके पास बैठने दीजिये । सो लेनेके बाद आप यहां आइयेगा ।"

बापूजी उठ तो गये, लेकिन अपनी गद्दी पर बैठते बैठते बोले : "मुझे थोड़ी देर बैठने दिया होता तो क्या हो जाता ?"

*

अंतिम बीमारीके पहले कुछ दिनसे बाकी टट्टी और पेशाबमें जलन होती थी । बाने बापूसे कहा: "इसके लिए मैं पानीके उपचार करूंगी ।"

दूसरे दिनसे बाने ठंडे और गरम पानीका टब-स्नान शुरू किया।

यह स्नान करानेमें बापुका लगभग एक घंटा चला जाता था और वे काफी थक भी जाते थे।

एक दिन बाने बापूसे कहा: "आप जाइये । सुशीला मुझे स्नान करा देगी ।"

बापू : "तू मेरी चिन्ता न कर ।" और वे बाको स्नान करानेमें लगे रहे ।

एक दिन सुशीलाबहनने बापूसे कहा: "बापूजी, आपको समयकी इतनी तंगी रहती है । मैं आप कहें उस समय बाकी सेवा करनेको तैयार हूं । इसलिए आप जब चाहें तब बाकी इस सेवामें से एक घंटा बचा सकते हैं ।"

बापूने इस तरह एक घंटा बचानेसे इनकार किया और कहा : "मैं जानता हूं कि तू बाकी सेवा करनेके लिए हमेशा ही तैयार रहती है । लेकिन बुढ़ापेमें भगवानने मुझे इस तरह बाकी सेवा करनेका जो अवसर दिया है, उसे मैं अमूल्य अवसर मानता हूं । जब तक बा मुझसे यह सेवा लेगी तब तक मैं खुशी खुशी उसके लिए एक घंटेका समय निकालूंगा ।"

१०८. बा किसकी गोदमें देह छोड़ेगी ?

बाके अवसानसे एक दो दिन पहले ही बापूने अपने साथियोंके सामने यह बात निकाली थी कि बा किसकी गोदमें देह छोड़ेगी ।

बातचीतके अंतमें बापूने कहा: "जिस भाग्यशालीने जीवनमें एकनिष्ठासे सेवा की होगी, उसीकी गोदमें बा देह छोड़ेगी । ऐसी सेवा किसने की है, यह तो भगवान ही जानता है ।"

परन्तु बापूके सिवा यह सौभाग्य और किसका हो सकता था? अंतमें बापूकी गोदमें ही बाने अंतिम सांस ली ।

१०९. रामनाम ही सच्ची दवा है

अवसानसे दो दिन पहले बाकी बेचेनी खूब बढ़ गई । वे बार-बार मुंहसे 'राम, हे राम!' बोला करती थीं ।

बापू सुबह आकर बाके पलंग पर बैठे । उनके कंधे पर सिर डालकर बा थोड़ी शांत हुईं । उसी स्थितिमें बैठकर बापूने सुबहकी प्रार्थना की । उसके बाद सब लोग बारी बारीसे बाके पास बैठकर रामधुन और भजन गाते रहे । बापू तो लगभग सारे दिन बाके पलंग पर ही बैठे रहे । बाकी बेचैनी जब अतिशय बढ़ जाती थी तब वे बड़ी करुण आवाजमें 'हे राम !' पुकार उठती थीं ।

बापू सबसे कहते थे: "अब बाकी दवा केवल रामनाम ही है । दूसरे सब उपचार छोड़ दो । मैं तो यह चाहता हूं कि शहद और पानीके सिवा दूसरा कोई आहार भी बाको न दिया जाय । बा स्वयं मांगे तो दूसरी बात है । दवामें मेरा विश्वास नहीं है। अपने लड़कोंकी भयंकर बीमारियोंमें भी मैंने उन्हें दवा नहीं दी । परन्तु बाके बारेमें मैंने अपना यह नियम नहीं चलाया ।

"लेकिन आज तो बा खुद भी दवा लेना नहीं चाहती । रामनामके बिना उसे चैन नहीं पड़ता । यह दृश्य करुण है, परन्तु मुझे बहुत प्रिय है । आज बाके मुंहसे मैं रामनामके सिवा दूसरा कुछ सुनता ही नहीं । ऐसे समय तो मैं दवाको छोड़ ही दूंगा । भगवानको उसे जिलाना होगा तो जिलायेगा और ले जाना होगा तो ले जायगा । ईश्वरको बचाना होगा तो बिना दवाके भी वह बाको बचा लेगा । नहीं तो मैं उसे जाने दूंगा ।

११०. 'अब तो तेरी ही भक्ति चाहिये'

अपने अवसानके दो-एक दिन पहले ही बा बापूके सामने देख कर बोलीं : "मेरे जानेका दुःख क्यों होना चाहिये ? मेरे जानेकी खुशीमें तो लड्डू उड़ाने चाहिये!"

इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर और आंखें मींच कर बा भगवानसे प्रार्थना करने लगीं : "हे भगवान, पशुकी तरह पेट भर कर मैंने जीवनमें केवल खाया ही है ! क्षमा करना, प्रभु । अब तो मुझे तेरी ही भक्ति चाहिये। तेरा ही प्रेम चाहिये।"

१११. बापूकी गोदमें देह छोड़ी

२२ फरवरी, १९४४ की शामको बाका अवसान हुआ । उस दिन तीसरे पहरको चार बजे सुशीलाबहन बापूके पास जाकर बोलीं : "बापूजी, मैं थोड़ा आराम करनेके लिए जाती हूं । आप बाका चार्ज लीजिये ।"

बापूने कहा : "चार्ज तो मैं लेता हूं, लेकिन यहां अपने स्थान पर बैठे बैठे ही। दूसरे जो लोग बाके पास बैठे हैं उन्हें बैठने दो । बा मुझे बुलायेगी तब मैं उसके पास चला जाऊंगा ।"

बापूके मुंहसे ये शब्द मानो विधाताने ही बुलवाये थे । अंतमें हुआ भी ऐसा ही ।

शामके समय बाकी घबराहट खूब बढ़ गई । आखिर अंतिम घड़ी आ जाने पर बाने पुकारा : "बापूजी !"

बापू तुरन्त बाके पास आकर बैठे और बाने अंतिम सांस बापूकी गोदमें ही ली ।

११२. किसका अहोभाग्य ?

बाकी अंतिम बीमारीमें उनकी तबीयत दिनोंदिन ज्यादा बिगड़ती जाती थी। अंतमें २२ फरवरी, १९४४ का दिन आया। महाशिवरात्रिका पुण्यपर्व भी उसी दिन था ।

उस दिन बाकी तबीयत ज्यादा नाजुक हो गई । डॉक्टर बाको पेनिसिलीनका इंजेक्शन देना चाहते थे । पर बापू इसके विरुद्ध थे । शामको बापूने समझाते हुए देवदासभाईसे कहा: "तू ईश्वर पर भरोसा क्यों नहीं रखता? मृत्युशय्या पर पड़ी हुई मांको भी तू दवा देना चाहता है?"

इस चर्चाके कारण बापूको घूमने जानेमें देर हो गई । रोज वे साढ़े छह पर घूमनेके लिए नीचे चले जाते थे । लेकिन उस दिन सवा सात हो जाने पर भी वे घूमने नहीं जा पाये थे | आखिर देवदासभाईको समझा कर घूमनेके लिए तैयार होनेको बापू नहानेके कमरेमें जा रहे थे, इतनेमें उनसे कहा गया : "बा आपको बुलाती हैं |"

बापू आकर बाके पास बैठ गये । बा बहुत ज्यादा बेचैन थीं । बापूने धीमे स्वरमें पूछा : "क्या होता है?"

बिलकुल अनजान देशके किनारे खड़े किसी भोले बालकके समान अतिशय करुण स्वरमें बाने तुतलाते हुए कहा : "कुछ समझ नहीं पड़ता !"

बाने अंतिम घड़ीमें उठनेका प्रयत्न किया । लेकिन बापूने रोका : "अब तू लेटी ही रह, बा।" उसी क्षण बाने बापूकी गोदमें सिर डाल दिया और उनकी गोदमें ही अंतिम सांस ली ।

इस तरह बापूकी गोदमें देह छोड़नेकी बाकी इच्छा पूरी हुई । और बापूकी यह बात भी सच्ची निकली कि 'जिस भाग्यशालीकी सेवा एकनिष्ठ होगी, उसीकी गोदमें बा देह छोड़ेगी।' ऐसा मंगल, पावन दृश्य देखकर हमारे मनमें प्रश्न उठ सकता है: "इसमें किसका अहोभाग्य था ? बाका या बापूका ?"

इसका उत्तर देना कठिन है | लेकिन हमारी अंतरात्मा बोल उठती है: "दोनोंका अहोभाग्य था – नहीं, - नहीं, समूचे मानव-परिवारका अहोभाग्य था !"

११३. बा तो गरीबकी पत्नी थी

बाके अवसानके बाद उनका अंतिम संस्कार करनेके लिए चंदनकी लकड़ी मंगवानेकी बात श्री शांतिकुमारभाईने कही ।

उनकी बात सुनकर बापूने इनकार करते हुए कहा : "बा तो गरीबकी पत्नी थी । गरीब आदमी चंदनकी लकड़ी कहांसे लाये?"

बापूकी बात सुनते ही जेलके सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब बोल उठे: "हमारे पास चंदनकी लकड़ी है ।"

बापूने कहा : "आप अर्थात् सरकार चंदनकी लकड़ी काममें लेना चाहे तो ले सकती है । आपसे चंदनकी लकड़ी लेनेमें मुझे कोई आपत्ति हो ही नहीं सकती |"

११४. बांसठ वर्षके साथी !

बाके अवसानके दूसरे दिन श्री महादेवभाईकी समाधिके पास ही बाका अंतिम संस्कार हुआ । बा बार-बार कहा करती थीं: "मुझे तो महादेवके पास ही रहना है।"

और अंतमें बाकी यह इच्छा भी पूरी हुई।

बाका अंतिम संस्कार लम्बे समय तक चला । शामके चार बज गये । तब तक बापू चिताके पास ही बैठे रहे । कितनी ही बार उनसे कहा गया : "बापू, आप थक जायंगे । अब आप यहांसे जाकर आराम कीजिये ।"

लेकिन बापूने हटनेसे इनकार कर दिया । अपने अंतरकी गहराईमें पैठ कर बोलते हों इस प्रकार उन्होंने कहा : "बांसठ वर्षकी अपनी साथिनको इस अवसर पर मैं कैसे छोड़ सकता हूं? बा भी इसके लिए मुझे क्षमा नहीं करेगीं !"

११५. बापूके जीवनमें बाका स्थान

बाके अवसानके बाद बापूके पुत्र श्री मणिलाल गांधीकी पत्नी श्री सुशीलाबहन गांधी दक्षिण अफ्रीकासे बापूको मिलने आई थीं ।

बापूके साथ बातें करते करते सुशीलाबहन गांधी बोलीं : "बापू, बाके बिना आप अकेले-से लगते हैं ।"

बापूने गंभीर आवाजमें कहा : "बा मेरे जीवनमें ताने-बानेकी तरह एकरूप हो गई थी । उसके चले जानेसे मेरा जीवन बिलकुल सूना पड़ गया है !"

११६. अनोखा उदाहरण

बाके स्वर्गवासके बाद डॉ० सुशीलाबहनसे बातें करते करते एक दिन बापूने कहा : "बाने अंतिम घड़ीमें मुझे बुलाया और मेरी गोदमें देह छोड़ी, यह अनोखी और अद्भुत बात है!"

सुशीलाबहन : "बापूजी, इस परसे यह निश्चित मालूम होता है कि बा ऊपरसे आप पर चाहे जितनी नाराज रही हों, लेकिन भीतरसे तो आप पर उनकी अपार श्रद्धा थी; आप पर उनका अटूट प्रेम था । किसी पत्नीने इस तरह अपने पतिकी गोदमें शरीर छोड़ा हो, ऐसा दूसरा कोई उदाहरण न तो मैंने आज तक देखा है और न सुना है ।"

अपने गृहस्थ-जीवनकी कड़ी कसौटीमें सफल होनेके लिए मानो अपूर्व धन्यता अनुभव करते हुए बापूने कहा : "यह तो है ही । मैंने खुद भी ऐसा कोई उदाहरण नहीं देखा । हमारे समाजमें तो पति-पत्नीका ऐसा सम्बन्ध सामान्य रूपसे नहीं होता ।"

११७. 'यह भी सच है'

बाके स्वर्गवासके डेढ़ दो माह बाद बापू मलेरियाके शिकार हो गये।

एक दिन बापू डॉ० सुशीलाबहनसे कहने लगे : "अच्छा हुआ कि बाके रहते मुझे बुखार न आया। ऐसा होता तो बा तुम सबको मेरी सेवा करने भेज देती और स्वयं जैसी तैसी सेवासे काम चला लेती।"

सुशीलाबहन : "आपका कहना बिलकुल सच है | लेकिन बा होतीं तो वे इससे भी आगे बढ़ गई होतीं। वे स्वयं ही आपकी सेवामें लग जातीं !"

बापू गद्गद होकर बोले : "बाका काम तो ऐसा ही है !"

लेकिन फिर अपनी बातको सुधारकर बापू बोले : "मैंने गलतीसे 'ऐसा है' कह दिया। वास्तवमें मुझे 'ऐसा था' कहना चाहिये था।"

सुशीलाबहन : "आपके लिए तो बा आज भी जीवित ही हैं। चली थोड़ी ही गई हैं ?"

बापू : "हां, यह भी सच है |"

११८. बाकी वह मेज

बाकी अंतिम बीमारीमें सांस चढ़ जानेके कारण उन्हें बिस्तर पर सोनेमें भी कष्ट होता था| इसलिए एक छोटीसी मेज बाके लिए बनवाई गई थी । उस मेज पर सिर रख कर बा सो जाया करती थीं । उस पर सिर रखकर पड़ी रहनेवाली बाका वह दृश्य अतिशय करुण था।

बाके स्वर्गवासके बाद बापूने वही मेज अपने पास रखी थी । वे कहते थे: "मेरे लिए यह मेज बड़ी कीमती हो गई है । इस पर सिर रख कर बैठी हुई बाका चित्र हमेशा मेरी आंखोंके सामने बना रहता है ।"

उसके बाद वह मेज बापूके साथ ही रहती थी । खानेके समय बापू उसीका उपयोग करते थे ।

बा जीवित थीं तब वे बापूके भोजनके समय हमेशा उनके पास जाकर बैठती थीं । लेकिन बाके चले जाने पर बाकी मेज बापूके पास रहने लगी !

११९. कपड़ेका कीमती टुकड़ा

बाके स्वर्गवासके बादकी बात है । बापूकी पानीकी बोतलको गीला कपड़ा लपेटनेकी जरूरत पड़ी ।

बापूने कहा कि मिट्टी बांधनेका मेरा जो पुराना कपड़ा है, उसका टुकड़ा फाड़ कर बोतल पर लपेटा जाय ।

उस कपड़ेका इतिहास बताते हुए बापूने कहा : "वह कपड़ा बहुत बार बाके लिए उपयोग किया जाता था । इसलिए मेरे मन में उसकी बड़ी कीमत है ।"

१२०. करुण वियोग

२२ फरवरी, १९४४ की संध्याको आगाखां महलमें बाका अवसान हुआ । २३ फरवरीको उनका अंतिम संस्कार किया गया । संस्कार पूरा हो जानेके बाद बापूजी और दूसरे लोग महलमें वापिस आये ।

बापू गहरी वेदना अनुभव कर रहे थे । वे महात्मा थे, ज्ञानी थे, फिर भी अंतमें मनुष्य ही थे। जीवनके अनेक उतार-चढ़ाव और सुख-दुःखमें भाग लेनेवाली बाका वियोग बापूको दुःखद लगे बिना कैसे रह सकता था ?

रातको पलंग पर लेटे लेटे बापू वेदनापूर्ण स्वरमें कहने लगे : "बाके बिना मैं अपने जीवनकी कल्पना ही नहीं कर सकता । मैं चाहता अवश्य था कि बा मेरी गोदमें ही चली जाय, जिससे मुझे इस बातकी चिन्ता न रहे कि मेरे बाद उसका क्या होगा । लेकिन बा मेरे जीवनका अभिन्न अंग बन गई थी । उसके चले जानेसे मेरे जीवनमें जो खालीपन पैदा हो गया है, वह कभी भर नहीं सकेगा ।"

कुछ क्षण रुक कर बापू फिर बोले: "ईश्वरने भी मेरी कैसी परीक्षा ली! मैंने तुम्हें बाको पेनिसिलीनका इंजेक्शन देनेकी अनुमति दे दी होती, तो भी बा जानेवाली तो थी ही । लेकिन अनुमति देनेसे ईश्वरके प्रति मेरी श्रद्धामें कमी आ जाती । उधर देवदासको समझाकर मैं आया और पेनिसिलीन न देनेका विचार पक्का हुआ और इधर बा जानेकी तैयारी करने लगी – यह भी एक संयोग ही कहा जायगा न ? और बाने मेरी ही गोदमें शरीर छोड़ा, इससे मेरे आनन्दका पार न रहा ।"

*

एक बार बापू कहने लगे: "बा मेरे हाथोंमें ही गई इसका एक ओर मुझे संतोष है, तो दूसरी ओर बांसठसे अधिक वर्षोंकी अपनी जीवन-संगिनीको खोकर मैं जैसे स्तब्ध हो गया हूं |"

*

चार-छह दिन बाद बाकी बात निकलने पर बापूने कहा: "बाकी मृत्यु भव्य थी । मुझे इससे अपार आनन्द होता है । बाके जानेका दुःख मेरे स्वार्थके कारण है । बांसठ वर्ष साथ रहनेके बाद बासे अलग होना मुझे दुःख देता है । अधिकसे अधिक प्रयत्न करने पर भी बाके स्मरणोंको मैं मनसे दूर नहीं कर पाता ।"

*

कुछ दिन बाद बाको याद करते हुए बापू कहने लगेः "बाका जाना एक कल्पना जैसा लगता है । इसके लिए मैं तैयार तो था ही । लेकिन जब वह सचमुच चली गई तब मुझे कल्पनासे भिन्न एक नया अनुभव हुआ । अब मुझे लगता है कि बाके बिना मैं अपना जीवन ठीकसे नहीं चला सकता !"

*

एक बार बाकी बात निकलने पर बापू बोले : "बा मुझमें पूरी तरह समा गई थी । अपने पतिकी गोदमें इस तरह प्राण छोड़नेवाली दूसरी कौन स्त्री है? अंतिम समयमें बाने मुझे बुलाया । उस समय मुझे पता नहीं था कि बा जा रही है। और मैं उसे छोड़कर घूमने नहीं गया, यह भी भगवानका ही काम था ।"

*

बाके अवसानके एक माह बाद संध्याके समय घूमते घूमते बापू कहने लगे: "बाके जानेसे मुझे जो आघात लगा वह अभी तक मिटा नहीं है । बुद्धि कहती है कि बाके लिए इससे अच्छी मृत्यु हो ही नहीं सकती थी । मेरे मनमें हमेशा यह डर बना रहता था कि मेरे पीछे बा रह जायगी तो अच्छा नहीं होगा । मेरे हाथोंमें ही वह चली जाय, तो मुझे अच्छा लगेगा; क्योंकि बा मुझमें पूरी तरह समा गई थी । मैं शोकमें डूबा रहता हूं, ऐसी बात भी नहीं है । यह भी नहीं कि मैं बाका ही सारे समय विचार किया करता हूं । परन्तु वास्तवमें मेरी क्या स्थिति है, इसका मैं शब्दोंमें वर्णण नहीं कर सकता !"